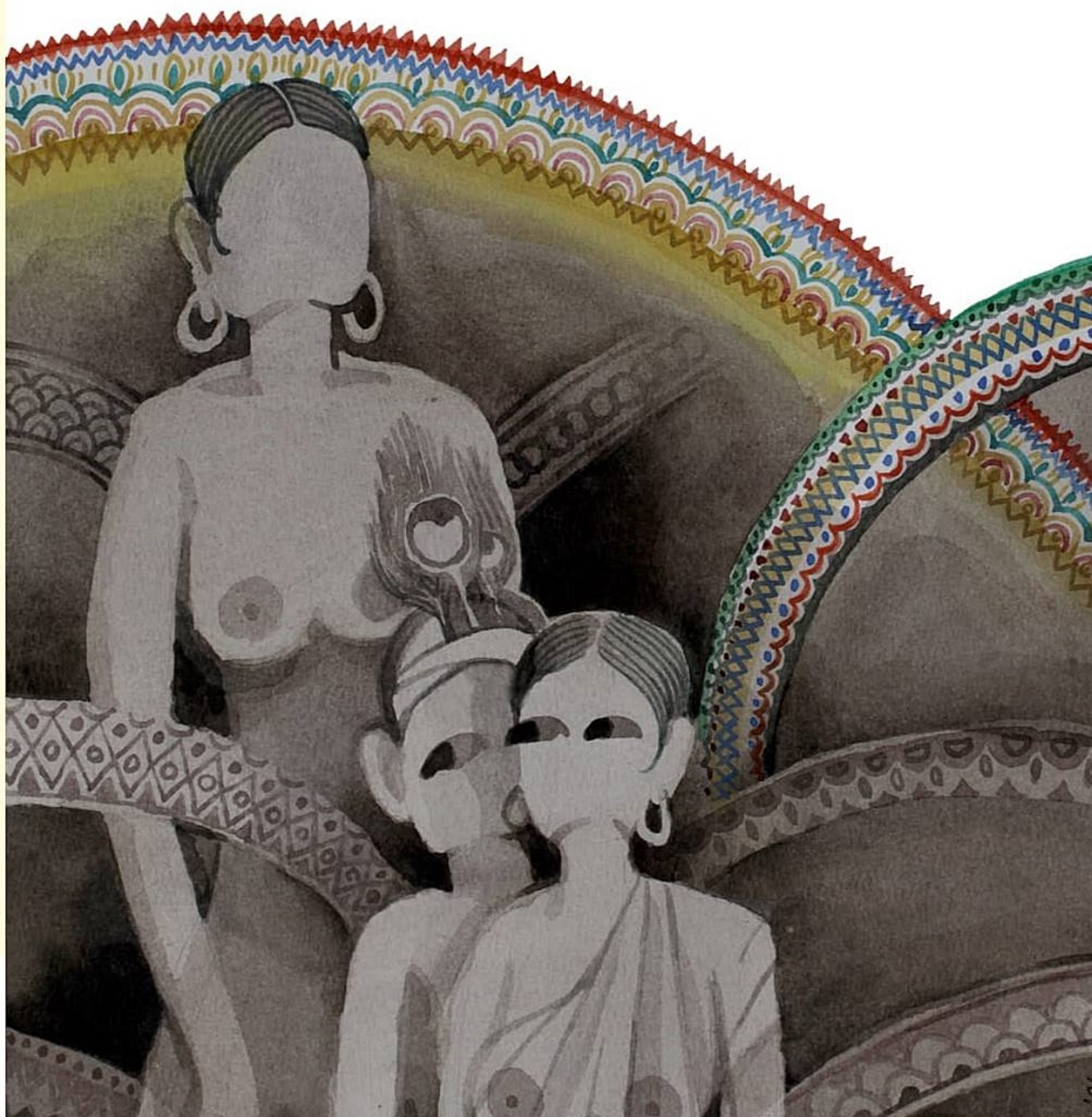
सुमिनमा

विश्वेश्वरप्रसाद कोईराला

मैथिली रुपान्तरण वृषेश चन्द्र लाल



সুমিনমা

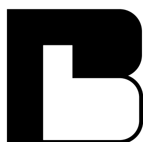
सुम्निमा

(उपन्यास)

वी.पी. कोइराला

मैथिली रूपान्तरण

वृषेश चन्द्र लाल



सुम्निमा
(उपन्यास)

वी.पी. कोइराला

मैथिली रूपान्तरण

प्रकाशक
फिनिक्स बुक्स
बानेश्वर, काठमाडौं, नेपाल
फोन : ९७७ ०१ ४४८७७८२
इमेल : booksphoenix@gmail.com

आवरण	:	टाइम्स क्रिएसन
आवरण चित्र	:	राजन काफ्ले
आवरण कलाकार	:	सरस्वती चौधरी
लेआउट	:	प्रिन्ट डिजाइन
मुद्रण	:	पोष्ट प्रेस प्रा. लि., मध्यबानेश्वर postpresspvtltd@gmail.com

संस्करण	:	पहिलो, २०७८ असोज

ISBN	:	978-9937-705-59-2
		095 : 300.00

प्रकाशकीय

विपि कोइरालाले आफ्नो सम्पूर्ण जीवन उन्नत नेपाली समाज निर्माणको प्रयत्नमै लागाउनु भयो । मानवीय पक्षलाई केन्द्रमा राख्ने पहिलो जननिर्वाचित प्रधानमन्त्री विपि कोइरालाको विश्वास थियो कि गाउँहरू सिँगारिए भने मात्रै हाम्रो समाज उन्नत हुन्छ । नेपाली समाजको बनोटलाई मानवीय पक्षबाट समृद्ध बनाउने उहाँको अभिलाषा राजनीतिक जीवन र साहित्यिक रचनाहरू दुवैमा प्रष्टै महसुस गर्न सकिन्छ । आम जनतालाई दीक्षित गर्दै अधिकार सम्पन्न बनाउनमै उहाँ लागिरहनु भयो । तर आज धर्मनिरपेक्ष, संघीय गणतन्त्र नेपाल भइसक्दा पनि आम मानिसहरूले यसलाई प्रत्याभूत गर्न पाएका छैनन् । अहिले पनि राज्यको पुरानै केन्द्रिकृत शासन प्रणाली र एकल भाषा नीतिले व्यवधान गरिरहेको छ । विविधताले सम्पन्न नेपाली समाजमा खस भाषाको साहित्यलाई मात्रै नेपाली साहित्य मानिने जुन अमानवीय र विभेदको भाष्य छ, त्यो नै विपिले सोचेको उन्नत नेपाली समाजको अवरोध हो ।

नेपालका केही व्यवसायिक प्रकाशन गृहहरूबाट फाट्टफुट्टरूपमा खस भाषा बाहेकका कृतिहरू त छापिएका छन्। तर खस नेपाली भाषाबाट अन्य नेपाली भाषामा अनुदित कृतिहरू बिरलै छापिएका छन् । विपि कोइरालाले लेख्नुभएको प्रशिद्ध उपन्यास 'सुम्निमा' नेपालमा खस भाषापछि प्रयोगमा आउने दोस्रो भाषा मैथिलीमा अनुवाद गरेर यस संस्थालाई प्रकाशन गर्ने अवसर दिनुहुने आदरणीय बृषेश चन्द्र लाल र हामीसम्म चाँजो मिलाइदिने भाष्कर गौतमको विश्वासलाई जिम्मेवारीपूर्वक निर्वाह गर्ने प्रयत्न गर्नेछौं ।

नेपाली राजनीतिका समाजवादी विश्लेषक विद्वान् प्रदीप गिरिले यस कृतिमा गहन भूमिका लेख्नुभएको छ । उहाँप्रति हामी कृतज्ञ छौँ । डा. शेफालिका वर्मा पनि धन्यवादको पात्र हुनुहुन्छ । नेपालको जनसंख्याको दोस्रो ठूलो हिस्साको मातृभाषा मैथिलीमा अनुदित 'सुम्निमा' उपन्यास प्रकाशन गर्न पाउँदा हामी असाध्यै उत्साहित छौँ ।

यो कृति हाम्रा लागि नयाँ पाठकहरू सामु पहिलो प्रयत्न हो । प्रकाशकीय कमजोरीहरूप्रति तिखो प्रतिक्रिया हाम्रा लागि अमूल्य छन् । यसै प्रकाशन संस्थाबाट विपिका उपलब्ध भएसम्म प्रकाशित, अप्रकाशित राजनीतिक भाषण, चिट्ठी, अन्तर्वार्ता र लेखहरूको समग्र सँगालो चाँडै नै पाठक समक्ष लिएर आउनेछौँ ।

आम जनतालाई अधिकार सम्पन्न बनाउन विपि कोइरालाले गर्नुभएको संघर्ष हाम्रा लागि सधैँ प्रेरणा र ऊर्जा हुन् ।

फिनिक्स बुक्स
मध्यबानेश्वर
२०७८, असोज

निवेदन

विश्वेश्वरप्रसाद कोइरालाकेँ जननायकत्वक आदर्शपुरुषक रूपमे नेपालक भूमिक अनमोल रत्नक सम्मान प्राप्त छन्हि । ओ देश आ समाजक हरेक क्षेत्रमे क्रान्तिकारी परिवर्तनलेल अपन जीवन अर्पित क' देलन्हि । नेपालमे सामन्ती राणा परिवारतंत्री शासकसभसँ मुक्ति आ लोकतन्त्रक स्थापनाक लेल संघर्षकेँ ओ अटल-अविचल नेतृत्व प्रदान करैत रहलाह । नेपालक प्रथम जननिर्वाचित प्रधानमंत्री विश्वेश्वरप्रसाद कोइराला पूर्ण लोकतंत्र, जनताक सर्वोच्चता आ आदर्श संवैधानिक राजतंत्रक अभ्यासक पक्षपाती रहथि जाहि कारणेँ तत्कालीन राजा महेन्द्र सेनाक प्रयोग कए हुनका १८ महिनाक बादे प्रधानमंत्रीसँ पदच्युत कए जेलमे बन्द कए देलकन्हि । ८ वर्षधरि हुनका सुन्दरीजल कारागारमे रहए पड़लन्हि । ओतएसँ रिहाइक बाद ओ फेर राजाशाहीक विरूद्ध संघर्षक नेतृत्वक कमान अपन हाथमे लेलन्हि जे अन्तिम साँसधरि कसने रहलाह ।

विश्वेश्वरप्रसाद कोइरालाक जीवन राजनीतियेमे टा नहि समाजक हरेक क्षेत्रमे क्रान्तिकारी परिवर्तन लेल समर्पित रहल । समाजक अन्धविश्वास, जाति-पाति, हरेक किसिमक शोषणक अन्त्यक लेल हुनकर जीवन नेपालक इतिहासमे कालजयी अभियान मानल जाइत अछि । द्वन्द्वात्मक भौतिकवादक व्यावहारिक व्याख्याकार कोइरालाजी लोकतान्त्रिक समाजवादी खेमाक वैश्विक नेता छलाह । सोशलिष्ट इन्टरनेशनलक उपाध्यक्ष रहि एक तरफ सामन्ती समाजक विरूद्ध लड़ैत रहलाह त दोसर तरफ साम्यवादी सर्वसत्तावादसँ सेहो वैचारिक संघर्ष करैत रहलाह । लोकतन्त्र तथा समाजवादी लोककल्याणकारी राज्यक स्थापना हुनकर लक्ष्य रहलन्हि ।

नेपाली साहित्यकँ विश्वेश्वरप्रसाद कोइराला नव आ आधुनिक दिशा प्रदान कएलन्हि । ओ अपन मन मोताबिक साहित्यमे समय नहि देबए सकलखिन्ह से बरोबरि कहथिन्ह । तकर मलाल हुनका त रहबे कएलन्हि, नेपाली साहित्य सेहो किछु विशिष्ट कृतिसभसँ वंचित रहि गेल । ६ उपन्यास, २ कथा सङ्ग्रह, अपन जीवनी आ जेल डायरी हुनकर कृतिसभमे प्रमुख छन्हि । यौन-मनोविज्ञान, समाजक पात्रसभक यथार्थताक मनोविश्लेषण, राजनीति, अध्यात्म आ भौतिकवाद, देवत्व आ मनुखत्व आदि हुनक साहित्यक विषय देखल गेल अछि ।

दुर्भाग्य ई जे तहियाक परिस्थितिमे लोकतन्त्र बिरोधी यथास्थितिवादीसभ मजबूत छल आ हुनकर गति रोकएमे प्रतिगामिताक पक्षधरसभ अपन सभ किछु झोंकि देलकन्हि नहि त आजुक नेपाल निश्चय किछु विशिष्ट रहैत । विश्लेषकसभक दृष्टिकोण भिन्न-भिन्न हएब स्वाभाविक, मुदा हमरा लगैत अछि जे परिवर्तनक अभियानमे प्रतिगामिताक ओ दुष्टता नेपालक विरूद्ध अक्षम्य अपराध छल जकर कुप्रभाव नहि जानि कहिआधरि नेपालकँ खेहारैत रहतैक । तथापि, आइयो जे नेपाल अछि तकर मजबूत आधारशिला अर्थात् नेओ विश्वेश्वर प्रसाद कोइरालाक राखल छन्हि जकरा हुनक अवदान आ विचार दिनानुदिन आओर मजबूत करिते रहतैक ।

'सुम्निमा' सुन्दरीजल जेलमे १९६४ मे ८ दिनमे लिखल गेल । हुनकासंगँ गणेशमान सिंह, कृष्णप्रसाद भट्टराई, रामनारायण मिश्र एवं देवान सिंह राई कारागारमे बन्दी रहथिन्ह । देवान सिंह राई (किराती) भौतिकवादी रहथिन्ह त रामनारायणजी अत्यन्त धार्मिक आ अध्यात्मवादी । दुनूमे खूब गरमागरम बहस होइन्ह । 'सुम्निमा' हुनकेसभक बहस पर विश्वेश्वरप्रसाद कोईरालाक टिप्पणी, विषय-उत्थान अथवा विचार कहि सकैत छी ।

'सुम्निमा'मे बहुत किछु अछि – मातृसत्ता आ पितृसत्ता, प्रेम, आकर्षण तथा सम्भोग, देह आ ईश्वर, आर्य-अनार्यक सोचमे भिन्नता, प्रकृतिक प्रमुखता, आदि-आदि । सम्पूर्ण कथा फेर यौन पर आधारित कए टिकाओल

गेल अछि । नेपाली साहित्यमे यौन-मनोविज्ञानक ई अनुपम कृति कहल जाइत अछि । तँए, हमरा लागल जे जओं एकरा मैथिलीमे प्रस्तुत कए परोसलजाय त बहुत लाभान्वित भ' सकैत छथि । आ हम लागि गेलहुँ । हमर प्रयत्न कतेक तक सुतरल आ लाभप्रद भ' सकल से त पाठकजनक विषय अछि । तँए, ताहि हेतु सादर समर्पित करैत छी ।

एकरा परोसएमे हमर सहधर्मिणी विजया लालक प्रोत्साहन आ मैथिलीक विभिन्न विधामे सेवारत अनुज अशोक दत्तक योगदान सदैव याद रहत । एकरा प्रकाशित कए आदरणीय पाठकजन समक्ष अर्पित करक सम्पूर्ण श्रेय Phoenix प्रमुख चिरंजीवी गणेश सुवेदीक छन्हि । हिनकासभकेँ साधु साधु !

सविनय,
सेप्टेम्बर १३, २०२०

भूमिका

हमरासभ बीपी कोइरालाकेँ एक गोट प्रभावशाली राजनीतिक नेता तथा समाजवादी विचारकके रूपमे चिन्हैत-जनैत छिअन्हि । ओ अपन राजनीतिक संघर्षक दिनसभ प्रायः निर्वासन आ जेलमे बितोलन्हि । सुन्दरीजल जेलमे ८ वर्षक लगातारक कारवासमे ओ अपन श्रेष्ठ साहित्यिक कृतिसभक सृजन कएलथि । हुनकर ओहि सृजित विधासभमे 'सुम्निमा'क स्थान विशेष छैक ।

बीपी स्वयं लिखने छथि जे ओ अपन साहित्यिक कृतिसभकेँ, खास कए अपन उपन्याससभकेँ अपन विचार आ चिन्तनक वाहन बनोने छथि । हुनकर प्रत्येक उपन्यासमे एक गोट खास आ स्पष्ट दृष्टिकोणक प्रतिपादन अछि । 'तीन घुम्ती'मे नारी जीवनक भवितव्यक व्याख्या छैक त 'हिटलर आ यहूदी' तथा 'मोदिआइन'मे गीता दर्शनक विमर्श छैक । हुनकर उपन्याससभमे 'नरेन्द्र दाई' एक टा स्त्री-पुरुषक जोड़ीक प्रेमाकूल सम्बन्धक दुखान्तिका अछि । मुदा, 'सुम्निमा' एहि चारुसँ भिन्न प्रकृतिक अछि ।

विचारधारा पर आधारित उपन्याससभ ओहिना आ सोझेँ श्रेष्ठ नहि भ' जाइत छैक । विश्व स्तरक साहित्यकार 'शेक्सपियर' अथवा 'लिओ टाल्सटाय'क की कोनो विचारधारा रहन्हि ? प्रयत्न कएलो पर हुनकासभक कृतिमे लेखकक मान्यता यएह छैक से किटब कदाचित् बहुत कठीन हएत । ओसभ अपन सभ पात्रसभसँ सहानुभूति देखोने छथि । पात्रसभक सृजन कए नकारात्मक पक्षक वर्णन करैत काल ओकरासभक मानवीयताक

सेहो पूरा ध्यान रखने छथि । शेक्सपियरक 'शायलक'प्रति पाठक वा दर्शक सहानुभूतिक अनुभव नहि क' क' ने त पूरा नाटक पढ़ि सकैत अछि ने त देखिये सकैत अछि । तहिना लिओ टाल्सटायक 'अन्ना क्यारिनीना' तत्कालिन समाजक मान्यताक कसौटी पर चरित्रहीन मानल जाएति । मुदा, टाल्सटायक चित्रण संवेदनासँ भरल छैक । आ तँए, पाठकक मनमे ओकरालेल स्नेह भरि जाइत छैक । बीपी कोइराला अपन पात्रसभसँ एहन निसंगताक पालन नहि कएने छथि । अपन पात्र विशेषकेँ अपन विचारक वाहन बनबैत काल बीपी ओकरासभक मानवीय पक्षकेँ प्रायः बिसरि जाइत छथि । 'तीन घुम्ती'क इन्द्रमाया वास्तविक जकाँ नहि लगैति अछि । तहिना 'नरेन्द्र दाई'क गौरी अथवा मुनरियाक संगेँ पाठक सहजतासँ तादात्म्य स्थापित नहि क' पबैत अछि ।

'सुम्निमा' मुख्यतः दू पृथक संस्कृतिक द्वन्द्वक पृष्ठभूमि पर ठाढ़ आख्यान अछि । लेखक स्वयं लिखैत छथि – 'ई बहुत पहिनेक कथा अछि, वर्तमानमे हमरासभक कानमे ई वृतान्त पुराण सन ध्वनित हएत ।' पुराण-जन्य पात्रसभक सृष्टिक कारणेँ एतए लेखक देश आ कालक बन्हनसँ मुक्त भ' गेल छथि । तँए, उपन्यासक नायिका सुम्निमा कोइरालाक पात्रसभमे सर्वाधिक स्वाभाविक, सहज आ जीवन्त भ' जाइति अछि । सुम्निमाक व्यक्तित्व एक गोट उपलब्धि बनि जाइत छैक । लेखकक सुम्निमा स्त्री-पुरुषक आदिम एवम् अनिवार्य आकर्षणक उत्फुल्ल उदाहरण भ' जाइति अछि ।

'सुम्निमा' उपन्यासकेँ गहींरसँ देखला पर ओहिमे कतिपय पृथक, मुदा संघटित तत्वसभ भेटैत अछि । कथा दू गोट संस्कृतिक आस्था, विश्वास, पूजा-पाठ आ खान-पीनक द्वन्द्वसँ प्रारम्भ होइत अछि । ब्राह्मण संस्कृतिक पक्षधरक लेल गाय माता, देवी आ अबध्य छैक त किरात-भिल्ल बध्य आ भोज्य मानैत अछि । ब्राह्मण संस्कृति आत्माकेँ महत्व दैत प्राप्य आ उपास्य कहैत छैक आ शरीरकेँ साधन मानैत अछि त ओतहिं भिल्ल-किरात संस्कृति शरीरकेँ आदि आ अन्त बुझैत अछि से लेखकक प्रस्थापना छन्हि । वैदिक संस्कृति आ चार्वाक दर्शनमे एहन तर्क-वितर्क

गहन स्तर पर भेल छैक । लेखक औपन्यासिक आवश्यकताक कारणेँ एहि दुनू संस्कृतिक परिचिति दैत काल सरलीकृत नाटकीय वृतान्त दैत निर्वाह कएने छथि ।

शरीरे आदि आ अन्त अछि से लोकायत दर्शनक प्रान्जल बौद्धिक परम्परा थिक । ठीक ओहिना वैदिक दर्शन सेहो शरीरकेँ धर्म साधन त कहैत अछि मुदा शरीरकेँ कष्ट अर्थात हठयोगमे तपाकए साधएके प्रवृतिकेँ घोर विरोध कएने अछि । कथा प्रवाहमे लेखक एकर उपयोग धरि कएने छथि । दार्शनिक विवेचन लेखकक अभिष्ट नहि छन्हि, हएबाको नहि चाही । शुद्ध उपन्यास दार्शनिकताक बोझ कोना धोअए सकतैक ?!

शास्त्र शुष्क होइत छैक आ ओतहिं जीवन हरियरीसँ भरल रहैत छैक । सुम्निमाक पुष्टाइत आ पुलपुलाइत उत्फुल्ल यौवनक वर्णन मनोहारी अछि । बीपी कोइराला सुम्निमाक प्रणय याचना साक्षात एवं संक्रामक बनोने छथि । सुम्निमा आ सोमदत्तक आकर्षण-विकर्षणक चर्यामे संस्कृतक प्रसिद्ध कविता शुक-रम्भा संवादकेँ स्मरण कएल गेल अछि जे आनन्दित कए दैत अछि । साँचेँ, सुम्निमा रम्भा सन चपल, वाचाल आ मोहिनि लगैति अछि । मुदा, सोमदत्तमे शुकदेवक कोनो बिम्ब देखएमे नहि अबैत छैक । कोइराला ओकरा निरीह, अर्धशिक्षित तथा दुराग्रही ब्राह्मण-पुत्रक रूपमे प्रस्तुत कएने छथि । लेखक एतए अपन पात्र सोमदत्तसँ अन्याय कएने छथि ।

तथापि, कथा आगाँ बढ़ैत अछि आ स्त्री-पुरुषक अनिवार्य एवं आदिम आकर्षणक हेतु प्रकट होइत छैक । सुम्निमा आ सोमदत्त दुनू अपन जातिय संस्कार अनुरूप विवाह करैत अछि । घर बसा लैत अछि । दुनूक दाम्पत्य जीवनक अनुभूति विपरित प्रकृतिक छैक जतए स्वाभाविक आ सरल प्रेमक आभाव रहैत छैक । सोमदत्तक जीवन त अत्यन्त शुष्क आ दुर्बह कर्तव्यबोधसँ भरल टा मात्र छैक । ओ निराश जीबैत आ निराशे मरैत अछि । सुम्निमाक जीवनमे आह्लाद त नहि छैक, मुदा ओ अपन कर्तव्य सम्पादनसँ संतोषक प्राप्ति कएने अछि । उपन्यासक एहि चरणमे लेखक प्रेम आ गृहस्थीक विविध स्वरूप तथा सम्भावना दिस संकेत तक करक कोशिश कएने छथि ।

उपन्याससभ उपसंहारलेल अन्तिम अध्यायक प्रयोग करैत अछि । मुदा,सुम्निमामे बीपी सोच आ उत्सुकताक सन्दर्भ दोसर अध्यायमे रखने छथि । बस दू पृष्ठक दोसर अध्याय उपन्यासमे सर्वाधिक महत्वपूर्ण प्रश्नसभ उठोने अछि जे उपन्यासक गुद्दी छैक । अन्तिम अध्यायमे सोमदत्तक बेटा आ सुम्निमाक बेटी गान्धर्व बिआह करैत अछि । बहुत कम शब्दमे प्रकृति आ संस्कृतिक अनवरत द्वन्द्वमे एक गोट नव संस्कृति उदित भ' जाइत छैक ।

बीपी कोइराला आजीवन समाजवादक स्वरूप आ सन्देश पर चिन्तन तथा मनन कएलथि, मुदा समाजवादक बारेमे हुनकर लिखल कोनो स्वतन्त्र पुस्तक प्राप्त नहि अछि । समय नहि भेटलन्हि से कहब ठीक नहि हएत । कारावासक एहि ८ वर्षमे एहन सुन्दर उपन्यास लिखएबला समाजवादक बारेमे लिखए नहि सकितथि से कोना कहबैक? किएक नहि लिखलथि? की कहए चाहैत रहथि? की लिखक चाहिअनि? ई सभ अध्ययनक पृथक विषय अछि । मुदा, हुनकर उपन्याससभ एहि आभावक पूर्ति कएने अछि । प्रस्तुत पुस्तकक अनुवादक वृषेशचन्द्र लाल स्वयं कर्मठ राजनीतिज्ञ छथि । एखन ओ नेपाली काँग्रेससँ बाहर रहि कए क्रियाशील छथि तथापि बीपीक विचारसँ कनेको कतहु विमुख नहि छथि । ई सुन्दर अनुवाद एकर सबूत अछि ।

ई पंक्तिसभ लिखैत कालक नेपाल नमहर राजनीतिक उहापोहसँ गुजरि रहल अछि । एहि उथलपुथलक पूर्वसन्ध्यामे भविष्यक कोनो अनुमान लगाबक स्थिति नहि छैक । जहिआसँ पृथ्वीनारायण शाहक नेतृत्वमे नेपालक एकीकरण भेल, नेपालक एक गोट छोट समूह, जाति आ वर्ग–विशेष राज्यक प्रत्येक अंग आ उपाङ्ग पर अड्डा जमोने बैसल छैक । व्यक्ति बदलल छैक, मुदा राज्यक अन्तर्प्रणाली ओहिना अछि । संघीय राज्यक घोषणाक बादो शासक समूह जुक्ति, शक्ति आ भक्तिक भर लए सरकार चला रहल अछि । नेपाल ककरा कहबैक? ककर छैक नेपाल? से प्रश्नसभ उठैत रहैत छैक । एहि देशक आर्जन पूर्खासभक कठीन दुःखसँ भेल अछि तेहन भावना किछु लोकमे एखनो विद्यमान छैक । एहन भावनाक निरन्तरताक सांस्कृतिक तथा

समाजशास्त्रीय विश्लेषण हएब जरूरी छैक । तहिना व्यक्ति की? परिवार की? आ समाज की सेहो प्रसंग उठैत छैक । स्त्री आ पुरुषक सम्बन्धसँ परिवारक सूत्रपात होइत छैक आ परिवारसभसँ समाज बनैत छैक । व्यक्ति, परिवार आ समाजक अन्तर्सम्बन्ध मानव इतिहासक अभेद्य ग्रन्थि अछि । बीसो शताब्दीक बाद एखन आबि कए राष्ट्रिय-राज्य नामक सर्वाधिक शक्तिशाली संस्थाक निर्माण भ' गेल छैक । एखन नेपालमे सभ किछु पाछाँ ध' क' जनजीवनक मुख्य इकाइ राष्ट्र आ राज्य भ' गेल छैक । संसारभरि राष्ट्रक परिभाषाक सन्दर्भमे जातियताक सवाल यत्र-तत्र उठिते छैक । उपन्यासक अन्तिम पृष्ठमे बीपी लिखैत छथि,– 'किरातीसभक जातिक रक्तक महासमुद्रमे एक टा बून्नक कोनो अस्तित्व नहि रहलैक । कोशीक अबाध गति प्रकृतिक विराट शान्तिकेँ चिरैत बहैत रहलैक ।'

* * *

राजा महेन्द्र कहिओ टोपी आ सुरूवालकेँ राष्ट्रियताक अनिवार्य प्रतीक बनोने रहथि । एक डेग आओर आगाँ बढ़ैत ओ राष्ट्रियताक परिभाषा देबाक क्रममे 'एक राजा एक देश, एक भाषा एक भेष'क नारा लगोने रहथि । आब ओ नारा नहि रहल । मुदा, ओहि नाराद्वारा प्रतिपादित राष्ट्रियताक विकल्पक निर्माण नहि भ' सकल अछि । राष्ट्रियताक वैकल्पिक भाष्य आब हमरासभक ऐतिहासिक कार्यभार भ' गेल अछि । बीपी अपन प्रत्येक उपन्यासमे साहित्यिक शैलीक सशक्ततासँ राष्ट्रीय मनक परिचय देने छथि । काठमान्डूक इन्द्रमाया, दरभंगाक मोदिआइन, बराह क्षेत्रक सुम्निमा आ टेढ़ी(भागलपुर)क मुनरिया तथा फगुनी सभ ध्यान देबएबला पात्रसभ अछि । मधेशीमूलक एक गोट राजनीतिज्ञ मैथिली भाषामे अनुवाद करएलेल सुम्निमाकेँ चुनब बहुत अर्थपूर्ण छैक । एहिलेल वृषेशकेँ हम अतिरिक्त धन्यवाद देबए चाहैत छी ।

* * *

प्रधानमन्त्रीसभ चाहे जे भाषण देथि वा बाघचालक खेल खेलथि, नेपाली राष्ट्रियताक नेओ बलुआर नहि भ' सकल छैक । उल्टे प्रधानमन्त्रीसभक

क्रियाकलापसँ भय आ सन्त्रास बढ़ि गेल छैक । आत्मनिर्भर अर्थतन्त्रक अभावमे कोनो राष्ट्र बलुआर नहि भ' सकैत अछि । एक दिस लाखौं तरुणक बाँहि विदेशल छैक त दोसर दिस दैनिक उपभोग्य सामग्रीलेल हमरासभ विदेशी पर निर्भर छी । बुझाइत अछि, मानव श्रमक अलावा निर्यातलेल हमरासभक लग आओर किछु अछिये नहि । एकीकरण पश्चात् स्वाधीन राज्यक अढ़ाई सय वर्षक गौरवगाथाक इतिहास अछि, खुड़ा आ खुकुरीक भर पर कहियो हमरासभ विश्व-विजयी अंग्रेजक दम फुला देने रहिऐक; मुदा तकर बाद दिनानुदिन हमरासभक मानचित्र कमजोरे होइत गेलैक । ऐतिहासिक विकासक क्रममे एक टा वंश विशेषकँ राज्य आ सरकार सौंपि देलाक बाद हमरासभ निच्चा उतरए लगलहुँ । राष्ट्रियताक प्रखर व्याख्याता राजा महेन्द्रक शरीरमे मैथिल रक्तक बून्न सेहो मिलल रहन्हि – सुम्निमाक उपसंहारमे किराती आ ब्राहमणक खून मिलल जकाँ । मुदा, पंचायतक सम्पूर्ण कालमे मिथिला वा किरात संस्कृतिकँ कहियो कोनो सम्मान नहि भेटलैक । एनामे राष्ट्रियताक मजबूती कहियो नहि भ' सकत ।

मिथलाक संस्कृति आ भाषाक मौलिकता तथा महानता आइ नेपाल आ हिन्दुस्तान दूनू दिस उपेक्षित अछि । मध्य-युगमे मिथिला विद्याक पर्याय रहैक । मिथिलाक पाणडित्य परम्पराक गौरव बोधलेल मण्डन मिश्र, वाचस्पति मिश्र, उभया भारती आ विद्यापतिक नाम पर्याप्त छैक । विद्यापतिक सर्वाधिक हस्तलिखित ग्रन्थसभ काठमान्डूमे भेटल अछि । मुदा, शाहवंशक उदयक पश्चात मिथिलाक संस्कृति, साहित्य आ राजनीतिक प्रभाव घटक क्रम तीव्र होइत गेलैक । दोसर जनआन्दोलनक अभिक्रममे मधेशक हस्तक्षेपक बाद देशक वातावरण किछु परिवर्तित त भेल अछि तथापि स्थिति सन्तोषजनक एखनो नहि छैक । राष्ट्रिय विमर्शक बहुतो रास अध्यायसभ एखनो अलिखिते छैक । एहनमे साहित्यक माध्यमसँ राष्ट्रिय आ सांस्कृतिक ऐकवद्धताकँ सिंचित करब एखनुक महत्वपूर्ण कार्यभार अछि । सुम्निमाक मैथिलीमे सुन्दर अनुवाद क' क' श्री वृषेशचन्द्र लाल अपन मातृभाषा एवं अपन प्रेरणाक श्रोत बीपी कोइरालाक प्रतिक ऋणमोचन कएलथि अछि ।

साहित्यिक अनुवाद विधा ओना कहल जाय त बहुत चर्चक विषय नहि रहल अछि । साँचे कही त ई कहब सर्वथा बेठीक अछि । कतिपय दृष्टिसँ अनुवाद मौलिक लेखनसँ बेसी सृजनात्मक होइत छैक । अनुवाद साहित्यक इतिहासमे उमर खैय्याम रूबाइयत अवश्य एक गोट विश्वप्रसिद्ध कृति अछि । मुदा, सत्य इहो जे ई अनुवाद अनुवादक एडवर्ड फिटजेराल्डक कारणेँ विश्वप्रसिद्ध भ' सकल । कहक तात्पर्य ई जे अनुवादकलेल मूल कृतिक मर्म बुझब आवश्यक आ संगेँ जाहि भाषामे अनुवाद कएल जाइछ तकर सौष्टव आ सौन्दर्यक आत्मसात हएब सेहो जरूरी छैक । वृषेशचन्द्र लाल अपन एहि अनुवादमे आवश्यक एहि दुनू योग्यताकेँ देखोलन्हि अछि । ओ बीपीक मर्मकेँ बुझने छथि आ मैथिली भाषा अपन मायक कोंखेसँ सिखने छथि । यएह कारण एहि अनुवादकेँ निर्दोष तथा सफल बना सकल छैक ।

भूमिका लेखनक एहि क्षणमे बेसी गनथन कदाचित उचित नहि, मुदा एक त बीपीक रचना आ दोसर वृषेशजीक अनुवाद तैँ अपनाकेँ रोकि नहि सकलहुँ । अनुवादक मादेँ कही त किछु उदाहरण नहि देनाइ ठीक नहि हएत । कनक बदनी बालिके सोमदत्तकेँ 'पतरसुट्टा' कहि सुन्दर मधेशी शब्दक प्रयोग करैति अछि । अपन उहापोहकेँ 'दूर जो !' कहि अभिव्यक्त करैति अछि । 'घोंघाँउज', 'असगरे', 'चकुवाइत', 'भोकासी पाड़ैत कनैत' 'तमसा कए' 'मुँहझप्पा' 'लत्ता' आदि-इत्यादि सनक शब्दसभक प्रयोग मैथिलीक स्वाभाविक मधुर लय पटबैत अनुवादकेँ मौलिक सन बना देने अछि । बुझएमे सुगम आ रूचिकर एहि अनुवादकलेल वृषेशजीकेँ धन्यवाद । धन्यवादे टा नहि बधाई सेहो लिअ । शतायु रहू ! वर्षक एक गोट नेपाली, हिन्दी तथा अंग्रेजी उपन्याससभक अहिना आ एहने अनुवाद करु !!

प्रदीप गिरी
सांसद, प्रतिनिधिसभा नेपाल
२३, माघ २०७७ (६ फरबरी, २०२१)

मंगलकामना

हिन्दी आ नेपालीक प्रख्यात साहित्यकार तथा नेपालक प्रथम निर्वाचित प्रधानमन्त्री स्व. वी.पी. कोइरालाक उपन्यास 'सुम्निमा'क नेपालीसँ मैथिलीमे अनुवाद देखि चमत्कृत भ' गेलहुँ । स्व. वी.पी. कोइरालाक राजनीतिक विचारक अनुयायी लोकतान्त्रिक समाजवादी राजनीतिज्ञ वृषेश चन्द्र लालद्वारा मैथिलीमे अनुदित पोथी 'सुम्निमा' पढ़ि अनुभूत भेल जे वृषेशजी सेहो स्व. कोइरालाजकाँ मूलतः साहित्यकार छथि, राजनीतिकर्मितासँ एकदम सामानान्तर दुनूक अपन विशिष्ट साहित्यिक व्यक्तित्व छन्हि । सुम्निमाक अनुवाद पढ़लहुँ त कतहु नहि बुझाएल जे कोनो कृतिक अनुवाद पढ़ि रहल छी । अनुवादकक गहन चिन्तन, मनन आ सम्वेदनशीलताक उत्कृष्टताक कारणेँ मौलिक रचनाक आनन्दानूभूति होइत रहल – खास क' मैथिली भाषाक ई प्रांजल रूप जे भाषा पहाड़सँ दौगैत नचैत पाठकक हृदय-गुहामे पहुंचि जाइत छैक । वृषेशजीक लोकोन्मुखी अन्तर्दृष्टि दूरदर्शीये टा नहि वरन पारदर्शी सेहो अछि तखन त एहि उपन्यासक आत्मा धरि ओ पहुंचि सकलाह अछि । नेल्सन मंडेला कतहु कहने छथिन्ह– 'A good head and good heart are always a formidable combination but when you add to that a literary tongue or pen, then you have something very special.'

'सुम्निमा' एकटा मनोवैज्ञानिक उपन्यास थीक । एहिमे प्रेम प्रकृतिक एकटा चिरन्तन भाव अछि जे जड़्-चेतन सभमे एकटा स्नेहिल स्पन्दन सिहरा दैत अछि । कतेक ठाम हमरा व्लाद्विमिर नोवाकोवक 'लोलिता' मन

पड़ि जाइत छल तँ कखनो भगवती चरण वर्माक 'चित्रलेखा'क पाप-पुण्यक विवेचन । मुदा, सुम्निमाक कथ्य हमरा आचार्य रजनीशक 'सम्भोगसँ समाधि'क बेसी लग बुझाएल । एहि पोथी में वासनाक ज्वार नहि वरन देहमे डुबि परमात्माक सन्धान अछि । एहिसँ बेसी नहि कहब । पाठक स्वयं पढ़ैथ, गमैथ । हमर अपन ज्ञानक अनुसार मैथिलीमे एहि तरहक पोथी स्यात् नहि अछि – यदि अछि तँ कतहु नुकायल हएत ।

अनुवादमे भावानुवादक बेसी महत्व होइत छैक, जाहि में सम्प्रेषनीयताक अविरल धार होए । एहि इन्द्रधनुषी भावानुवादक लेल वृषेश चन्द्र लाल बधाईक पात्र छथि । केओ एहि उपन्यासकेँ पढ़नाइ शुरु करत तँ हेरा जायत, बिनु समाप्तिक पाठककेँ चैन नहि भेटतैक । राजनीति में रहितो, व्यस्त जीवन जीवितो साहित्यक लेल एतेक समय निकालि लैत छथि, माँ मैथिलीक भंडार के श्रीवृद्धि करैत रहैत छथि – साधुवाद असंख्य !

डा. शेफालिका वर्मा

दिल्ली तुलसी विवाह, २०२०

उपकथा

अतीतक अन्हार गर्भसँ निकलल आ वर्तमानमे पुराण जेकाँ ध्वनित होइत ई खिस्सा बहुत पहिनेक अछि । आजुक हमरालोकनि प्राचीन वृत्तान्तसभकेँ अपन वैयक्तिक अनुभवसँ ग्रहण नहि कए सकैत छी । ओ हमरासभक जीवनक जीवित अनुभूति भइए नहि सकैत अछि । ने ओकर प्रेमक ताप हमरासभकेँ गरमा सकैत अछि आ ने ओकर दुःख हमरासभकेँ नोरा सकैत अछि । हमरासभक जीवनसँ असम्बद्ध ओ पुरान घटनासभ सत्य-असत्यक मापसँ अपनाकेँ एकदम मुक्त क' नेने रहैत अछि । हमरासभ इहो खोजबीन नहि करैत छी जे ओहि वर्णनमे सत्य कतेक छैक आ असत्य कतेक ?! एहन प्राचीन वृत्तान्तसभमे कतहु प्रतीकात्मक प्राप्तिक अंश होइत छैक त कतहु स्थान-कालोत्तरक संकेत । आ तँए, हमरासभक रूचि आकर्षित क' लैत अछि । दश हजार वर्ष जीवएबला ऋषि वैज्ञानिक सत्य नहि थिक जेना चित्रकारक कागजमे रङ्गल बनाओल लाल सूर्य । ओ सभ प्रतीक अछि । अनुभवसँ बाहरक स्वाद प्रतीकात्मक होइछ, संकेतजनित । तँए, ई कथा सत्य आ असत्यक तराजूपर नहि जोखाएबला एक गोट वृत्तान्त थिक । एकर महत्व पौराणिक छैक, संकेतमय आ प्रतीकात्मक ।

हिमालय पर्वतश्रृंखलाक कोण-कोण आ खोंच-खोंचमे सर्पाकार होइत कौशिकी नदी पहाड़क कोरक बन्हनसँ फुजैत मातृगृह त्यागि भागलि वयप्राप्त रमणी जेकाँ उन्मुक्त भ' वराहक्षेत्रक चतराक समथर प्रदेशमे अपन सम्पूर्ण प्रवेग आ शक्तिक संग हठात् सहस्त्र कंठसँ सित्कार करैति

निकलति अछि । तहिआ ओ प्रान्त अनेक प्रकारक वृक्ष, गुल्म, लता एवं झार-झङ्कारसँ भरल घन वन-जङ्गलसँ एना आविष्ट छल जेना एक गोट भूखण्ड नहि गाढ़ हरिअर रंगक सघन कालिमायुक्त दैवी पपरा होइक – पृथ्वी पर अड़ल आ जमल । वायुमे सेहो सजल हरितिमा व्याप्त रहैत छलैक । हरिअरीक ओ महासागर पृथ्वीक यावत् लक्षणकेँ गर्भस्थ कएने छल । एतेक कि पश्चिमक शैवालिक पर्वत सेहो ओहिमे हेराएल आ अस्तित्वहीन जेकाँ भ' गेल रहैक । उत्तर किछु दूर धरि ओहि हरिअर साम्राज्यक सीमा रहैक आ तकरबादेँ ऊपर आकाशक हाराहारीमे हिमालयक पर्वत-शिखरसभ ओहिसँ मुक्त होइत अपन माथ सोझ कएने ठाढ़ भ' सकल छल । ओहि सघन हरितिमाक मध्यकेँ कोनो धारयुक्त चक्र खड्गसँ कटैति आ आकाशकेँ अपन वक्षमे चमकबैति कोशी नदी नील लौहधारक प्रखर ओजमे प्रवाहित छलि । तहिआ अनुश्रुति रहैक जे ओही ठाम गाधिपुत्र महर्षि विश्वामित्र अपन आश्रम स्थापित कएने छलाह । नदी कछेरक एक गोट छोट अधित्यकाकेँ देखवैत लोकसभ कहैत छल,–'ओहि ठाम विश्वामित्र मुनिक आश्रम छल ।' युगलकिशोर राम एवं लक्ष्मणक गुरु भेलाक बाद अपन मेधावी शिष्यसभकेँ ओहि आश्रमक दर्शन एक बेर कराबक इच्छा विश्वामित्रकेँ निश्चिते भेल रहल हएतन्हि, मुदा यात्रा जनकपुर पहुँचि कए खण्डित भ' गेल रहन्हि जतए राम अपन कौशल आ पराक्रम सिद्ध करैत जनककुमारी सीताकेँ अपन पत्नीक रूपमे प्राप्त कएलन्हि । रामक विवाह पश्चात् स्थिति दोसर भ' गेलैक । सभ केओ सीताकेँ ल' अयोध्या घुरि गेलाह आ तँए, विश्वामित्रक आश्रम तक दशरथपुत्र राम तथा लक्ष्मणक यात्रा नहि भ' सकल । ओहि महान गौरवसँ चतराक भूमि सदाक हेतु वञ्चित रहि गेल ।

जहिआक ई वृत्तान्त अछि तहिआ विश्वामित्र एक गोट पौराणिक ऋषिक रूपमे मात्र स्मरणीय छलाह । विश्वामित्रक शेषोपरान्त ओहि स्थलक यज्ञवेदी निरग्नि आ आकाश यज्ञधूमसँ शून्य भ' गेल रहैक । सहस्त्र कंठसँ ध्वनित वेदपाठ रूकि गेल रहैक । आश्रमक पर्णकुटीसभ किछु दिन तक शून्यमे आँखि चिआरि-चिआरि क' ठाढ़ रहल आ फेर

एक-एक क' भूमिसात होइत विलिन भ' गेल । लगेक प्रतीक्षारत वन धीरे-धीरे ओकरा अपन मातृअंगमे पुनः समेटि लुप्त क' देलकैक । प्रमाणक रूपमे ओतए एक गोट ऊँच डिह छोड़ि आओर किछु नहि रहि गेलैक । तँए, अनुश्रुतिक ऐतिहासिकताकेँ दम नहि भेटलैक । उत्तर पहाड़ दिस किरातीसभ अपन पुरनके स्थितिमे रहल । ओकरासभक हेतु विश्वामित्र, हुनकर आगमन तथा क्रियाकलाप स्वप्न जेकाँ आएल आ बिला गेल सन भ' क' रहि गेल रहैक । तेहने भेलैक दक्षिण-पूर्वक भिल्लसभक हेतु । जङ्गलमे ओकरासभक छोट-छोट वस्तीसभ अपन पुरनके गतिमे चलैत रहलैक । किराती आ भिल्लसभक स्मृतिसँ विश्वामित्र तथा हुनकर आश्रमक चहलपहल पूर्णतया लुप्त भ' गेलैक — कोनो चेन्ह बाँकी नहि रहि गेलैक । जहिना पृथ्वी हुनकर चिन्हकेँ पोछि कए मेटा देने छलैक तहिना ई जातिसभ सेहो मेटा देलकैक ।

१

कालान्तरमे ओही डिहकेँ पसिन क' एक गोट तपस्वी ब्राह्मणदम्पती अपन आश्रम बनओलन्हि । स्थान रमणीय छल । वन-जङ्गलक कन्दमूल तथा फलफूलसँ भरल-पूरल आ लगले निच्चा शीतल जलवाहिनी नदी कौशिकी छलखिन्ह । डिह कनेक ऊँच भेलासँ स्वस्थकर सेहो लगलन्हि ।

ग्राहस्थ्य जीवनकेँ छोड़ि कए ओसभ अपन एक मात्र पुत्रकेँ ल' अरण्यवासक हेतु एतए आएल रहथि । सोचब ई रहन्हि जे वानप्रस्थमे कालयापन करैत पुत्रकेँ ब्राह्मणोचित सधर्म आ उच्च जीवनक शिक्षा देब सुलभ हएत । गाममे ओकर शिक्षाक उपयुक्त व्यवस्था नहि भ' सकितैक । पुत्रकेँ किशोरेँ अवस्थासँ कठोर अनुशासित जीवनमे ढ़ालि शिक्षित कएला पर ओ आदिकालक ऋषिसभक समकक्षी भ' सकत से हुनकासभक विश्वास रहन्हि । हुनकासभकेँ अपन पुत्रसँ बड्ड आश रहन्हि । पुत्रो मेधावी रहन्हि । बच्चेसँ ओकरामे निक लक्षणसभ देखएमे अबैत रहैक । ओकर स्मरणशक्ति अद्‌भूत रहैक – एकबेर सुनल श्लोक कण्ठस्थे क' लैत छल । जनपदक बड़का-बड़का पण्डितसभ ओकर कुशाग्र बुद्धिक प्रशंसा करथिन्ह । अही दुआरे ओ अपन पुत्रकेँ अरण्यमे संगहि रखबाक निर्णय नेने रहथि । ओकर नाम रहैक – सोमदत्त ।

सोमदत्तक हितकेँ ध्यानमे राखि माता-पिता अरण्यवासी बनएसँ पूर्वें पुत्रक यज्ञोपवित सेहो सम्पन्न क' लेबाक विचार कएलन्हि । पिता सूर्यदत्त कहलखिन्ह,– "वनमे व्यवस्था करब सुगुम नहि हएत ।"

माय सेहो समर्थन कएलखिन्ह,– "सौभाग्यसँ एक गोट विद्वान महापण्डित आइ-काल्हि गामे छथि, एखन हुनका पुरोहित नियुक्त करक सुअवसर सेहो हमरासभकेँ प्राप्त अछि ।" आ अही निर्णयानुसार सोमदत्तक द्विज धर्मानुकूल व्रतवन्ध सम्पन्न भेलैक । जाहि निष्ठा आ निपुणतासँ बालक यज्ञोपवित संस्कार सम्बन्धी यज्ञादि क्रिया सम्पन्न कएलक तकरा लक्षित क' ऋत्विज एवं ब्राह्मणसमुदाय धन्य-धन्य कएलन्हि । संस्कारपूर्ण वेदपाठ आ शुद्ध मन्त्रोच्चारणसँ उपस्थित मण्डली मुग्ध भ' गेल । जखन ओ मुञ्जक लंगोटा आ कौपीन धारण क' राँङ्कवखण्डकेँ बामा कान्ह पर राखि भिक्षाक याचना करए लागल,– "भवतु भवतु भिक्षां मे देहि ...." ओकर मुण्डित माथ परक हिलैत गोखुरपरिमाणक शिखा आ कृश बालमुँह पर चमकैत युगल चक्षुकेँ देखि सभकेँ कहए पडलन्हि,– "बालक श्रेष्ठ ब्राह्मण हएत । महात्माक सभ विशिष्ट लक्षण एहि बालकमे विद्यमान अछि ।"

पिता सूर्यदत्त समागत विद्वतमण्डलीक प्रशंसा सुनि हर्षित भ' मनेमन सङ्कल्प कएलन्हि, –'हमर वंशमे ई ऋषि जनमल अछि । एकर समुचित शिक्षादीक्षामे हम कोनो आभाव नहि होमए देबैक ।'

पुत्रक यज्ञोपवित संस्कार समपन्न कए ओसभ सोझे वन दिस प्रस्थान कए देलन्हि । गामक लोकसभ सुदूर सीमाधरि आबि मङ्गलकामना करैत हुनकासभकेँ विदा कएलक । एक गोट छोट कौपीन पहिरने सोमदत्त हाथमे पाठ करएबला पुस्तक नेने छल । उपनयनक दिन जाहि पलासक दण्ड टेकि ओ भिक्षाटन कएने छल तकरे टेकने आइ ओ विदाइक दृश्य देखि रहल छल । ओतए ओकर समवयस्कोसभ आएल रहैक मुदा ककरो पर ओकर ध्यान नहि गेलैक । ओ खाली बीच-बीचमे माता-पिताकेँ आग्रह करैत व्याकुलता देखबैत छल,– "आब कखन जाएब बाबूजी ? माय, कखन प्रस्थान करब ?" ओकर बालहृदय कदाचित् कोनो नव अनुभवक निक सम्भावनासँ उत्साहित रहैक, मुदा गामक लोकक लेल ई आग्रह भविष्यमे निश्चिते सिद्धपुरुष हएत तकर स्पष्ट प्रमाण भए गेलैक ।

उत्तर दिशा दिस प्रस्थान करैत ओहि ब्राह्मण परिवारकेँ गौँआसभ बड़ी कालधरि देखैत रहल । बटुक सोमदत्त अपन लाठी टक-टक टेकैत अपन पुस्तक-पोथीसभक पोटरी नेने छोट-छोट डेगसँ झटकारैत आगाँ-आगाँ चलि रहल छल । एक-दू बेर मायबाप त गाम दिस घुमिओ कए देखलखिन्ह, मुदा सोमदत्त एक्को बेर पलटि कए नहि देखलक, एक्के सुरे बढ़िते गेल ।

गामक लोक एहन विलक्षण बालक देखनहिं नहि छल । गद्‌गद् भए तकैत-तकैत ओकरासभक आँखि धर्मभाव आ ममताक नोरसँ नोरा गेलैक । सभ आँखि पोछैत अपन-अपन घर घुरल । चर्चाक विषय एकहिं टा रहैक,– "सोमदत्त प्राचीन ऋषिसभक मर्यादा अपनाओत, एहिमे कोनो सन्देह नहि !"

ओहि राति गामक नेनासभ अपन माय-बापसभसँ बाल्येकालसँ धर्मप्रवीण ऋषि-मुनिसभक कथासभ सुनलक । गामक नेनासभकेँ ओहि दिन सोमदत्तकेँ ल' क' बड्ड उच्चता तथा अभिमान-बोध भेल रहैक ।

चतरा आश्रममे आबि बालक सोमदत्तक अरण्यी जीवनव्रत प्रारम्भ भेलैक । गामोमे सहज जीवनसँ ओकर परिचय कहाँ भेल रहैक ?! अत्यन्त छोटहिंसँ ओकर माय-बाप दृढ़ आदेश, कठोर नियम-बन्धन आ मुक्त प्रशंसासँ ओकरा सहज जीवनसँ विरक्त क' देने रहथिन्ह । गामक बालसखासभक संग कौतुकक्रिड़ामे लागएबला समयमे सेहो सोमदत्त विद्या-अभ्यासमे लागल रहैत छल । तँए, अरण्यी जीवन अनुसार अपनाकेँ व्यवस्थानुकूल करएमे सोमदत्तकेँ कनेको कठिनाइ नहि भेलैक ।

भोरे ब्राह्ममुहूर्तमे, चराचर जगत जखन निन्नमे मग्न रहैत छल, सोमदत्त पिताक संगेँ शैय्या त्याग क' जलपात्र, शुचवस्त्र तथा कुशासन ल' क' कोशी तट पर जाइत छल । ब्राह्ममुहूर्तमे तखन कोशीतट असंसारिक स्तब्धतासँ व्याप्त आ वनजङ्गलक हरितिमा रात्रिक अन्धकारसँ असम्पृक्त होमएसँ बाँकिये रहैत छलैक । आकाशमे उषाक निस्तेज अरूणिमा रहैत छलैक । प्रातःकालीन पक्षीसभक कुहू-कुहू ध्वनि ओहि प्रगाढ़ शान्तिकेँ

सुइयाक नोकसँ भोंकैत जेकाँ लगैत रहैत छलैक आ विश्रामसँ अनभिज्ञ कोशी नदी गर्जैत निरन्तर प्रवाहित होइति रहैति छलि ।

माता-पिताक संगहि सोमदत्त सेहो नित्य कौशिकीतट पहुँचि स्नानादि कार्यसँ निवृत होइत छल । ब्राह्ममुहूर्तमे उठि जाधरि सम्पूर्ण स्नानादि दैनिक कार्य सम्पादित नहि करैत छल ताधरि वाणीक उच्चारण नहि करब, मौनव्रत राखब ओकर नियम रहैक । स्नानोपरान्त ओ गङ्गास्तवन, मस्तक पर त्रिपुण्ड आ देहमे विभूत धारण कए नदीक स्वच्छ बालु पर कुशासन राखि पूर्वाभिमुख भ' पद्मासनमे बैसि शान्त मुद्रामे बड़ी कालधरि गायत्री जाप करैत छल । डाँड़मे कौपीन आ मुञ्जक लंगौटी छोड़ि ओकर शरीर निवस्त्र रहैत छलैक । ओकर नम्हर शिरशिखा भीजले रहैत रहैक । गायत्री जाप पश्चात् दीक्षा-मन्त्रोच्चारण क' ओ भगवतीक उपासना करैत छल आ संगहिं तकर प्रणायामक सभ क्रियासभ सेहो । ताधरि सूर्यक प्रथम किरणसभ पातर सोनक लेप जेकाँ वनक चहुँ दिस पसरि जाइत छलैक । आ तखन ओ कुशासन पर ठाढ़ भ' सूर्यमंत्रक पाठ करैत रवि वन्दना करैत छल ।

आश्रम घुरलाक बाद ओ लोकनि अरणिद्वारा अग्निमन्थन कए यज्ञवेदीमे आह्वनीय स्थापित करैत छलाह । तकर बाद उच्च कण्ठस्वरसँ मंत्रोच्चारण करैत चाउर, घी, जौ आ तिल मिलाओल साकलसँ होम करैत छलाह । सुखल समिधामे प्रकट भेल अग्नि चटचटाइत धूममय जिह्वासँ व्यपाककँ ग्रसित करैत आकाशमे व्याप्त भ' जाइत छलैक । सोहनगर अन्न-घृतमय सुगन्धसँ वातावरण गमकि जाइत रहैक । पिता-पुत्रक सम्मिलित कण्ठसँ उच्चरित वेद ऋचासभसँ वायुमण्डल तरङ्गित होइत रहैत छलैक । भिनसरक अधिकांश भाग अहिना देव आ पितृक उपासनामे बिताए देवप्रसाद स्वरूप पञ्चामृतक आचमनसँ मुँह शुद्धि क' सोमदत्त एक गोट पात्रमे धारोष्ण दूध पिबैत छल । तकर बाद स्वाध्यायक नियम छलैक – कौमुदीक पाठ । पिता शिक्षक आ पुत्र सतीर्थी शिष्य । पिता कहैत छलखिन्ह,– "मित्रे चार्ष्वौ ... ।" पुत्र एकाग्र भ' कण्ठस्य करैत छल,– "मित्रे चार्ष्वौ .... ।"

दुपहरियामे सोमदत्त गाय ल' क' कोशीतट जाइत छल । गाय चराबए कालक वएह क्षण ओकरा लेल नियमसँ बान्हल नहि होइत छलैक । नदीक कछेरमे हरिअरी खोजि-खोजि चरैत गायक पाछाँ-पाछाँ चलब ओकरा निक लगैक । कहिओकाल थकला पर ओहीठामक एक गोट विशाल शमीक गाछक छाहरिमे ओ माथतर हाथ राखि सुति रहैत छल । पैना टेढ़ गड़ल रहैत छलैक आ गाय लगेपासमे चरैति रहैति छलि । .... कोशीक अनवरत् गर्जन कखनो थमक नाम नहि लैत छलैक ।

अरण्यवासक शुरूआतेमे किछुए दिनक बाद एक दिन कोशीतट पर गाय चरबैत काल सोमदत्तक भेंट एकटा बालिकासँ भेलैक । शमीक शीतल छाहरितर एकटा अपरिचित बालककेँ घोकचल निद्रामग्न अवस्थामे देखि बालिका आश्चर्यसँ ठाढ़ि भ' देखए लागलि । ओकर जटामय शिखा, विभूतवेष्टित शरीर, त्रिपुण्ड शोभित ललाट तथा डाँड़मे कौपीन आ लंगौटा पहिरिने देखि बालिका कौतुकेँ विस्मित भ' गेलि छलि । तावते भरि पेट चरल गाय तृप्तिसँ "आँ ... ब्बाँ ऽऽऽऽ!" भकोरलकि । सोमदत्तक निन्न टूटि गेलैक । देखैत अछि जे आगाँमे एक गोट कोमल केराक गुभा सन पीअर शरीरबाली सर्वाङ्ग नग्न बालिका आश्चर्यित भ' ठाढ़ि अछि ।

एक क्षण पश्चात् सोमदत्त प्रश्न कएलक,— "हे कनकवदनी बालिके ! अहाँ के छी ?"

बालिका अत्यन्त निश्च्छलतासँ उत्तर देलकि,— "हम त किराती बेटी छी - सुम्निमा ! तोँ के छेँ ? रे ...पतरसुट्टा !"

सोमदत्त बाजल,—"हम आर्यवंशी ब्राह्मण सूर्यदत्तक पुत्र सोमदत्त छी ।"

ओ इहो बतओलक जे लगेमे अपन आश्रममे माता-पिता संगहिं ओ निवास करैत अछि । सुम्निमा उत्तरभर पहाड़ पर एक गोट हरिअर स्थानकेँ आंगुरसँ देखाए बाजलि,— "ऊ ऽऽ ओतए अछि हमर गाम ! मुदा सोमदत्त ! तोँ अपन नाम बतबैत काल बापक नाम किएक बतओलेँ ?!"

सोमदत्तक उत्तर छल,– "पुत्र पितासँ जीवनदान ग्रहण करैत अछि, तँए एहि उदात्त दानमय सम्बन्धक विस्मृतिक पाप हमरासभसँ कदापि नहि भ' सकैछ । ई कृतज्ञता ज्ञापन थिक बालिके !"

सुम्निमा आओर उत्सुक भ' गेलि । ओ बाजलि,– "देखिऔ ! आओर तोरे बातसँ एकटा बात जे माय जन्मबैति छैकि तँए मायकेर बेसी मान होमक चाही, ने ?! हम किरातीसभ त पहिने मायके चिन्हैत छिऐक आ माय जकरासँ परिचय करबैति अछि से हमरासभक बाप होइत अछि ।"

सोमदत्त कहलकैक,–"हमसभ आर्यक सन्तति छी, सुसंस्कृत छी । तोँ संस्कृतिविहिन बर्बर जातिक किराती छैँ । तँए, हमरासभक विचार तोहरसभक विचारसँ पृथक अछि । माय क्षेत्र छथि, अबोध बाले ! क्षेत्रपति त पिता छथि । तोरा एकर ज्ञान नहि छौक ।"

बाल-बालिकामे एक प्रकारक हठ होइत छैक । ओहीसँ प्रेरित भ' सुम्निमा बाजलि,– "रे पण्डितक बेटा ! माय ने अपन बेटाकेँ ई तोहर बाप छौक से कहि कए चिन्हा दैति छैकि । बाप त मायक चिन्हाओल पुरुष अछि ।"

तखने सोमदत्त आश्रम दिससँ मायक कलोल सुनलक । ऊपर उत्तरसँ सेहो एक गोट नारीकण्ठक अस्पष्ट स्वर सुनएलैक,– "सुम्निमा ! बेटी ! की करैति छैँ ?"

सुम्निमा बाजलि,– "माय शोर कएलकि हमरा । एखन जाइत छी, अच्छे ?"

सोमदत्त सेहो उठल,–"माताक आह्वान हमरो भेल ।"

जाइति-जाइति सुम्निमा कहलकैकि,– "काल्हिखन फेरो अही ठाम भेटब, हएतैक पण्डित ! एखन जाइत छी ।"

आ ओ तत्क्षण आटव्य जङ्गलमे बिला गेलि । सोमदत्त सेहो अपन गायक संग आश्रम दिस विदा भेल ।

पुत्रक व्यग्र प्रश्नक उत्तरमे पिता सूर्यदत्त ओकरा बुझओलखिन्ह,– "मातासँ परिचित होमएबला प्रणाली पाशविक अछि । पशुसभमे सतीत्व आ पातिव्रत्य धर्मक शून्यताक कारणेँ सन्तानक परिचय मातासँ होइत छैक । मुदा, पुत्र सोमदत्त ! एहन विकारयुक्त प्रश्न अहाँक मस्तिष्कमे उत्पन्न कोना भेल ?"

सोमदत्त जङ्गलमे किरात बालिकासँ भेल विवादक वर्णन पिताकेँ अवगत करओलक । पिता कहलखिन्ह,–"पुत्र ई अनार्यक देश थिक । एतए अहाँकेँ अत्यन्त सतर्कता पूर्वक रहबाक चाही । अनार्यसभ पशु धर्मावलम्वी अछि, हमसभ देवधर्मी छी ।"

दोसर दिन जखन गाय चराबए सोमदत्त कोशीतट पर आएल त फेर सुम्निमासँ भेंट भेलैक । सुम्निमा चञ्चलि, चटपटी आ निश्छलि कन्या छलि । सोमदत्त अत्यन्त शान्त प्रकृतिक गम्भीर बालक । भेटिते सुम्निमा बाजलि,– "अयँ रे, सोमदत्त ! काल्हि तोँ अपन मायकेँ 'माता' किएक कहैत रही ?"

सोमदत्त शान्त भ' उत्तर देलक,– "ई देवभाषा थिकैक ।"

"हँ, त तोँ आदमी भ' क' आदमीक भाषामे किएक ने बजैत छेँ? आदमी भ' क' देवताक चलन नहि करबाक चाही । आदमीकेँ आदमी रहक चाही, सोमदत्त !"

"सुम्निमा ! अबोधबालिके ! हमसभ ब्राह्मण छी, तपस्याक बलसँ देवत्व प्राप्त कए सकैत छी । हमरासभक यज्ञ, धर्म-कर्म, नियम-साधना, ... ईसभ मानवतासँ मुक्तिक प्रयास थिक, बुझलही ?"

"हमरा तोहर कोनो बात बुझएमे नहि अबैत अछि, सोमदत्त ! मुदा हमरा बुझाइत अछि, आदमीकेँ देवता बनक कोशिश करब निक नहि । आदमीक ई धर्म नहि छैक । आदमीकेँ अपने बानि-चालिमे रहबाक चाही । देवता बनि कए जखने केओ रहए चाहत, ओ आदमी नहि रहत । हम तोरा बढ़ियाँसँ समझाबए नहि सकैति छी – बुधि नहि अछि ने, तँए । मुदा, देख सोमदत्त ! सोझे 'माय' नहि कहि 'माता' कहि कए 'माय' सनक

सिनेही आदमीकेँ तोँ कतेक दूर पहुँचा देलेँ । ओना त तोँ 'माय'क बदलामे खाली 'माता' कहलहीक मुदा 'माता' कहि कए मायक गरम सिनेहबला कोरकेँ तोँ धकेलि नहि देलही?"

आ फेर सुम्निमा दिकिआइति बाजलि,– दूर जो ! देखही ने, हम बुझाबही नहि सकैति छी ।"

मुदा सोमदत्त सुम्निमाक तात्पर्य निक जेकाँ बुझि गेल छल । ओ बाजल,– "माता देवीतुल्य छथि । आदर, सम्मान आ कृतज्ञतासँ हमरासभ माताकेँ उच्च स्थानमे स्थापित करैत छी । सम्मान आ कृतज्ञता ज्ञापनक ओहि महान भावकेँ 'माता' शब्द किछु अंशमे व्यक्त कए सकैत अछि । 'माय' त दैनिक जीवनक कौटुम्बिकताक सूचक शब्दधरि मात्रहिँ अछि ।" बालिका फेरो हठ कर' लागलि,– "माय सेहो घर-परिवार भीतरेक छैक ने ! कुटुम्बसँ फाजिल आओर की अछि ओ? मनमे ई बातसभ सोचि कए ओहन गरम दुलारू सम्बन्धकेँ बेकारे खटाओंस खट्टा नहि बना, रे पण्डित !"

"हमसभ माताकेँ दैहिक सम्बन्धसँ अलग राखि उच्च मर्यादासँ सम्पन्नित करैत छी । इएह संस्कृति थिकैक ।"– सोमदत्त बाजल ।

सुम्निमा संतुष्ट नहि भेलि । ओ बाजलि,– तोँसभ सभ किछुकेँ लत्ता ओढ़ा दैत छैँ, अनेरे नुका दैत छैँ ! जप, तप, यज्ञ, व्रत क' क' तोँसभ सद्दो मनुखकेँ मुँहझप्पा पहिरा दैत छैँ । बहुते लत्ता-कपड़ासँ अनेरे देहकेँ झाँपि दैत छैँ । कोन-कोन बात आ नहि बुझएबला भाखाक प्रयोग कए अत्यन्त सिनेह करएबाली मायकेँ दूर-दूर कए … असम्बन्धित जेकाँ … बना दैत छैँ । तोहर माय सदिखन बहुते लत्ता-कपड़ासँ अपन अङ्ग-प्रत्यङ्ग झँपने रहैत छौक । … तँए तोरासभकेँ ओकरा मौगीसँ देवी-देवता बनबएमे सुगम होइत छौक, … नहि त लत्ता तरमे सभ मौगीमे जे जे होइत छैक सहए त तोरो मायमे सेहो छौक ने । … हमसभ ओतेक कपड़ा नहि पहिरैत छी, … अपन मायकेँ 'माता' वा 'देवी' जेकाँ तैदुआरे नहि देखैति छी । नाङ्गटि मायकेँ के 'देवी' कहतैक ?"

अत्यन्त आहत आ किंचित कठोर शब्दमे सामेदत्त बाजल,– "असंस्कृता बालिके ! देवीतुल्य माताक बारेमे अनर्गल प्रलाप किएक करैत छैं ?" कान बन्द करैत सोमदत्त पिता कए आगाँ कहलकैक,– "चूप ! आब ई पापमय प्रलापकेँ बन्द कर ।"

सोमदत्तकेँ पिताएल देखि सुम्निमा उदास भ' गेलि,– "तोँ तमसा गेलैं ! नहि तमसो सोमदत्त !"

"माताक सम्बन्धमे हम एहन अपशब्दसभ नहि सुनि सकैत छी ।"– सोमदत्त आवेशमे छल ।

सोमदत्तक कहब सुनि कए सुम्निमा आओर उदास भ' गेलि । ओ बाजलि,– "गल्ती भ' गेल, सोमदत्त ! हमरा माफ कर । अपशब्द शायद खराब बात छैक मुदा, हम कोनो खराब बात तोरा कहाँ कहलिऔक ? हमर कहब त खाली एतबे अछि जे मनमे जनमएबला किदन-कहाँदनसभ जकरा तोँसभ शायद 'भावना' कहैत छैं, तकरा हमरासभक एहि संसारक माटिसँ नहि मिलएबला कोनो दोसरे चीज नहि बना ली । भावना पाँखिबला चिड़ै जेकाँ होइत छैक जे बिना छोर-पोरक एहि आकाशमे फुसिएक पाँखि लगा कए मन मोताबिक उड़ए सकैत अछि । जतेक मोन होए उप्पर जा सकैत अछि । हमरासभकेँ धरतीसँ नाता राखक चाही । आदमी छी त आदमीक स्वभावमे रमि कए रहक चाही । ... हम त एतबे कहैत छिऔक सोमदत्त ! तोरा जेकाँ पढ़ल-गुनल त नहि छी । तोँ कतेक जनैत छैं ! कतेक बुधियार छैं !!"

सोमदत्तक मन स्थिर भ' गेलैक । मुदा, ओहि दिन ओकरासभक बीच आओर कोनो खास गप्प-सप्प नहि भलैक । सुम्निमा उदास मोन लए घर घुरलि । आ रातिभरिमे ओ निश्चय क' लेलकि जे काल्हि ओ सोमदत्तकेँ खुशी करक कोशिश करति ।

ओहि दिन सोमदत्त जखन अपन पिताकेँ एहि बहसक वर्णन सुनओलक त सूर्यदत्त अत्यन्त प्रसन्न भेलाह आ "साधु साधु" कहलखिन्ह ।

परात भनैं सोमदत्त आ सुम्निमाक भैंट नहि भेलैक । ओहि दिन सोमदत्त सभदिन जेकाँ गाय ल' क' नदीतट दिस नहि जा सकल । बड़ी कालधरि सुम्निमा शमीक गाछ तर ओहि ब्राह्मण बालकक प्रतीक्षा करैति बैसलि रहलि । घरसँ निच्चा अबैत काल ओ आँजुरमे पहाड़ी फूल तोड़ि कए अनने छलि । साँझमे निराश भ' ओ सभ फूलकेँ शमीक ओहि गाछतर जतए सोमदत्त बैसैत छल छिटि कए घर घुरि गेलि ।

सोमदत्तके दूपहरियामे गाय चरएबाक नियममे बाधा पड़ि गेल रहैक एक गोट राजकुमारक आगमनक कारणैं, जे मृगयाक हेतु ससैन्य अटवीमे आएल छलाह । जखन हुनका पता लगलन्हि जे एहि ठाम एक गोट पुण्यात्मा तपस्वी ब्राह्मणक कुटी सेहो अछि, ओ अपन सभ सैन्य, अङ्गरक्षक तथा रथकेँ तपोभूमिक शान्ति भङ्ग नहि होइक से सोचि कनेक दूरस्थे राखि दर्शनार्थ आश्रममे पहुँचलाह । राजकुमार कहलखिन्ह,– "महाभाग द्विजश्रेष्ठ ! हम राजकुमार मृगया हेतु एतए आएल छी, हमर सादर अभिनन्दन स्वीकार कएलजाय तथा हमरासँ राजपुत्रानुकूल सेवा ग्रहण करबाक कृपा कएलजाय ।"

नतशिर ठाढ़ राजकुमारकेँ सूर्यदत्त आ हुनकर पत्नी हाथ उठा कए आशीष देलखिन्ह ।

राजकुमार फेर पुछलखिन्ह,– "हे पुण्यात्मा ! अपनेसभक यज्ञादि निर्बिघ्नतासँ भ' रहल अछि ? एहि ठाम अनार्य जातिसँ कोनो बिघ्न-बाधा त नहि अछि ?"

ब्राह्मण लगपासमे अनार्यसभद्वारा होइत गोवध आ हिंसाक चर्चा कएलन्हि त राजकुमार अत्यन्त शौर्ययुक्त वाणीमे अपन सेनाकेँ सम्बोधित करैत आदेश देलखिन्ह,– "लगपासक हरेक गाममे जा क' किरात आ भिल्ल जातिक प्रमुख व्यक्तिसभकेँ राजाज्ञा सुनबैत एहि ठाम बजा कए लाएलजाय !"

तत्पश्चात् राजकुमार ब्राह्मण दम्पत्तिकेँ हाथ जोड़ि विनम्रतासँ सम्बोधन करैत कहलखिन्ह,– "ब्राह्मणदेव ! ब्राह्मणक सेवा करब क्षत्रीक धर्म अछि, तकर प्रतिपालन अवश्य हएत ।"

किछुए समय पश्चात् एक-एक कए अरण्य निवासी भिल्ल आ किरात जातिक प्रमुख व्यक्तिसभ आश्रमक प्राङ्गनमे एकत्रित होमए लागल । ओसभ प्रायः सर्वाङ्ग नग्न छल । कारी भिल्लसभ आ गोर किरातीसभ अपन-अपन जाति-समूह बना-बना कए आश्रमक दुहू पार्श्वमे बैसैत गेल । भिल्लसभक माथक बड़का-बड़का केश मयुरपङ्खयुक्त मुकुटसँ शोभित छलैक, छाती आ डाँड़मे कौड़ीक मालासभ छलैक । किरातीसभ भिल्लसभ जेकाँ ओतेक श्रृङ्गारक परिधान नहि लगोने छल । ओकरसभक स्त्रीसभ सेहो निर्वस्त्रे छलैक । ओसभ माथमे लालीगुराँस फूल खोस्ने छलि । स्तनपेयी सन्तानबालीसभ अपन सन्तानकेँ छातीमे सटने आएलि छलि । धीया-पूतासभ सेहो बूढ़पुरानक एहि हुलिमालिमे शामिल छल आ अपन-अपन अभिभावकसभक संग सटल विस्मित भ' एम्हर-ओम्हर देखि रहल छल । मुदा सुम्निमा ओतए नहि छलि । ओ भोरेसँ कोशीतट पर सोमदत्तक प्रतीक्षा क' रहलि छलि । आश्रमक विराटसभाक बारेमे ओकरा पते नहि छलैक । ओ नदीक कछेरमे सोमदत्त आओत सोचि कए असगरि प्रतीक्षा क' रहलि छलि ।

प्रधानकुटीक द्वारसम्मुख ठाढ़ भ' राजपुत्र किराती-भिल्लमण्डलीकेँ सम्बोधन कएलन्हि । गोबर आ कोशीक पाँकयुक्त माटिसँ नीपल स्निग्ध प्राङ्गणक मध्यमे निर्मित स्थायी यज्ञवेदी लग कुशासन पर सूर्यदत्तक परिवार बैसल छल । प्राङ्गणसँ सटले तपोभूमिक बृक्षसभक छाहरिमे किरात आ भिल्लसभ एकत्रित भ' बैसल छल । मध्य आकाश पार कए सूर्य पश्चिम दिस झुकए लागल रहैक । राजकुमार अपन सम्बोधनमे कहलखिन्ह,– "उपस्थित भिल्ल आ किरातगण ! हमरासभक पूर्खासभद्वारा हिमालयधरिके भूभाग विजित भ' एखन हमरासभक संरक्षणमे अछि । युद्धमे परास्त भेलाक बाद तोँसभ हमरासभक विजयकेँ स्वीकार कएलह । एहि ठाम आश्रम स्थापित कए रहनिहार ई ब्राह्मण परिवार हमरासभक पूज्य छथि । अतः एहि परिवारकेँ हरेक साधनसँ संरक्षण आ सुविधा प्रदान करब हमरासभक परम उद्देश्य अछि ।"

ओहि ठाम उपस्थित किरात-भिल्ल मण्डलीमे किछु हलचल बुझएलैक । ओसभ अपनामे कनफुस्की करए लागल । बादमे, एक गोटे उठि कए राजकुमारकेँ सम्बोधन करैत बाजल,– "जहियासँ एहि ठाम ई ब्राह्मण परिवार अएलाह अछि, हमरासभ सम्भव सभ सहयोग क' रहल छिअन्हि । जङ्गल काटि-खोँटि क' जमीन समथर बनाए आश्रम ठाढ़ करएमे आ तकर बाद आश्रममे आवश्यक सर-समान जोड़एमे सेहो हमसभ पूरा मदति कएलिअन्हि । एहि आश्रमक कुटीसभ हमरेसभक आदमीसभ ठाढ़ कएने अछि । गामक सभसँ लग्घरि बच्छातरेक नव बिआएलि कारी गाय हमरासभ हिनकासभकेँ चढ़ोने छी । समय-समय पर हिनका आवश्यकता अनुसारक सामान उपलब्ध होइत रहन्हि सेहो व्यवस्था हमरासभ कएने छी, आ कि नहि सूर्यदत्त ब्राह्मणजी ?!"

सूर्यदत्त किछु उत्तर दितथिन्ह ताहिसँ पहिनहिँ राजकुमार ओहि किरात वक्ताकेँ किञ्चित आधिकारिक शब्दमे पुछलथिन्ह,– "तोँ के छेँ ?"

ओ ऊपर पहाड़केँ देखबैत बाजल,– "हम ओहि किरात गामक सभिला बिजुवा छी । एहि ठाम उपस्थित किरातसभ हमर बातुङ्गा भाइसभ अछि ।"

राजपुत्र संगहि ठाढ़ एक गोट अङ्गरक्षक सैनिक अधिकारी बाजल,– "स्वामीक जय हो ! बिजुवाक अर्थ छैक धामी, अपनासभक पुरहित जेकाँ ! ई जे बजैत अछि से किरातसभक प्रमुख अछि !!"

राजपुत्र फेर शुरू कएलन्हि,– "बिजुवा ! मुदा तोँसभ गोवध आ हिंसा कए एहि तपोभूमिक पवित्रता बरोबरि नष्ट करैत रहैत छेँ । एहिसँ बाह्मण परिवारक तपस्यामे बिघ्न होइत छन्हि । आइसँ सभकेँ अही राजाज्ञाद्वारा गोवधक मनाही कएल जाइत अछि । एहि तपोभूमिक सान्निध्यमे कोनो प्रकारक हिंसा राजाज्ञासँ वर्जित रहत !"

भिल्ल आ किरात समूहमे फेरो घोंघाँउज होमए लगलैक । किछु गोटे आक्रोशित बुझाएल । आपसी विचार-विमर्शक पश्चात् विजुवा फेरो उठल,– "राजपुत्र ! ओना त हमसभ पराजित भेल छी । भिल्लसभ सेहो

पराजित भ' अपन प्रान्तक देशकेँ छोड़ि हिमालयक खोंचखाँच होइत एखन हमरासभक क्षेत्रलग जङ्गल-पहाड़मे बसोबास करए लागल अछि । ... मुदा, एखनुक ई राजाज्ञा पराजितहेतु कठोर अछि । एकरा स्वीकार कएला पर हमरासभक रिति-थितिसभ बिगड़ि जाएत, राजपुत्र !"

भिल्ल समूहसँ सेहो एक गोटे उठल आ बाजल,— "ओहि ऊपरका छोटका पहाड़क गढ़ी पर हमरासभक दुनू जातिक पूजा होइत अछि । ओहि ठाम हमसभ हमरासभक पूजाक नियम अनुसार सुग्गर चढ़बैत छी । यदि नहि चढ़ाएब त अन्हेर भ' जाएत, राजपुत्र !"

मुदा, राजकुमार किछु नहि सुनलन्हि । ओ अपन राजाज्ञाकेँ अटल घोषित क' देलन्हि । दृढ़ताक भावनासँ हुनक क्षत्रिय ओज दिप्त रहल । बरू सूर्यदत्त किराती-भिल्लसभकेँ बुझाबक कोशिश कएलन्हि,— "भेलै भेलै, तौँसभ ओहि ठाम अपन पूजा करह । ओ स्थान तोरेसभक रहतह । मुदा सुग्गरक हिंसा नहि करह । आइसँ ओहि स्थानकेँ बराहस्थान कहल जाएत । पुरानमे वर्णित बराह अवतारक द्योतक हएत ओ स्थान !"

राजपुत्र सभाकेँ बिसर्जित कएलन्हि । एकत्रित नर-नारी भविष्यक प्रति आशङ्कित मने घुरए लागल । वनमार्गमे उत्तेजित विवादक स्वर सुनाइ पड़ैत छल । साँझ भ' गेल रहैक तँए सभ पएर झटकारैत बढ़ि रहल छल । एकटा भिल्ल बिजुवाकेँ कहलकैक,— "बिजुवा काका ! हम अहाँ ओतए आएब - बतिआए ।"

साँझखन उदास सुम्निमा जखन घर घुरलि त चारूकात सुन्न रहैक । ओ व्यग्र भ' जोर-जोरसँ मायकेँ कलोल करए लागलि । ओकरा अपन रोदन आ कम्पित चित्कारक प्रतिध्वनिए टा सुनएलैक । गाममे चारूकात केओ नहि रहैक । "कत्तहु केओ नहि छैक । एना किएक ? एना त कहिओ नहि भेल छल । ...माय गे ऽऽऽऽ ! बाबु !"— ओ रहि-रहि क' चिचिआए लागलि । ओकरा बुझएलैक किनसाइत ओ अचानक दुनियाँमे असगरि त नहि भ' गेलि । ओकरा कोनादन आ डर जेकाँ सेहो लागए लगलैक । सोमदत्त मोन पड़ि गेलैक । आइ ओकरोसँ भेँट नहि भेल

छलैक । ओहो अपन आश्रममे असगर त नहि भ' गेल ?! सुम्निमाकेँ ओकरो चिन्ता घेरि लेलकैक । ओ फेर चिचिआएलि,– ".माय गे ऽऽऽऽ ! बाबू !" ओकर महीन स्वर गहींर वनपर्वत प्रान्तमे हेरा गेलैक । तखन ओकर करूण-कण्ठ फेर शोर कएलकैक,– "सोमदत्त ....!"

कतहुँसँ उत्तरक कोनो स्वर नहि सुनएलैक त ओ विकल भ' देहरि पर बैसि कए कानए लागलि । बड़ी कालक बाद गाम दिस अबैत लोकसभक घोंघाँउज सुनएलैक । ओहिमे बच्चोसभक स्वर मिलल रहैक । सुम्निमा अपन नोरसँ भीजल माथ उठाए अन्हारमे चारूभर ताकि मनुखक आकार खोजए लागल । तखने ओकर माय आ बाबू आङ्नमे प्रवेश कएलकैक । ओ आतुर आ व्यग्र भ' ओकरासभक देहमे सटि गेलि आ बाजलि,– "किए हमरा असगरे छोड़ि देलह ? सोमदत्तकेँ की भेलैक, बाबू ? अइँ गे माय ....?!"

माय बाजलि,– "की भेल हमरा बेटीकेँ आइ ?! कथिला कनैत छेँ ? आइ-काल्हि तोरा की भ' गेल छौक ? के छैक सोमदत्त ?"

सुम्निमा भोकासी पाड़ि कनैति बाजलि,– "ओहि आश्रमबला पण्डितक बेटा सोमदत्त !"

उत्तर ओकर बाप देलकैक,– "सुम्निमा ! तोहर सोमदत्तसभ आनन्दसँ छौक, बरू हमरासभकेँ ओकरासभक कारणेँ गाममे टिकब मुश्किल भ' गेल अछि ।"

सुम्निमा दुलारे प्रफुल्लित होइत अपन बापक कोरामे सटैति बाजलि,– "बेचारा सोमदत्त ! की कएलकैक, बाबू ?"

सुम्निमाक बाप एकर उत्तर नहि देलकैक । ओ आङ्नमे चकुआइत बजलैक,– "कहाँ गेलै ? कोम्हर चलि गेल ओ भिल्ल युवक ?!"

तखने अन्हारमेसँ एकटा मूर्ति प्रकट भेलैक । भिल्ल युवक लगमे आएल आ कहलकैक, – "बिजुवा काका, हम एतहि छलहुँ । जाधरि अहाँसभ बजबितहुँ नहि हम अहाँक घरमे कोना प्रवेश क' लितहुँ ?"

बिजुवा बाजल,— "देखही ने, हमर बेटी सुम्निमाक ताल ! एकरे कारणेँ हम तोरा बजाबए बिसरि गेलहुँ, भिल्ल युवक !"

तकरबाद ओ दुनू गोटे ओतहिं असोरा पर बैसि गेल । सर-सलाह होमए लगलैक । सुम्निमाक माय भानस घरमे जा क' आगि जोड़ए लागलि — भोजनक तैयारी हेतु । सुम्निमा अपन बापक पीठ पर झुलैति ओकरसभक गप्प-सप्प सुनि रहलि छलि । भिल्लक कहब रहैक जे अपन रितिथितिकेँ कोनो हालतमे नहि छोड़बाक चाही तँए आश्रमकेँ तोड़ि-फाड़ि कए ब्राह्मण परिवारकेँ रेबाारि देबाक चाही । सुम्निमा स्थिरसँ नकिआ कए पुछलकैकि,— "तखन सोमदत्तकेँ की होएतैक ? ...बाबू !"

भिल्ल अपन योजनाक वर्णनक प्रवाहमे छल,— "ओकरासभकेँ जतए जाएक मोन हएतैक, अपन चलि जाएत ! यदि क्षत्रीयसभ फेरसँ ओकरासभकेँ ल' क' आओत त युद्धक घोषणा करए पड़तैक — लड़ाई मचा देबए पड़तैक !"

बिजुवा शान्तिक पक्षमे छल । ओकर कहब छलैक,— "युद्धमे हमरासभ बहुतो बेर परास्त भ' गेल छी । अहीक कारणसँ हमरासभक जाति दिन-दिन समाप्त आ पातर होइत चलि जा रहल अछि । हमरासभकेँ पछिलका बड़का लड़ाइकेँ सेहो नहि बिसरक चाही । ओहि युद्धमे तोहर भिल्ल आ हमर किराती दुनूक जोड़ल शक्ति पर सेहो आर्यसभ अपन शस्त्रक बलेँ भारी विजय प्राप्त क' लेलक । हमरासभक दुनू जातिक स्त्री-पुरुष प्रायः समाप्त भ' गेल छल । एखन गाछ-बिरिछसभ जेना कनोजर छोड़ैत अछि तेना बुझह जे हमरासभ हरिआ रहल छी । तँए, युद्ध माने सर्वनाश अछि ।"

सुम्निमा ओकरासभक बात निकसँ बुझि नहि रहलि छलि, तैयो एतेकधरि ओ बुझि गेलि छलि जे बाबू मरए-मारएक पक्षमे नहि अछि । ओ अपनो मरए नहि चाहैत छलि । तँए, ओकरा अपन बापक बात निक लगैत छलैक ।

भिल्ल क्रोध आ आवेशमे छल । ओ झोंकिया कए बाजल,— "मरि जाएब त की हएतैक, धर्म ने हएत । पुण्य त हएत ने !"

बिजुवा ओकरा बुझाबए लगलैक,– “भिल्ल युवक ! तोँ त आर्यसभ जेकाँ बात करए लगलेँ - धर्म आ पुण्यक गप्प-सप्प ! जीबएहेतु युद्ध करक बात ठीक भ' सकैत अछि मुदा धर्म आ पुण्यक हेतु युद्ध कोनो हिसाबसँ ठीक नहि मानल जा सकैत अछि । ओसभ धर्मक नाम पर बड़का महाभारत कएलक । मुदा भेटलैक की ? लाशे-लाशक पहाड़ ! नहि, ... हमरा तोहर युद्धक सुझाव पसिन नहि अछि । ओकरासभक संग मेलेमिलापसँ रहएमे सभक भलाइ छैक । ओकरासभक साँधिमे गाय काटए नहि देत त कि गाय काटए नहि देलक कहि कए अपने कटा जाएब । ... नहि, ई निक नहि हएतैक । ओकरासभक साँधिसँ कनेक ऊपर हमसभ अपन गाय काटक ठौर बना लेब । ओतए त रोक नहि लगबए सकत । आ फेर जओं हमसभ अपन बसोबास उठाबए नहि चाहैत छी त गोवध बन्दे करब ठीक ।”

भिल्ल तमसाइत बाजल,– “ओहि थान पर सुग्गरो जे चढ़ओनाइ बन्द क' देलक से ?”

बिजुवा कहलकैक,– “त की भेलैक ? हम बिजुवा छी, दोसर स्थान गुनि देबैक ।”

तैओ भिल्ल मानए लेल तैयार नहि भेलैक । ओ जोर देलकैक,– “अहाँ अपन बातुङ्ग भाइसभकेँ बजाउ ।”

राति भरि बिजुवाक घरमे किरातीसभक सभा बैसल रहलैक । ओसभ एकटा गाय काटि क' भोज कएलक आ खूब दारू पीलक । सुम्निमा आ ओकर माय अतिथिसभक सेवामे व्यस्त रहलि । सभा भोर तक चलिते रहलैक । अन्तमे उपस्थितसभ बिजुवाकेँ समर्थन कएलकैक,– “बिजुवा ककाक बात ठीक छैक । हमसभ ओ जे कहताह सएह करब ।” भिल्ल युवक निच्चा दक्षिणक समथर भूमिक जङ्गल अपन गाम दिस बिदा भ' भेल ।

राति भरि जागलि सुम्निमाकेँ भोरमे असोरे पर आँखि लागि गेलैक । ओ रतुका निर्णयसँ प्रसन्न छलि । दिनमे माय जखन भात खाए लेल

उठओलकैकि त ओ फुरफरा क' उठलि । उठैतकाल सभसँ पहिने ओकरा सोमेदत्त मोन पड़लैक । मायक देल रतुका भोजबला आगिमे पकाओल माउसक एकटा बुट्टी आ भात हबड़हबड़ कोंचि मुँह पोछि ओ निच्चा कोशीतट दिस दौड़ैति पड़ाएलि । अपन बापद्वारा रतुका सभामे देल निर्णय सोमदत्तकैं सुनबए लेल ओ व्यग्र छलि ।

गाय नेने सोमदत्त ओतए पहिनहिं पहुँच गेल छल । ओहो सुम्निमाकैं आश्रमक कल्हुका घटना सुनबए चाहैत छल । हकमैति सुम्निमा अपन नाक पोछैति बाजलि,– "सोमदत्त !" कोशी दिस झटकारैति अबैति काल सुम्निमा अपन केशमे लालीगुराँस फूलक गुच्छा खोंसि नेने छलि ।

एकदम शान्त आ गम्भीर स्वरमे सोमदत्त कहलकैक,– "सुम्निमा ! काल्हि आश्रममे एक गोट प्रतापी राजकुमार आएल छलाह । ..."

सुम्निमा सेहो हड़बड़ा कए कहए लागलि,– "भिल्लक बात हमसभ नहि मानलिऐक, सोमदत्त ! आब लड़ाइ नहि हएत... ।"

सोमदत्त अपन बात कहैत गेल,– "आब एहि तपोभूमिक क्षेत्रकैं केओ अपवित्र नहि करए सकत ! क्षत्रीय राजकुमार राजाज्ञा देलन्हि ।"

सुम्निमा सेहो अपन बात बजिते जा रहलि छलि,– "गाय काटक बातमे जिद्द पकड़ि कए अपनाकैं मेटोनाइ नीक नहि । हमर बाबु कहलकैक । बुझलही, सोमदत्त !"

सोमदत्त सुम्निमा दिस देखबो नहि कएलक आ बाजल,– "क्षात्र शस्त्रास्त्र आब एहि तपोभूमिकैं अपन संरक्षणमे ल' लेलक अछि । आब एहि अरण्यभूमिमे धर्मक निर्वाध गति प्रवाहित हएत .... ।"

सुम्निमा बाजलि,– "बुझलही सोमदत्त ! बाबू कहलकैक जे धर्मकैं मनुखसँ उपर नहि राखक चाही । धर्मक नाम पर मनुखक नाश निक नहि .... !"

सोमदत्त अपन अचल दृष्टिकैं आओर स्थिर करैत बाजल,– "गोमाता आब सुरक्षित भ' गेलीह । पशुपक्षी निशङ्क भ' गेल .... ।"

सुम्निमाकेँ अपन सभ बात सुनएबाक हड़बड़ी रहैक । ओ बाजलि,– "तकरबाद बाबू कहलकैक, मनुख नहि मरए तैलेल पशु मारनाइ बन्द करए पड़त । नहि त बुझले सोमदत्त ! भिल्ल छौंड़ा त धर्मक नाम पर हमरा किरातसभकेँ लड़ाइ लेल उकसा-चढ़ा रहल छल .... ।"

सोमदत्त अपन बात समाप्त करैत बाजल,– "सुम्निमा ! आजुक दिन शुभ दिन अछि । हम अत्यन्त प्रसन्न छी । आकाशमे देवी-देवता सेहो परम सन्तोषमे होएताह । आइ अधर्म पर धर्मक विजय भेल अछि, आर्यध्वजा एहि तपोभूमिमे गड़ा गेल अछि ।"

सुम्निमा बाजलि,– "हमहूँ बड्ड खुशी छी । तँए, ई खुशीक खबर तोरा सुनबए दौड़िते अएलहुँ अछि । आइ बड्ड निक दिन अछि । तोरा किछु नहि होएतौक, हमरोसभकेँ ककरो किछु नहि हएत ।"

माथ लालीगुराँसक श्रृंगारसँ झलमलाइत सुन्नरि सुम्निमाक आँखि आनन्दसँ चमकि रहल छलैक । ओ बाजलि,– "हमर बाबू बिजुवा छैक । ओ काल्हि दोसर ठौर देखा देतैक - सुग्गर चढ़बए लेल ।"

सोमदत्त शान्त स्वरमे बाजल,– "सुग्गर चढ़एलासँ कतहु देवता प्रसन्न होइत छथि, सुम्निमा !"

सुम्निमा आश्चर्यित होइत बाजलि,– "त कथीसँ होइत छैक ?"

"यज्ञ-दानादिसँ, सुम्निमा !"

सुम्निमा संतुष्ट नहि भेलि,– "ओहोसभ त हमरेसभ जेकाँ अछि ने ! देवतोसभ जखन पिताइत अछि त सुग्गर चढ़ाओल जाइत छैक आ सुग्गर पाबि कए देवता खुशी भ' जाइत अछि । तहीसँ ने ... सुग्गर द' क' ओकरासभकेँ रिझाओल जाइत छैक । एहिसँ हमरासभकेँ कोनो दुःख नहि होइत अछि । ओकरोसभकेँ अपन भाग भेटला पर संतोष करक चाही, से करैत अछि । ओकरासभक लेल एहिसँ बेसी किछुओ करक जरूरी नहि छैक आ एहिसँ बेसी ओकरोसभकेँ, कहबही त ... किछु खोजहुक नहि चाही । बस, एतबे अछि ओकरसभक भाग । आ कि नहि ?"

सोमदत्त वेद, उपनिषत् आ धर्मग्रन्थसभक नीक अध्ययन कएने छल । सुम्निमाक अज्ञानता देखि ओकरा बुझबए लगलैक,– "देवताक सम्बन्धमे तोँसभ गहन अन्धकारमे छैँ । देवताक सत्य रूप त हमरासभक हृदयमे निवास करैत अछि । हृदयक देवता आ ब्रह्माण्डमे व्याप्त देवता एक्के छथि – आत्मा आ परमात्मा । यज्ञ-दानादिसँ स्वर्गलोक, प्रेतलोक आदि अनेकानेक लोकक देवी-देवताकेँ तृप्त करैत अपन आत्माक परब्रह्म रूप परमेश्वरक सेहो आराधना भ' जाइत अछि ।"

अपन उठल दहिना हाथ सुम्निमा दिस करैत सोमदत्त प्रवचनक मुद्रामे कहलकैक,– "बुझलेँ, ... सुम्निमा ?"

सुम्निमा सोमदत्तक बात नहि बुझि सकलि । असमंजसमे पड़ि गेलि । कनेक दबले स्वरेँ कहलकैकि,– "हमर बाबू कहैत छैक जे मनुखमे मनुवा बैसल रहैत छैक । देवतासभ अपन-अपन ठौरमे रहैत अछि । केओ पहाड़क चोटी पर, केओ नदीमे, केओ भीड़ पर अड़ल पाथरमे, केओ जङ्गलमे त केओ खेत-खरिहानमे । ... हमरासभमे मनुवा रहैत अछि ! बाबू कहैत छैक, ई दुनू एक्के नहि अछि । एकरासभकेँ एक्केमे मिलाबहुक नहि चाही ! ई दुनू अलगे जातिक अछि, अपने-अपने हिसाबसँ रहैत अछि आ अपने ढंगसँ अपन-अपन काज करैत अछि ।"

सोमदत्तकेँ बुझएलैक जे किरातबाला एकदम अपठित, ज्ञानशून्य आ घोर अन्धकारमे डुबलि अछि । ओ दयापूर्ण भावमे कहलकैक,– "अबोधबालिके ! तोँसभ बड़का भ्रमजालमे फँसल छैँ । संसारिकताक मलाह तोरासभकेँ शरीरकेँ जालमे माछ जेकाँ फँसा कए रखने छौक । अहिंसासँ बड़का कोनो धर्म नहि छैक –'अहिंसा परमो धर्म' आ दोसर जे धर्म सर्वोपरि अछि, मनुष्यसँ उपर !"

ओकरासभमे एहने गप्प-सप्प होइत रहैत छलैक । सुम्निमा स्नेहक स्पष्ट भावसँ ओहि ठाम जाइति छलि आ सोमदत्तकेँ कोशीतट पर बैसि ओकरा संगे गप्प-सप्प करएमे आ ओकरा सम्झाबएमे मन लगैत छलैक । सुम्निमा अपन अज्ञानता सोझे स्वीकार क' लैति छलि आ कहैति छलि,–

"तौं बड्ड बुधियार छैं, बड्ड पढ़ने छैं। तौं कतेक जनैत छैं !" सोमदत्त खुशी भ' जाइत छल ।

कहिओकाल सुम्निमो जीद्द पकड़ि कए बहस करए लगैति छलि । एक दिन दुपहरियाक गर्मीसँ कोशीतटक बालु गरमा कए धीपल रहैक । चिड़ै-चुनमुन जङ्गल-झारमे फुदकि-फुदकि खेलि रहल छलैक । घनगर शमी गाछक फुनगी पर रङ्गबिरङ्गक चिड़ैसभ एहि कातसँ ओहिकात क' रहल छलैक । सोमदत्त आ सुम्निमा आने दिन जेकाँ गाछक छाहरिमे बैसल बतिआ रहल छल । सुम्निमा कहैति छलि,– "गर्मीमे बड्ड आसकति लगैत छैक । मनमे कि-कि उठैत रहैत छैक जेना बालुमेसँ निकलैत भाफ होए । तोरा एना नहि होइत छौक, सोमदत्त ?"

सोमदत्त कोनो उत्तर नहि देलक । सुम्निमा फेर बाजलि,– "की सोचैत छैं तौं सोमदत्त ?"

सोमदत्त तैयो कोनो उत्तर नहि देलक । सुम्निमा जोड़सँ एक बेर अपन अङ्ग-प्रत्यङ्ग तानि हाफी लेलकि । ओकरामे कुमारीत्वक लक्षण स्पष्ट होइत आबि रहल छलैक । एक पल सोमदत्तकेँ भेलैक जे ओ सुम्निमाकेँ ठीकसँ बैसबाक हेतु कहैक मुदा ओ किछु बाजल नहि । तखने अपन जोड़ासँ बिछुड़ल एक गोट उज्जर परबा रौदसँ बचए लेल छाँह लेबए शमीक ठाढ़ि पर पाँखि पसारि बैसक कोशिश कएलकैक । हठात् अपन आलस त्यागि सुम्निमा बाजलि,– "देखही, देखही ... सोमदत्त ! कतेक सुन्नर परबा ! एकर पएर आ आँखि दुनू लाल छैक ।"

परबा शमीक ठाढ़ि पर निकसँ बैसक प्रयत्न करिते रहए । सोमदत्त ओम्हर तकलक मुदा जावत सोमदत्तक नजरि परबा पर पड़ितैक ताहिसँ पहिनहिं जेना आकाशक शून्यसँ प्रकट भेल होए तेना एक गोट बाज अत्यन्त तीव्र वेगसँ परबाकेँ झपटक यत्नमे आक्रमण क' देलकैक । तत्काल सोमदत्त 'हाहा' करैत चित्कार क' उठलैक । बाजक एकाग्रता भंग भ' गेलैक । डरसँ मूर्छित परबा लगेमे गाछसँ खसि पड़लैक । बाज उड़ि गेलैक ।

सोमदत्त परबाकेँ उठा कए स्नेहसँ पोछए लागल। सुम्निमा बाजलि,– "कतेक निक छैक ई उज्जर परबा, नहि ? पएर केहन कोमल छैक !"

सोमदत्तक ध्यान परबाक सुन्दरता दिस नहि रहैक। ओ कहलकैक,– "आह, एकर प्राण बाँचि गलैक।"

सुम्निमाक आलस हेरा गेल छलैक। सोमदत्तकेँ परबाकेँ स्नेहसँ पोछैत देखि जेना ओकर अङ्ग–प्रत्यङ्गमे स्फूर्ति जागि गेल होइक। ओ अपन शरीरकेँ कनेक टेढ़ कएलकि आ आँखि नचबैति कौतुक चाञ्चल्य भावक प्रदर्शन करैति बाजलि,– "मुदा, बेचारा बाजक प्राणक रक्षा त नहि भेलैक !"

बस, बहस शुरू भ' गेल। सुम्निमा सेहो पता नहि किएक आइ अपन जिद्दपर अड़लि छलि। प्रारम्भमे त हँसीमे कहने रहैक मुदा, जखन सोमदत्त उच्च भावावेगमे उपदेश दैत बेर–बेर ओकरा तोँ किछु नहि बुझैति छेँ कहैत रहलैक त ओ आवेशमे आबि गेलि आ बाजलि,– "तहूँ नहि बुझैत छेँ, किछु नहि बुझैत छेँ।"

अपन आवेगसँ कनेक काल तँ ओ अपनो चकित भ' गेलि छलि मुदा, एहिबेर ओ हठ नहि छोड़लकि,– "हँ,हँ, सुनलिऔक तोहर शिवि राजाक कथा। .... त की भ' गेलैक ओइसँ ? तोँ जइ अहिंसाकेँ एतेक बड़का कहैत छेँ, ओहि राजाक कथामे कतए मेल खाइत छौक ? हमरा त तोहर बात बुझहीमे नहि अबैत अछि, ने तोहर बातक कोनो अर्थ लगैत अछि। .... शिविके त कमसँ कम तोरासँ बेसी एतेक बुझल रहैक जे बाजकेँ आहार चाही। ककरो आहार छिनि लेलाक बाद ओकरा कोनो दोसर आहारक बन्दोवस्त क' देमक चाही। ओ त परबाक माउस बराबर अपन देहक माउस देलकैक। तोँ त सेहो नहि कएलेँ, सोमदत्त ! मुदा ओतेक कएलोसँ की होइतैक ! एकटा बाजकेँ एक साँझक भोजन भेट जइतैक। सहए कि ? तइसँ की बाजक जिनगी भरिक आहारक वन्दोवस्त भ' जइतैक ? अपन देहसँ तोँ कतेक माउस देबहीक ? आ कए टा बाजकेँ कए दिन तक ? .... पर्किर्तिक बनाओल बन्दोवस्तकेँ तोँसभ धर्मक कोन–कोन बात आनि किएक बिगाड़ि कए बेकारे भसिआबए चाहैत छेँ ?"

सुम्निमाक आजुक आवेश देखि सोमदत्त सेहो आश्चर्यित छल। एतेक दृढ़तासँ सुम्निमा ओकर बात कहिओ नहि कटने रहैकि। ओ अपनाकेँ संयत रखैत बाजल,– "त की तोहर दृष्टिमे धर्म-अधर्म किछु अछिए नहि ?"

सुम्निमा खिसिआइत बाजलि,– "हम नहि जनैत छी धर्म-अधर्मक बात ! .... पण्डित तोँही छैँ, तोँही एकर अर्थ जनैत होएबैँ। मुदा पर्किर्तिक ढाँचाकेँ बिगाड़क कोशिश करब अपने बिगाड़ करब अछि।"

"एकर मतलब तोरा हिंसा-अहिंसामे कोनो पार्थक्य नहि भेटैत छौक ?"

"बाज हिंसा नहि करैत अछि। हमसभ जे गाय कटैत छी सेहो हिंसा नहि अछि। मुदा तोहर राजकुमारसभक शिकार खेलनाइ जरूर हिंसा छैक। तोहर धर्मक पोथी-पुराण जकरा ठीक कहने छौक से महाभारत ठीके हिंसा अछि। तोहर धर्म पर्किर्तिक ढ़ाँचाकेँ खलबला दैत अछि। हिंसाक असली कारणेँ इएह छैक !"

सोमदत्त अपनाकेँ सम्हारैत शान्त स्वरमे बाजल,– "अवोध किरातबाले ! ई तोहर कुसंस्कारक परिणाम छौक जे तोँ हिंसा-अहिंसाक भेद नहि बुझैत छैँ। तँए, तोँ धर्म स्वीकृत हिंसाक मर्मकेँ अज्ञानतावश निन्दा करैति छैँ आ पाशविक वृत्तिसँ प्रेरित हिंसक पशु व्यवहारकेँ ठीक बुझैति छैँ। ... गोवधकेँ ठीक मानैति छैँ !"

लगेमे भरि पेट चरि कए गाछक छाहरिमे पाउज करैति गाय 'बाँऽऽ...' कएलकि। सोमदत्त स्नेहसँ भरल शब्दमे गायकेँ सम्वोधन कएलकैक,– "कपिला माता !"

गाय उठि गेलि जेना घर जाए लेल ओ कखनसँ प्रतीक्षारति होए। आश्रम घुरए लेल उद्यत सोमदत्त सेहो अपन पैना उठा क' हाथमे ध' लेलक। सुम्निमाक मुँह मलीन भ' गेलैक। ओकरा लगलैक, आजुक बातसँ सोमदत्तक मन दुखा गेल छैक। ओ मनेमन अपनाकेँ धिक्कारलकि। कनेक कालक बाद स्थिरसँ नरम स्वरमे बाजलि,– "सोमदत्त तोरा दुःख

भेलौक । तौँ तमसा गेलैँ । हमहूँ आइ अपनाकेँ काबिल बुझि अनेरे तोरासँ मुँह लगा लेलिऔक । गल्ती भ' गेल, … माफ क' दे सोमदत्त !"

परात भने भेटिते सुम्निमा बाजलि,– "सोमदत्त ! तौँ पिताएल छलैँ से सोचि रातिभरि छटपट करैति रहलहुँ । माय कहलकि जे एहि उमेरमे छौँड़ीसभकेँ अहिना होइत छैक ! दुपहरियामे कहाँदोन, … पोर-पोर दुखाए लगैत छैक ! कहियोकाल त सुधिये हेरा जाइत छैक । शायद काल्हि हमरा तहिना भेल रहए …. चौदह-पनरह त हमरो उमेर भ' गेल ने !"

सुम्निमाक निश्छल स्वर सोमदत्तकेँ शान्त क' देलकैक । फेर सहज वातावरणमे गप्प-सप्प होमए लगलैक । कपिला लगेमे चरि रहलि छलि । रौद गाछतर नहि आएल रहैक । सोमदत्त गाछक जड़िमे ओङ्ठि क' बैसल छल – पएर पर पएर ध' क' । ओकर पएर लग सुम्निमा पड़लि छलि अपन शरीरक अग्रभागकेँ दुनू केहुनीक भरे उपर उठोने । बातेबातमे सुम्निमा बाजलि,– "हमरि माय कहैति छैक जे हम कहाँदोन बड़ सुन्नरि छी । देह भरल, पेट एकदम मिलल, पातर डाँड़ आ स्तन पुष्ट अछि । …. ठीके सोमदत्त ?!"

सोमदत्त बाजल– "तोरा एहन बात नहि बाजक चाही, सुम्निमा ! ई सभ पाप वचन थिक ।"

सुम्निमा चकित भ' सोमदत्त लग घुसकि आएलि आ' पुछलकि,– "केहन पाप ?"

"शरीर पापक खाधि अछि आ तौँ एकर प्रशंसा करैत छैँ, सुम्निमा !"– सोमदत्त बाजल ।

सुम्निमा निःश्वास छोड़ैत बाजलि,– "ऊँ ऽऽऽ…! तोरा त सभ किछुमे पापे देखाइत छौक – हिंसामे, गायक माउसमे, सबेरे नहि नहाएमे, जप नहि करएमे, आ सुन्नरि देहो होमएमे ! एना चारूभर पापे-पाप आ तैमे तोरा रहए पड़ैत छौक । कतेक कठीन काज छैक, …. बेचारा …!"

सुम्निमाक स्वर एकदम स्नेहिल छलैक । सोमदत्त कनेक काल चुप रहल आ फेर बाजल,– "सुम्निमा ! तौँ अपन देहकेँ झाँपल कर ।"

सुम्निमा उठि क' बैसि गेलि । ओकर पेट आ जाँघमे बालु आ' छोट-छोट झारपातसभ सटि गेल रहैक । लजा कए मुँह घुमबैति बाजलि,– "नहि, हमरा देह झँपैत लाज लगैत अछि । केहने दोन लगैत अछि, साँचे ...!"

सोमदत्त बाजल,– "लाज त उघार देहक कारणेँ ने होइत छैक ।"

सुम्निमा माथ डोलबैति बाजलि,– "नहि, ... हमरा त बुझाइअ देह झँपनाइ माने श्रृंगार करब ... आ तइदुआरे ... हमरा लाज लगैत अछि !" ओ अपन माथमे खोंसल लालीगुराँसकेँ झाँपि लेलकि जेना ओ कोनो लज्जाक चीज होइक ।

सोमदत्तकेँ कोनो उत्तर नहि फुरएलैक । ओ मने-मन जेना अपनेसँ बतिआइत होए, अत्यन्त महिन स्वरमे बाजल,– "अज्ञानताक अन्धकार छैक ई !"

"सोमदत्त आ सुम्निमाक समय अहिना बितैत गेलैक । वयःक्रमानुसार सोमदत्त युवा भेल आ सुम्निमा युवती । सूर्यदत्त अपन वयः प्राप्त पुत्रक उच्च शिक्षाक व्यवस्था कएलनि । वेद, उपनिषत्, वेदान्त, दर्शन आदिक कठोर अध्ययन दिस सोमदत्त निर्लिप्त भ' गेल । यज्ञ, जपादिक नियम आ समय सेहो बढ़ि गेलैक । पिता अपन पुत्रकेँ कहलन्हि,– "वत्स ! आब अहाँ एहन कठिन आयुमे प्रवेश कए रहल छी जाहिमे वाह्य शरीरजनित मोह ज्ञानकेँ जकड़ि लैत छैक आ सर्वशक्तिसम्पन्नतापूर्वक मनुष्यक आत्मा पर आक्रमण करैत छैक । यौवनक एहि कठोरतम परीक्षाकेँ जौं सफलतापूर्वक पार करए सकलहुँ त परमपदप्राप्तिक मार्ग सुगम भ' जाएत; अन्यथा अहाँक अखन तकक सभ प्रयत्न बेकार भ' जाएत, तपस्या नष्ट आ व्रत खण्डित भ' जाएत ।"

सोमदत्तकेँ स्वयं सेहो एकर ज्ञान रहैक ओ बुझैत छल जे यौवन जीवनक अत्यन्त कठीन अवस्था होइत छैक । अन्य सभ प्रकारक सम्पूर्ण मायामोह पर विजय प्राप्त कएलाक बादो यौवनक वशमे पड़ि ब्रह्मपदच्युत भेल कतेको ऋषिमुनिसभक वृत्तान्त ओ ग्रन्थसभमे पढ़ने छल । ओ जनैत

छल जे कामवासना पर विजय प्राप्त करब महान् विजय थिक । अतः शरीरक एहि आग्रहकेँ निर्मूल कइए क' मनुष्य ओहि स्थितिमे पहुँच सकैत अछि जतए आत्मा-परमात्माक भेद शून्य भ' अभेदपद प्राप्त होइत छैक ।

पिता बुझओलखिन्ह,– "पुत्र ! आब अत्यन्त सावधानीक आवश्यकता अछि । आब अहाँ ब्रह्मचर्यक कठोर कण्टकापूर्ण मार्ग पर यात्रा प्रारम्भ करब । जखन-जखन दैवी परीक्षाक सामना करए पड़ए एतबए स्मरण राखब जे विषयवासना निकृष्ट तत्व अछि, शरीरक आनन्द विष थिक आ घोर तपस्यासँ प्राप्त महासागरोसँ महान आत्मोपलब्धिकेँ एकर छोट बुन्न विषाक्त क' दैत छैक ।"

सोमदत्त ग्रन्थसभक पूर्ण अध्ययन कएने छल । प्राचीन ऋषिमुनिसभक चरित्रक सेहो ओकरा नीक अध्ययन रहैक । पिताक वचनक सत्यताक प्रमाण ओकरा विभिन्न ग्रन्थसभमे भेटैत रहैत छलैक । आ अध्ययनसँ मात्रहिं नहि ओहुना ओकर दिन-प्रतिदिनक स्वयंक अनुभव सेहो अत्यन्त तीव्रतासँ स्पष्ट कए रहल छलैक जे यौवनक प्रचण्ड उन्मादक दमन करब यर्थाथमे अत्यन्त कठीन तपस्या थीक । समुद्रक ज्वारकेँ कदाचित् मनुष्य अपन तरहत्थीसँ रोकि सकैत अछि मुदा मनोबल आ तपस्यासँ अर्जित ब्रह्मतेजक आभावमे सहस्त्र सिन्धुक सम्मिलित वेगसँ अत्यधिक शक्तिशाली यौवनक वेगवान ज्वारकेँ शरीरक समस्त शक्ति लगाकए दमन करब कठीन छैक । सोमदत्त ई सभ बात बुझैत छल आ तैंए, ओ यम, नियम, निदिध्यासन आदि योगक अष्टमार्गक अभ्यासमे बृहत् आयोजनसहित लागि गेल छल । एहि शरीररूपी रथमे जोतल इन्द्रियरूपी पाँच सवेग अश्वकेँ मनरूपी सारथीक वशमे राखए पड़त नहि त एकर परिणाम सर्वनाश हएत । मनक सारथ्य-साधनक महात्म्य धर्मग्रन्थसभमे वर्णित अछि,– "दृष्टाश्चयुक्तमिववाहमेनं विद्वान मनोधारयताप्रमतः ।" तैंए, यौवनक तपस्या ओकरालेल चित्तवृत्तिनिरोधक योग भ' गेल छलैक ।

सोमदत्त सुम्निमा छोड़ि आओर कोनो दोसर वयःप्राप्त युवतीकेँ लगसँ नहि देखए सकल छल । तहीदुआरे यौवनक विनाश रूपमे बस सुम्निमे टा

ओकर आगाँ उपस्थित भ' जाइत छलैकि । बच्चेसँ गाम छोड़ि आश्रमवासी भ' गेल छल । गामोमे मातापिताकँ छोड़ि दोसरक सहवास नहि भेटल छलैक । बहुत साल पहिने अरण्यवासी किरात-भिल्लसभक सभामे उपस्थित नारीसभक पृथक-पृथक मुखाकृति ओकर स्मृतिमे नहि जमए सकल छलैक; नारीत्वक समूहमे प्रत्येकक व्यक्तिगत मुखाकृति एकाकार भ' निपा गेल छलैक । तँ यौवनक मदप्लावित चाञ्चल्य संगहिं एक मात्र सुम्निमे टाक चित्र ओकर मनमे उदित भ' जाइत छलैक । ओ कहिओकाल सोचबो करैत छल,– 'कतहुँ सुम्निमा ओकर परीक्षार्थ कोनो ईर्ष्यावान देवताद्वारा पठाओलि मोहरूप त नहि अछि ?'

जतेक-जतेक ओकर मोन सुम्निमा दिस आकृष्ट होइत छलैक ओ अपन तपस्याक कठोरता आ समयावधिकँ बढ़बैत चलि जाइत छल । दुपहरियामे कौशिकीतट पर ओकरासभक भेँटघाट होइत छलैक मुदा पहिने जकाँ आब गपसप नहि होइत रहैक । सोमदत्त अपन तपस्याक प्रयोगमे ध्यानकँ बाह्य जगतसँ तानि आत्मान्तरमे बान्हि क' राखक प्रयत्न करैत छल; तँ सदिखन गुमसुम जकाँ रहैत छल । सुम्निमा मनेमन सोचैति रहैति छलि,– 'की भेल छैक आइकालि सोमदत्तकँ ?' मुदा ओकरा अपनो बुझाइत छलैक जेना आब ओ पहिने जकाँ चञ्चलि आ वाचालि नहि रहि गेलि छलि । ओकरा स्वयं गप करक प्रयोजन नहि बुझाइत छलैक । मन जौं भरिपूर्ण रहए त शब्द निरर्थक भ' जाइत छैक । ओहो गुमेसुम रहैति छलि । कहियोकाल गपसप भैओ जाइत छलैक त पहिने जकाँ बहसक उत्तेजना नहि रहैत छलैक । दुनू अपन-अपन बात कहैत छल, मुदा अपने बात मनबाबक जीद्द आब नहि रहैत छलैक । पहिनहुँ सोमदत्त प्रायः जीद्द नहि करैत छल; बेसी काल सुम्निमे जीद्द करैति छलि, मुदा आब ओकरो स्वभाव बदलि गेल छलैक ।

एक दिन सुम्निमा सोमदत्तकँ ध्यानमग्न आ बड़ी कालसँ टकटकी लगओने गुमसुम देखि पुछि उठलि,– "सोमदत्त ! आइकाल्हि किएक तौं पहिने जकाँ गप-सप नहि करैत छँ ? एना बुझआइत अछि जेना हमरा

तोरा बीचमे एक गोट बड़का पहाड़ कतए ने कतएसँ आबि कए ठाढ़ भऽ गेल अछि । किए ?"

सोमदत्त बाजल,– "शान्ति सत्यक स्वर थीक ।" आ ओ फेर एकदमसँ चुप्प भ' गेल ।

सुम्निमा फेरो पुछलकि,– "आ सत्य छैक की ?"

"आत्मा !"

सुम्निमाक अन्तर्हृदयमे आनन्दक छोट-छोट लहरिसभ उठि गेलैक आ ओ मनेमन नाचए लगलैक, कुदि-फान्हि करए लगलैक । ओ अत्यन्त कोमल स्वरमे बाजलि,– "तखन त आइकाल्हि तोहर शान्ति हमरे आत्माक स्वर हएत ? नहि ?!"

किछु क्षणधरि दुनू मौन रहल । सुम्निमा गद्‌गद् भ' जेना अपनेकेँ कहैति होए परितृप्तिक दिर्घ उच्छ्‌वास लैति बाजलि,– "तखन त हमरो आत्मा अछि । नहि, सोमदत्त ! ... तोँ हमरा पहिने जाहि आत्माक बारेमे बुझअबैत रहए, कहैत रहए तेहने त आत्मा हमरोमे एतए अछि !"

एतेक कहैत ओ अपन उघार वक्ष पर हात रखलकि आ नमहर साँस छोड़लकि ।

सोमदत्त कोनो उत्तर नहि देलकैक । एकेक्षण पश्चात् ओ अपन पैना उठओलक आ बाजल,– "आब हम अपन आश्रम फिरब !"

"अखने, एतेक जल्दीये ?"– आहति आग्रहक निःश्वास संगहिं सुम्निमा प्रश्न करैति पुछलकैकि ।

सोमदत्त सकाले आश्रम फिरि आएल; गायक तत्कालक आवश्यक सेवासभ पूरा क' ओ आश्रमक पुबरिया उपवनमे चलि गेल । एकगोट विशाल शालवृक्षक तरमे पद्मासन बान्हि समाधिस्थ भ' गेल । आइकाल्हि ओ अहिना बीच-बीचमे समाधिमे लीन भ' जाइत छल ।

दुनू अन्तर्चक्षुकेँ ललाटक मध्यबिन्दुमे केन्द्रित क' निश्चल भावमे ओ बड़ी कालधरि बैसल रहल । एना कएलासन्ता चक्षुजनित विकारसभक मोचन आ इन्द्रियसभक शमन भ' जाइत छलैक ।

वृद्ध सूर्यदत्त आ हुनक वृद्धा पत्नीकेँ पुत्रक ई प्रयोग देखि अत्यन्त संतोष होइन्ह । मुदा सोमदत्त कतबो अपनाकेँ योगक्रियासभमे संलग्न राखए यौवनक चञ्चलताक दमन क्षणिक सेहो नहि भ' सकैक । आसनसँ उठिते सुम्निमा मानसपटल पर उपस्थित भ' जाइकि । कहिओ-कहिओ त सोमदत्त परास्त भ' अत्यन्त दीन स्वरमे गोहारए,– "हे प्रभु ! एहि दासानुदास पर अपनेक कृपादृष्टि किएक नहि पड़ैत अछि ? कामरूपी ग्राहसँ ई भक्त ग्रसित भ' गेल अछि; हे गजमोचक विष्णो ...... !"

एहि प्रकारेँ भक्तिक आवेगमे परिप्लावित भेल नेत्र आ करूणार्द वाणीसँ ओ निरन्तर वन्दना करैत रहैत छल । ओकरा भक्तिमार्गक सेहो पर्याप्त अध्ययन रहैक । ओ भगवानकेँ कहन्हि,– "हे परम प्रभु ! एखन तक देवप्रसाद किएक हमरेलेल अदेय अछि ? की हमर भक्तिमे एखनो न्यनूता भरल अछि ?"

मुदा एकटा बात रहैक जाहिसँ ओकरा संतोष होइक । सुम्निमासँ साक्षात्कार होइतहिं ओकर मन परिष्कृत आ संयमित भ' जाइक । ओकरा आगाँ रहैत काल कहिओ ओहन अन्तर्पीड़ाक बोध ओकरा नहि होइक; परोछ होइतहिं फेर भ' जाइक । प्रायः शरीरक सामिप्यक सूक्ष्म संतोषेसँ ओकर मन स्थिर भ' जाइत रहैक । सुम्निमाकेँ दृष्टिसँ दूर जाइतेँ ओ असंयत भ' जाइत छल; जेना ओकरा मनमे सुम्निमाक बिम्ब छाड़ि आओर किछुक स्थान रहबेँ नहि करैक ।

की सोमदत्तकेँ एतबासँ संतोष भ' सकैत छैक जे मोन असंयमित होइतो ओ इन्द्रियसभकेँ संयममे राखएमे सफल भ' गेल अछि । ब्रह्मचर्यमे इन्द्रियदमन त अवश्य हएबाक चाही मुदा एहिमे कामवासनाक निर्मूलन आवश्यक आ जरूरी अछि । घोड़ा त वशमे आबि गेल मुदा सारथी की करत ?

एक दिन दूपहरियामे इहो छोट छिन संतोषक विषय सोमदत्तसँ छिना गेलैक । ओ सभ दिन जकाँ ओहू दिन कोपिला गायकेँ ल' क' कोशी तट पर आएल रहए । सुम्निमा पहिनहिसँ ओकर बाट निहारैति

प्रतीक्षा कए रहलि छलि । ओकरामे बहुत दिनक बाद पहिने जकाँ चञ्चलताक पूर्ववत आभाष देखाइत छलैक । ओकरि आँखिसभ क्रीड़ाक कौतुकमे अस्थिर छल । सोमदत्त ओम्हर ध्यान नहि देलकैक । आइकाल्हि ओकर मन शरीर आ मनक पार्थक्य आ ओहिसँ उत्पन्न भिन्न प्रकारक विकारसभक विश्लेषण, निरूपण तथा ओकरासभक दमन करए दिस लागल रहैत छलैक । एहन चिन्तनसभक कारणेँ ओकर वाणीमे सेहो तदनुरूपक गम्भीरता प्रवेश क' नेने छलैक । आ ओहिदिन फेर सुम्निमा पहाड़ी निर्झरिणि जकाँ लहराइति लागि रहलि छलि । हृदयमे नहि अँटैत चपल बंकिमता ल' नर्तन करैति ओ गुनगुनाइति थिरकि रहलि छलि । कखनो दौड़ति ओ बालुमे जा' क' ओतहिंसँ किछु कँपैत स्वरमे सोर करैकि,– "हे रौ सोमदत्त ! आ ने रे ... सोम, आ ने !" आ कखनो फेर दौड़ैति सोमदत्त लग आबि कानमे गुदगदी लगबैति कहैकि,– "सोमदत्त ! सोमदत्त !!"

सोमदत्तक कानतक सुम्निमाक केशक सुगन्ध पसरि गेलैक ओ अपन माथ झटकि-झटकि क' ओहि सुगन्धकेँ कहुना झारक प्रयत्न कएलक,– "ई कोन क्रिड़ा करैति छेँ तोँ, सुम्निमा ?!"

माटिमे एँड़ी गाड़ि कए एक बेर सुम्निमा फन् द' घुमि गेलि आ बाजलि,– "आइ हम अपनामे अँटिए नहि रहलि छी सोमदत्त ! ई देह अखनुकाक आनन्दक बोझ उठबएसँ असमर्थ भ' गेल अछि । ....आ तैं त कँपैत अछि, सिहरैत अछि । आइ बुझाइति अछि जेना हमर देहकेँ कतहुसँ किछु बड़का आनन्दक वस्तु भेटि गेल छैक । ... आइ तैं किनसाइत हमरा एना भ' रहल अछि !"

सोमदत्त एकदम शान्त मुद्रामे बाजल,– "आनन्दक सन्धान शरीरसँ बाहरक खोजी अछि !"

सुम्निमा ठुनकलि,– "अहँ, आइ एना जुनि बतिआह !"

एतेक कहैत ओ श्वेतहँसिनी जकाँ नदीक कछेरमे चलि गेलि तथा पानिमे छपाक द' कुदि जलक्रिड़ा करए लागलि ।

गाछतरसँ सोमदत्त सभ किछु देखि रहल छल । मध्याह्नक सूर्यक प्रखर रौदक आँखिकेँ चोंधिआ देबएबला ज्योति नदीक तटकेर बालुपर पड़ि विकिर्ण होइत ओतक सम्पूर्ण क्षेत्रकेँ उद्‌भासित कए रहल छलैक । ओहि घनघोर जङ्गलोमे आकाशक रूप प्रवेश क' ओकर सघन हरितिकेँ पातर आ तरल बना देने रहैक । ... बुझाइक कदाचित् हरिअर ओहि तिरस्करिणीक भीतर कोनो दोसर लोक होइक आ कोशी नदी अपन अशान्त वक्षमे ओहि आकाशलोककेँ धारण कएने बहि रहलि होए । ... नदीमे अत्यन्त दृढ़तासँ अड़ल शिलाखण्डसभ पर जलक प्रवाहक आघात बेर-बेर पटका-पटका कए छितरैत छलैक आ चूर्ण ज्योतिमुक्ता निरन्तर आकाशमे पसरि रहल छलैक । नदीक कलकल ध्वनिक रहस्य संवाद अनन्तक कानमे बहैत पसरि रहल छलैक । .... सम्पूर्ण चराचर तन्द्रामग्न, शान्त आ स्तब्ध छल । मध्याह्नक ओहि रहस्यमय निस्तब्धतामे वृक्षक पातसभ पर कुदैत फुद्दीसभक चपलता तक निष्प्रयोजनीय नहि लगैक ।

सोमदत्तक ध्यान वृक्षक पात पर क्रिड़ा करैत फुद्दीसभ पर चलि गेलैक । अङ्गुष्ठ परिमाणक ओहि चिरैसभमे चपलता बढ़ि गेल छलैक । ओ सोचए लागल,– '... कथंकदाचित् इहोसभ जौं लोप भ' जाए तैओ एहि विराटतामे शून्यता नहि आबि जएतैक ?! एहि ब्रह्माण्डसंगे एहि सूक्ष्म फुद्दीसभक की आ केहन सम्बन्ध ? की एहने तत्वसभक विवेचन उपनिषदादिमे नहि भेल अछि ?'

ओकर ध्यान रहि-रहि कए नरम कनोजरसभक हरिअर पातसभ पर फरफराइत झड़ैत-उड़ैत खेलैत-कुदैत फुद्दीसभक ओहि जोड़ी पर चलि जाइक । ... आ संगहि सुम्निमा पर सेहो जे तटसँ सटले जलमे आनन्दक तरङ्गित लोकक सृष्टि कए रहलि छलि । वनक मध्यसँ तखने कोनो अदृश्य चिरैक तीख कूजन ध्वनित भेल,– "कूऊ-कूऊऊऊऊ ......"

सोमदत्तक विचारश्रृङ्खला अकस्मात् भङ्ग भ' गेलैक । ओकरा बुझएलैक जेना स्तब्धता चारूभर तरङ्गित भ' गेल होए । जकरा ओ विराट् शून्यता कहने छल से एकगोट नगण्य पक्षीक कूजनसँ आन्दोलित समुद्र जकाँ

तरङ्गित आ चञ्चल भ' क' जागि गेलैक । ध्वनिक ओ तरङ्ग सोमदत्तकेँ सेहो स्पर्श क' लेलकैक । आ ओकर शरीर एकबेर काँपि जकाँ गेलैक । ओकर तपकृश देह सिहरि उठलैक आ विराटताक लोक ओकरा आगाँसँ नहुअँ-नहुअँ बिलाइत चलि गेलैक; आब ओकरासंगेँ ओकर दुर्बल शरीरक सिहरनाइये टा रहि गेल छलैक । 'ई मोह त' नहि अछि । आँखि पर छाइत ई जाली निद्रामग्न चिरैक आँखि पर चढ़ैत जाली जकाँ त' नहि अछि ?!'– सोमदत्त सोचए लागल ।

'ई की ठाढ़ भ' गेल अछि आगाँमे । की ई तन्द्राक छलमे आँखि पर पसरैत मनोलोकक चित्र त नहि अछि ? कानमे सन्हिआइत ई ध्वनि केहन अछि ?' – प्रायः ओ औँघा गेल छल । ओकर असंयमी मोन एतहु प्रायः कोनो कौतुक शुरू क' देने रहैक । तखने ओ सुम्निमाक मधुर स्वर सुनलक,– "सोमदत्त ! कतए छेँ तोँ ? हमरा नहि देखलेँ ? देख, एतहि छी हम !"

निस्सन्देह सुम्निमा ओकरा आगाँ ठाढ़ि रहैकि । सोमदत्त अकचका कए जेना सुम्निमाकेँ पहिलबेर देखैत होइक, तकलक । सहस्त्रसूर्यक प्रखरता लए ओ ओकरा आगाँ ठाढ़ि छलि । यौवनक चरमावस्थामे किछु क्षणक हेतु शरीरकेँ प्राप्य प्रखरतासँ ओ उदीप्त रहए । सोमदत्त देखलक जे ओ ओकर मनक रचना नहि रहैक । तखन कोनो छलसँ वा ओकर पटलमे विकारक भाफसँ निर्मित फुसिएक चित्र नहि रहैक । ई त स्थूल पार्थिवताक सहित ओकर आँखिक आगाँ ठाढ़ि छैकि आ कनेक दूर होइतो जेना बिहारि गाछकेँ हिलबैत रहैत छैक तहिना ओकरा हिलाए रहलि छैक । नाक फुलओने, माटि पर टाप बेर-बेर बजाड़ैत, मनक सारथी तपसाधनाक रासिकेँ अपन सम्पूर्ण बलसँ खिचैत, घामे-पसीने लालतेस बनल आ दाँत कटकटबैत इन्द्रियक पाँचो वेगवान् अश्व असंयमित हिनहिना रहल छैक ।

सोमदत्तकेँ एहन अवस्थामे देखि सुम्निमा कनेक अगुता गेलि । चिन्ताविह्वल स्वरेँ ओ पुछलकैकि,– "की भेलौक, सोमदत्त ! एना किया कएने छेँ ?"

सोमदत्त अपन श्वासकेँ सधैत कहलकैक,– "इन्द्रियक अनियन्त्रित पाँचटा अश्व अछि, – असंयमी, असंस्कृत, दुर्दान्त, पाशविक। साधनाक लक्ष्य निपुण अश्वारोही जकाँ ओकरासभकेँ नियन्त्रणमे राखब अछि।"

सोमदत्तकेँ अपने बुझाएल रहैक जे सुम्निमाक प्रश्नक ओ ठीक उत्तर कथमपि नहि रहैक। सुम्निमा कहलकैकि,– "तोहर त बाते की कहाँदोनक होइत छौक। ... आ आइ त आओरो तोँ सभ बात अद्भुदे करैत छेँ !"

ठीके, सोमदत्त आइ अपनो अनुभव कएने छल जे ओकर शरीरो ओकर अपन नियन्त्रणमे नहि रहि गेल छैक। सुम्निमाक नग्न, सुन्दर देहक आकर्षण ओ सहएसँ असमर्थ भ' गेल अछि। ओकर एहि कृश देहोमे अखनो कतेक शक्तिसम्पन्नता जे विश्वक महान तत्व, ओकर ज्ञानविज्ञान आ सम्पूर्ण तपसाधनासभ पर सर्वोपरि होइत अधिष्ठित होबक प्रयत्न कए रहल छैक ! प्राचीन कालमे ब्रह्मचारी सुकदेवकेँ अहिना भेल हएतन्हि। कतहुँ सुम्निमो देवसभाक शोभामयी रूपराशि त नहि अछि ? पात्रमे सोमदत्त आ सुम्निमाक रूपमे एहि कौशिकीतट पर फेरो शरीर आ आत्माक सनातन नाटकक अभिनय त नहि होबए लागल अछि ? फेरो प्रकृतिक अनन्त आँखिसँ देखाएबला नाटक ने त हएत अखन ?!

सोमदत्त दृढ़तासँ अपन मुट्ठी कसि लेलक आ मोनेमोन संकल्प कएलक,–'हम अपन लक्ष्यकेँ कथमपि शिथिल नहि होबए देब।'

एहि संकल्पसँ ओकरामे किंचित संयमक संचार भेलैक आ ओ संयत स्वरमे कहलकैक,– "जो, सुम्निमा जो ! तोँ हमर आँखिक आगाँसँ चलि जो। ... एहिठामसँ ... हमर दृष्टिसँ हटि जो !"

सुम्निमा अकचका गेलि, – "किए ? की भेलैक ?... हमराबुते किछु भ' गेलैक की ?"

"तोहर शरीर हमर आत्माक विकासमे बाधक अछि।"

ओ बुझि गेलि। ठोरकेँ गोल बनबैति आ अपन आँखिकेँ घुमबैति ओ कनेक आश्चर्य देखबैति बाजलि, – "मुदा, यदि तोहर आत्मे शरीरक विकासक लेल बाधक भ' गेल होउक तखन ?"

"आत्मा नित्य अछि आ शरीर क्षणभङ्गुर; तैंए, नित्यक सेवन करक चाही आ अनित्यक त्याग ।"

"तोहर बात हमरा बुझएमे आएल की नहि से त नहि जानी मुदा हम तोरे भाषामे कहैत छिऔक । तमसइहे नहि, ... सोमदत्त ! तों यएह ने कहए चाहैत छैं जे आत्मा कहिओ नहि मरैत अछि, जुगजुगान्तरतक । ई आकाश जाधरि रहतैक ताधरि ! ... मुदा ई शरीर मरि जाइत अछि, किछुअए दिन रहैत अछि । तैंए तों कहैत छैं जे कनेके काल रहएबला शरीरक बात नहि मानक चाही । ... अमर आत्मे टाक चिन्ता करक चाही । ... यएह ने ! ... मुदा हम कहैत छिऔक शरीर जल्दीये मरि जाइत अछि, एकरा छोड़ए पड़ैत छैक तैं एकर बेशी देखभाल करक चाही ! जुगजुगान्तरतक रहएबला चीजक देखभालक कोन जरूरी ? ई त रहबे करत ने । जकर रक्षा जरूरी छैक तकर रक्षा हएबाक चाही । ... तैंए, हमर बात मान, सोम ! तों जकरा अनित्त कहैत छैं तकर रक्षा कर, नित्त त रहबे करतैक । ओ त अपने रहत !"

"आत्मा हिमालय जकाँ अटल अछि, सदा स्थायी ।"

"शरीर फूलसन नीक अछि, गमकि कए झरि जाएबला ।"

"शरीरक आनन्द सठिजाइत छैक । तैं अनन्त आनन्दक प्राप्ति जीवनक लक्ष्य थीक ।"

"तैदुआरे सठि जाएबला आनन्दकें भोगि लेबाक चाही ।"

"अनन्त आनन्दकें छोड़ि कए के एहन मूर्ख हएत जे क्षणिक सुखक पाछाँ भागत ?"

"जुगजुग तक होइत रहएबला आनन्द त वास्तवमे दिकिआबएबला नम्हर पीड़ा छैक । एहिसँ कहिओ केओ भागि नहि सकैअ । ... कनेक्के काल रहएबला सुख बड़का आनन्द छैक । लगले चलि जाइत अछि, तैंए !"

"आत्मा कहिओ नहि मिझाएबला सहस्त्र सूर्य थिक ।"

"शरीर अन्हारमे मिझाए-मिझाए क' बरएबला दीप थिक ।"

"नहि मिझाएबला सहस्त्र सूर्यक आलोक आत्मसेवन थिक ।"

"सदिखन चमकैत सूर्य दिस आँखि उघारने रहए पड़बाक पीड़ासँ बढ़ियाँ त अन्हारक दीपक मधुर इजोत ... कतेक ने कतेक नीक आ सोहनगर ।"

प्राचीन कालमे सुकदेव आ रम्भाक सम्वाद सेहो किनसाइत एहने रहल हएत । अन्तर एतबए जे सुम्निमा अज्ञानताक अन्धकारमे द्वन्द्वहीन भ' विश्वासक वाणी उगलि रहलि छलि आ प्राचीन कालक रम्भाक स्थिति एहन नहि रहल हएतन्हि । किएक त, ओ दोसरसँ खटाओलि एकगोट अप्सरा छलीह जनिका अज्ञानताक आत्मविश्वास निश्चितेँ नहि छलन्हि हएत । आ सोमदत्तकेँ अखुनकाक अनुभवसँ ओकर अपन आस्था कतहुँ डगमगा रहल छलैक जे सुकदेव मुनिक अवस्था नहि रहल हएतन्हि । सोमदत्तकेँ बीच-बीचमे इहो बुझाइक जे ओ अनुभवसँ बिनतरासल तर्कसभ बस कोरा बुध्दिक बलेँ सुम्निमालग प्रस्तुत कए रहल अछि । तैँ ओकर मन विचलित सन रहैक । ओकरा बुझा रहल रहैक जे ओकर आस्थाक द्वन्द्व ओकर अपने अपूर्ण तपस्याक परिणाम छैक । जतए अज्ञानतासँ भरल नारी अपनाकेँ दृढ़तासँ स्थापित कए रहलि छलि, सोमदत्त अपनाकेँ ज्ञानसँ परिपूर्ण अनुभूत नहि पाबि रहल छल ।

एहन संवाद नहि जानि कखनधरि चलैत रहलैक । सोमदत्तकेँ बीच-बीचमे लगैक जेना ओ अन्धकारमे घेराएल जाइत होए आ ओकर शरीर गहन अन्धकारमे डुबैत जा रहल होइक । जेना कोनो गहीँर शीतल तलक स्पर्शसँ उपलब्धिमे केवल कम्पन मात्र प्राप्त होइत छैक तहिना होइत होइक । ओकर शरीर सिहरि गेलैक । सुम्निमा फेर एहने दुर्बल क्षणमे निरन्तर आघात करैति जाइति छलि,– "सोमदत्त ! देख हमरा, पर्किर्तिक सौन्दर्यमे ठाढ़ि हमरा देख ।" आ फेर अपन एँड़ीक धुरी पर फन्नसँ नाचि दैति छलि । सुम्निमाक पूरा शरीर सोमदत्तक अर्न्तहृदयमे एक क्षणलेल झिलमिला कए नाचि जाइत छलैक आ ओकरा लगैत छलैक जेना एहि किराती युवतीक अंग-प्रत्यङ्गक मादकतासँ ओ मातल जाइत होए ।

ओ तत्क्षण अपनाकेँ संयमित करैत बाजल,– "हमरा आगासँ एहि पापमय दृष्टिकेँ हटा, सुम्निमा !"

सुम्निमा आइ पूरा कौतुकीय मद्रामे छलि । ओ परिहास करैति, देहकेँ मरोड़ैति, आँखिसँ किछु खोजैति जेकाँ करैति बाजलि,– "कतए छैक पाप ? हम त किछु नहि देखैत छी ।" आ' फेर ओ तखने सोमदत्तक मुखाकृति पर प्रकट वक्रताकेँ लक्षित क' बाजलि,–"सोमदत्त ! तोरा बोखार छौक की ?"

सोमदत्त अकारण दृढ़तासँ चारि-पाँच बेर माथ हिलओलक आ बाजल,– "नहि त ! हमरा बोखार नहि अछि । हम स्वस्थ छी ।"

आ फेर कनेक कड़ा स्वरमे बाजल,– "सुम्निमा ! हम कहैत छिऔक, तोहर ई शरीर पापरूप छौक, विष छौक, मैल छौक । एहि नर्ककेँ हमरा आगाँसँ हटा !"

सुम्निमाक मान पर बड़का आघात भेलैक । ओकरा अपन देह पर अभिमान रहैक आ आइ वएह शरीर फेर खास कए बेसी उल्लसित छलैक । सुम्निमाक अर्द्धचेतनामे ओकर मायसभक प्रशंसाक शब्द गुँजि रहल छलैक,– 'सुम्निमाक शरीर अत्यन्त सुन्दरसँ गढ़ल छैक ।' मुदा एखन अही गर्वक विषय पर चोट करैत सोमदत्त कहि रहल छलैक,– "नर्क छौक तोहर शरीर !"

ओ आवेशमे बाजलि,– "तोरामे कतहुँ ने कतहुँ नर्कक वास भ' गेल छौक तँए तोहर आँखि जतए-ततए खाली नर्के देखैत छौक । तोँ पर्किर्तिक रचनाकेँ बिगाड़ि कए अपना लेल खाधि खुनि लैत छैँ । पर्किर्तिकेँ भगा कए खुनल ओही खाली खाधिमे पाप जनमबैत रहैत छैँ । पर्किर्तिकेँ अपमानित करैत तोँ कहैत छैँ जे धर्म पलाइत छैक ?! ई तोहर धोधरि सोच छौक ।"

सुम्निमाक बातसँ सोमदत्तकेँ जेना कोनो तेजक प्राप्ति भ' गेल होइक ओ सुम्निमाकेँ कहलकैक,– "धर्म प्रकृति आ स्वभावसँ उपर उठक प्रयास अछि । तोँ जकरा प्रकृतिसँ शून्य होबक संज्ञा दैत छही ओ प्रकृतिसँ उपर

उठक लक्षण थिक । मनुक्ख स्वभाव आ प्रकृतिमे सिमित रहए नहि चाहैत अछि । ओ संसारक बन्धनसँ मुक्त भ' गगनबिहारी होमए चाहैत अछि ।"

मर्माहति सुम्निमा आवेशमे छलि,– "तौँ शरीरकेँ त्यागि कए झूठकेँ पँजिआ रहल छेँ । धर्म झूठक शून्य आकाशमे झूठेक पाँखि फड़फड़बैत फूसिएक चिरै अछि ।"

सुम्निमा आओर किछु-किछु बजिते रहैकि कि ओकर दृष्टि सोमदत्तक मुनल आँखि आ कसल मुट्ठीपर पड़लैक । ओकर मुँह पूरा लाल भ' गेल रहैक । निरीह सोमदत्त कोनो सिंह समक्ष आत्मसमर्पण करैत संज्ञाशून्य निश्चल काँतर पशु जेकाँ लगैत छल ।

सुम्निमा बाजलि,– "सोमदत्त ! सोमदत्त !!"

सोमदत्तसँ कोनो उत्तर नहि अएलैक । ओ एकदम निश्चल छल । ओकर कृशकाय काया पर स्वेदकण चमकि रहल छलैक आ गालक नससभ फूलल तनाएल सन भ' गेल छलैक । सुम्निमा व्यग्र भ' गेलि । ओ ओकरा सहारा दैति अपन वक्ष पर ओकर माथ टिकाए केश कुरिआबए लागलि ।

सोमदत्त महीन स्वरमे बाजल,– "हमरा स्पर्श नहि कर ।"

सुम्निमा फेर मर्माहत भ' गेलि । ओ नहुएँ सोमदत्तक माथ अपन छातीसँ अलग कएलक आ सोझे उठि गेलि । सोमदत्तक आंखि खुलि गेलैक । सुम्निमा आगाँ छलि, मुदा शरीर किंचित किछु कँपैत । सोमदत्त महीन स्वरमे आग्रह जेकाँ कएलक,– "सुम्निमा हमरा लग नहि आ !"

सुम्निमा एहन प्रहारसँ उत्पन्न विकलतामे नारीत्वक सम्पूर्ण अभिमानकेँ बटोरि कए बाजलि,– "ठीक छैक सोमदत्त ! आब हम तोरा लग कहिओ नहि अएबौक ।"

एतेक कहि सुम्निमा दृढ़तासँ फन्न द' घुमलि आ उत्तर दिस बढ़ि गेलि । सोमदत्त सुम्निमाक हिलैत-झुलैत पृष्ठभागकेँ नदीक किनारेँ धीरे-धीरे लोप होइत देखैत रहल । सुम्निमाक पुष्ट काञ्चन-स्कन्ध प्रदेश पर कारी केशराशि लहरि जेकाँ लहरा रहल छलैक ।

ओ काञ्चन-प्रभा-किरातबाला देखतहिं देखैत वनमे बिला गेलि ।

थाकल सोमदत्त सुस्त मनैं अपन पैना उठओलक आ क्षीण स्वरैं बजओलक,– "कपिला माता ! चलू, आब आश्रम चलू ।"

अत्यन्त शिथिल भ' ओ आश्रम पहुँचल, जेना अकस्मात् जीर्ण रोगी भ' गेल होए । देहक शक्ति किंचित क्षीण भ' गेल रहैक । पुत्रकैं शिथिल आ धीरे-धीरे पग बढ़बैत अबैत देखि सोमदत्तक माय चिन्तित स्वरमे कहलखिन्ह,– "की भेलैक आइ सोमदत्तकैं ? ... पुत्रकैं वन-जङ्गलमे कोनो हिंसक जन्तु आहत त ने कएलकैक?"

सूर्यदत्त सेहो कुटीसँ निकललाह । पुत्रक अवस्था देखि व्यग्रतासँ पुछलखिन्ह,– "की भेल पुत्र अहाँकैं ? असावधानीमे वन-पर्वतक कोनो अज्ञात गर्तमे त नहि खसि पड़लहुँ ? शरीर हत-आहत त नहि अछि ?"

माता-पितालग पहुँच सोमदत्त दीन स्वरमे बाजल,– "हमर तपस्या एखनो अपूर्ण अछि । हम एखने एहि आश्रमकैं त्यागि कठोरतर व्रतमे जाए चाहैत छी । माता-पिताक आशीर्वाद ल' विदा होमए लेल उपस्थित छी ।"

एतेक कहैत ओ दुनूक चरण स्पर्श कएलक आ माता-पिताकैं विमूढ़ अवस्थामे ठाढ़ छोड़ि सन्ध्याक अन्धकारमे वनप्रान्तक बाट दिस विदा भ' गेल ।

ओम्हर साँझमे सुम्निमा अपन घर पहुँचलि । माय बेटीक मुँह देखि चिन्तासँ पुछलकैकि,– "की भेलौक सुम्निमा ! तोरा ?"

मायक वचनसँ एखन तक नारीक मानक कारणैं कोनो तरहैं संयममे रहल नोरक बान्ह टुटि गेलैक । सुम्निमा कानए लागलि ।

बिजुवा घरसँ बाहर अएलैक आ बेटीकैं कनैति देखि पुछलकैक,– "किए एना करैत छैं, सुम्निमा ? के तोरा की कएलकौक ?"

माय कहलकैकि,– "तोरा हम कए बेर कहिलिऔक जे एहि उमेरमे एना वन-जङ्गल नहि बौआइ ! ... वायुदेव लागि जाइत छैक । कोशीक तट दिस त आओर तोरा सन जुआन-जहानकैं जाही नहि चाही ।"

बाप कहलकैक,– "सुम्निमाक उमेर भ' गेल छैक, आब ओकरा अपन वर खोजि लेबक चाही ।"

माय पुछलकैकि,– "एहि गाममे तोहर कोनो छौंड़ा साथी छौक की नहि ? एखन तक किए नहि खोजलैं ?"

सुम्निमा सिसकैति बाजलि,– "हम एहि गाममे आश्रमके सोमदत्त छोड़ि दोसर कोनो छौंड़ाकेँ नहि चिन्हैति छिऐक ।"

माय स्नेहसँ बेटीक माथ फेरलकैकि । सुम्निमा दहो-बहो नोर खसबैति कानए लागलि ।

"कोनो बात नहि, सुम्निमा !"– माय पुचकारैति कहलकैकि,– "कोनो किराती छौंड़ा तोरा पाबि कए भाग्यशाली कहाओत । तों खाली 'हँ' त कहि दे । ... देख त, केहन छौक तोहर कसल सुन्दर ई शरीर !"

माय सुम्निमाक देहपर स्नेहसँ हाथ फेरैति रहलैकि ।

* * *

२

एहि तरहें एक साँझ सोमदत्त पराजयक तीव्र तोड़मे आश्रमक लघुवृत जीवनसँ निकलि चलि देने छल । ओकर तपस्यामे आश्रम सेहो अवरोध पहुँचओने रहैक । गाम, वन्धु-वान्धव, स्वजन-परिजन सभकेँ त्यागि कए अपनाकेँ एकलेखेँ शून्य बना कए ओ आश्रमवासी बनि एहि अरण्यमे आएल छल । आब आश्रमोक जीवनकेँ त्यागि देबए पड़लैक । सांसारिकताक न्यूनीकरण कतेक तक सम्भव भ' सकैत अछि ? आब आकाश ओकर छादन, वायु पहिरन आ कन्दमूल ओकर स्वल्प भोजन भ' गेल छलैक । शरीर एक गोट महान पराजयक तीत स्वाद ओकर जिह्वामे साटि देने रहैक, तँए आब सोमदत्त शरीरकेँ अन्तिमधरि पराजित कइए क' छोड़त ! इएह प्रतिज्ञासँ ओ गृहत्यागी आ फेर आइ आश्रमत्यागी भ' गेल छल । ओकर यात्रा एक गोट महाभिनिष्क्रमण छलैक – उद्योग पर्वक यात्रा, दैवी शस्त्राशस्त्र संग्रहलेल वशिष्ठद्वारा प्रतिपादित ब्रह्मतेजक आर्जन आ आध्यात्मिक शक्तिक सङ्गठनक हेतुक यात्रा ।

जाहि निष्ठासँ प्रेरित भ' क' सोमदत्त आश्रमक जीवन तककेँ त्यागएसँ कनेको विलम्ब नहि कएलक ओ असत्य कोना भ' सकैत अछि ? कोन अज्ञात शक्तिसँ चालित भ' सोमदत्त माता-पिताक चरण स्पर्श क' बिना कोनो दुविधा सोझेँ घरसँ निकलि गेल ? जे समाजक सुरक्षामे रहैत अछि, जकरा घरक छार रौद आ पानिसँ बचबैत छैक आ जे एक गोट सुनिश्चित आयस्तासँ पेट पोसि कए रहैत अछि तेहन सामान्य मनुक्ख सोमदत्तक प्रेरणाक मर्म कोना बुझि सकतैक ? जकरा सांसारिक मनुक्ख

बहुमूल्य बूझि हृदयसँ सटने रहैत अछि तकरा सोमदत्त मूल्यहीन माटिक ढ़ेला जानि लतिआ कए चलि देलक । के बुझि सकतैक ? हमसभ बहुत जोगी-भिक्षार्थीकेँ पूरा देह भस्म रगड़ने घुमैत देखैत छी । सामान्य बुझाइत अछि, आ तँए त्यागक एहि रूप प्रति मनमे कोनो उत्सुकता नहि होइत अछि । एखनो संसारमे एहि मार्ग पर अविचलित आस्थासँ गृहत्यागीसभ रने-बने बौआइत रहैत अछि । एहि संसारमे एहन त्यागक रूप किए होइत छैक ? वर्तमान तक किए एकर परम्परा निरन्तरता पओने छैक ? डूबैत प्रकाशक सन्ध्या काल समाज दिस पीठ सोझा कए निकलि जाएक प्रवृति किए अएलैक ?!

ई त ठीके जे सोमदत्त किरातबालासँ पराजित भ' मर्माहत छल । ओकर महान आस्था पर एक गोट ज्ञानहीन अनार्यबाला एतेक पैघ आघात कएलकि जे ओकरा भीतर तक लागि गेल छलैक । ओकर एखन तकक ज्ञान आ संयमक तपस्या एहन शुष्क तृणसन अकिंचन रहैक जे सुम्निमाक अग्नि स्पर्शसँ सोझेँ धू-धू कए जड़ि कए छाउर भ' गेलैक । की ओ एहि पराजयकेँ सहजहिं बिसरि जाओ ? आ कि एतए ब्राह्मणदर्प कुण्ठित भ' प्रतिकारक उपाय कए रहल छैक ? त की बाह्मणत्व केवल तीक्ष्णतम् अहं मात्र अछि ? पिजाओल अहंकार भाव मात्र ?!

तखन तपस्याकेँ अहङ्कार आर्जनक रीति मात्र कहलजाय ? की ई सभक माथ पर उठल दण्ड सन अहंके जागृति मात्र अछि जे एहि प्रति समुचित विनीततासँ नहि झुकएबला माथकेँ श्राप द' दग्ध करैत रहैत अछि ? तपस्यासँ ऋषिसभमे सुराएल अहं आ ओहि अहंके रक्षार्थ ब्रह्मतेजक सिवाय आओर की भेटलैक ?!

यदि इएह त त्याग-तपस्या इत्यादि की मिथ्याक वरण मात्र थिक ? की एहिमे कल्याण भावना छैहे नहि ? यदि एहिमे गर्वक प्रेरणा छोड़ि किछु नहि छैक त मनुष्यक मानव-स्तरसँ उपर उठक एकर लक्ष्य नहि छैक सेहो स्वीकारए नहि पड़त ? आ तखन, यदि त्याग आ तपस्या नहि छैक त मानव-प्रगतिक आधार की छैक ?!

सोमदत्त अहं कुण्ठित हएबाक बोध नहि कएलक । ओ पराजित भेल से अवश्य अनुभव कएलक आ विक्षुब्ध सेहो भेल, मुदा ओ एहिसँ इहो जानएमे समर्थ भेल जे ओकर तपस्या कदाचित् कतेक अपर्याप्त छैक । ओकरा अपन अध्ययन आ ब्राह्मण परम्परा बतोने छलैक जे यथार्थ सुख शरीरमे निवास करएबला तत्व नहि छैक, ओ त ओहि भावनामे निवास करैत छैक जे कर्तव्यपालनसँ जागृत होइत छैक । कर्तव्य थिक उच्चतर प्राप्तिक प्रेरणा पाबि चलल डेग ! कोनो प्राप्ति बिनु मूल्यैँ उपलब्ध नहि होइत छैक । ओ मूल्य थिक शरीरक सतत दान । यएह ओ मूल्य थिक जे लोक अपन शरीरकेँ क्षत-विक्षत क' क' संज्ञाशून्य बना कए उऋण होइत अछि । महत्तर प्राप्तिक लेल शरीरक समस्त मांगकेँ आ समग्र चेष्टाकेँ निःशेष करबैं त तपस्या थीक !

* * *

३

आश्रमसँ निकलैत क्षण सोमदत्त आस्थाक विजयकेर स्वप्न ल' क' निकलल छल । मनमे आस्थाक प्रेरणा रहैक । मुदा खाली एतबे टा नहि रहैक ओकर मनमे, अनजानेमे सुम्निमा सेहो हृदयमे बैसल संगे जा रहलि रहैकि । मनमे जमल वएह मूर्तिकैं त मेटबक रहैक ओकरा ! एखनुक तपस्याक लक्ष्य ओहि वाञ्छाकैं निर्मूल करब रहैक जे सुम्निमाक रूपमे सुइया जेकाँ ओकरा मर्मकैं चुभिया कए गड़ोने अगिओने जाइत रहैत रहैक । एखनुक तपस्याक प्रारम्भ ओही मूर्तिकैं हृदयसँ निर्मूलसँ उखारि फेकए लेल छलैक ।

आश्रमसँ निकलि कए सोमदत्त अतिशय कठोर जीवनमे प्रवेश क' लेलक । निराहार, निर्जल, वाजपेयी भ' क', शीतकालमे कैलासतीर्थक मार्गक मानसरोवरमे जलमे डुबि कए, ग्रीष्मकालमे हिङ्गलाजतीर्थक मरुभूमिमे पञ्चाग्नि बारि कए – ओ तपस्या करए लागल । कहिओ ओ सूर्यक आतपमे देहपाक करए त कहिओ जलकुण्डमे शरीरकैं डुबा कए जल-योग धरए । कहिओ समुद्री चट्टान पर पद्मासन कसि तपस्यामे एना रत भ' जाए जे समुद्रक नूनगर पानि आ वायुसँ ओकर देह पखराइत-पखराइत चाम पर कदइ जमि जाइक आ सीपी, शम्बूक, कर्कट, शैवाल शरीरमे सटि जाइक ।

अपन प्रत्येक प्रयासक उपरान्त सोमदत्त अपन मनमे भीतर निहारए जे कतहुँ सुम्निमाक कोनो अवशेष बाँकी रहि त नहि गेल छैक ? आ एहि

तरहेँ करैत ओ योगीक रूपमे संसारभरि बौआइत आ घुरैत रहल । कतहु लोक ओकरा सनकाह कहलकैक, कतहु नेनाभुटका ओकर डराओन शरीर देखि भागि कए नुका जाइक त कतहु ओ महात्मा जानि पुजलो गेल । ओकर शरीर सुखा कए देहक चमड़ी छिलका सन बनि गेलैक । ओकर देह चामसँ लपेटल कङ्काल जेकाँ देखाइक । इनारसँ अबैत बिम्ब जेकाँ आँखिक स्थान पर दू गोट खधियासँ टिलपिल ज्योति बहराइत बुझाइक । गामघरमे कतेक त देखतहिं भागि जाइक मुदा केओ-केओ दैवी तेज कहैक आ श्रध्दासँ झुकि जाइक । माथ पर सुखल पोआर सन गुड़िआएल जटाजूट रखने जखन ओ चलैक त रसरिक्त ठेहुन आ जोड़सभक कारणेँ खट-खट आवाज अबैक । त की एहनो अवस्थामे मुदा सुम्निमाक पछोड़ छूटल रहैक ? यदाकदा पीड़ासँ ओ छटपटाइत बकए,– "हे भगवान, एहि धकधकीकेँ रूकएधरि सुम्निमा जान नहि छोड़ति !"

आ फेर ओ आओर घोरतम् तपस्या प्रारम्भ क' दैत छल । कए बेर त बेहोश तथा प्राणान्त होइत-होइतक अवस्थामे धार्मिक जनसभ ओकर सेवा क' क' ओकर शरीरमे पुनः प्राणक संचार कएलखिन्ह । एक बेर वनमे ओ दीर्घ ध्यानावस्थामे स्थिर भ' गेल आ देहकेँ दिबाड़ छापि देलकैक । लोक कहैत छैक जे कोनो राजकुमारीक कौतुक पादप्रहारसँ ध्यानावस्थित सोमदत्त प्रकट भेल रहए । एना विभिन्न प्रयोग आ घोरतर तपस्यासँ सोमदत्त अपनाकेँ वासना शून्य करैत गेल ।

एक दिन ओकरा ओकर अपन तपस्या सफल भेलैक से अनुभूति भेलैक । तखन ओ गङ्गाद्वारमे गङ्गास्नानो परान्त बड़ी कालसँ पद्मासनमे निरन्तर ध्यानमग्न छल । सूर्यक प्रथम किरण संगहिं आँखि खुजि गेल रहैक । लगलैक नदी आ पर्वतक सकल दृश्य शुचिमय धोएल पवित्र छैक । शान्त वातावरणमे गङ्गाक कलकलाइत ध्वनि मात्र सुनाइत रहैक । आँखि खुलितैँ ओ देखलक जे एक गोट अलगे किरणपुञ्ज घाट लग लहरिक संग आलोड़ित होइत रहैक आ जलक ओहि आलोड़न पर सूर्यक किरणपुञ्ज स्वर्णकलश सन आकृति सृजित करैत रहैक । एहिसँ ओकरा परमशान्तिक बोध भेलैक । विशेष आनन्दक अनुभूतिक प्रसन्नतासँ ओ उदिप्त भ' गेल ।

तखने ओ एक गोट नारीकण्ठक स्वर सुनलक,– "तापसी, एम्हर नहि देखू । हम स्नानार्थ जलमे पैसल छी, नग्न !"

तखन सोमदत्त देखलक जे जल आलोड़न त एक गोट नग्न बालाक जलक्रिड़ाक परिणाम छल । आ ओ जे काञ्चनप्रभा देखलक से विकरित सूर्य किरणपुञ्जक प्रभाव छलैक । सोमदत्त बाजल,– "हमर चक्षु केवल जलराशि आ सूर्यक किरण देखि रहल छल, बाले ! अहाँ निःशङ्क उदकक्रिड़ा करु । तापसीक चक्षु अहाँक शरीर ग्रहण नहि करत !"

जेना ओ पहिने करैत रहए, सोमदत्त तत्काल अपन हृदयमे सुम्निमाकेँ तकलक । ओकर हृदय रिक्त रहैक – एकदम शून्य आ खोधरि ! ओकरा लगलैक, आब ओ सुम्निमाक स्मृतिसँ निर्विकार अछि । कनेक काल ओ सुम्निमा-शून्य हृदयसँ विकार रहित दृष्टियेँ किशोरीक जलक्रिडा सेहो देखैत रहल । ओकरा लगलैक ओकर तपस्या सफल रहलैक । ओ मृगचर्म आ कमण्डल उठओलक तथा उदयाचलक बालसूर्यकेँ नमन करैत बाजल,– "हमर तपस्या सार्थक भेल, हम जीतेन्द्रिय भेलहुँ । ओ तत्क्षण आश्रम दिस प्रस्थान कएलक ।

सभतरि गुल्ठिआएल शरीरेँ एक दिन जखन ओ आश्रमक निपल प्राङ्गणमे उपस्थित सोझ ठाढ़ भेल, ओकर बृद्ध माता-पिताक क्षीण दृष्टि ओकरा चिन्हएसँ असमर्थ रहैक । ओसभ अपन पुत्रकेँ चिन्हए नहि सकलथि । कए वर्षक बाद घुरल अपन पुत्रकेँ ओसभ राति बिताबए आएल कोनो बृद्ध तापसी बुझलन्हि । सूर्यदत्त स्वागत करैत कहलखिन्ह,– "अतिथिदेव, अहाँक स्वागत अछि । कतएसँ अएलहुँ ? अपनेक परिचय ?"

सोमदत्त अपन निहुरल डाँड़केँ हाथक बलेँ सोझ करैत अङनेसँ बाजल,– "पूज्य पिताजी हमरा नहि चिन्हलहुँ ?" ओ लगमे जा क' दुनूक चरणमे अपन जटा-मण्डित माथ टेकैत नमन कएलक । माता-पिता गद्गद भ' बेर-बेर ओकर माथकेँ सुँघैत रहलखिन्ह । पुत्र स्नेहसँ हुनकासभक आँखि नोरा गेलन्हि ।

सोमदत्त बाजल,– "तात ! तपस्यासँ इन्द्रियजयी भ' क' अएलहुँ अछि । इन्द्रिय पर पूरा विजय प्राप्त कए घुरलहुँ अछि ।"

सूर्यदत्त आ हुनकर पत्नीक आँखिसँ नोर खसैत रहलन्हि आ कहलखिन्ह,– "पुत्र, अहाँसँ हमरासभक यएह आश छल !"

पुत्रक पुनर्प्राप्तिसँ बृद्ध दम्पत्ति अह्लादित रहथि । आ ओह ूपर अपन आकांक्षा अनुरूप तापसी पुत्रक रूपमे ओकर विकास देखि हुनकरसभक आन्तरिक सन्तोषक सीमा नहि रहलन्हि । जखन सोमदत्त भोरे-भिनसर विभिन्न योगमुद्रामे निर्निमेष चक्षुसँ सूर्यक किरण पान करैत त्राटक करैक, ओकर दुबर-पातर शरीर तथा मुँह पर पड़ैत सूर्यक आभाकेँ लक्षित कए ओकर जननी कहथिन्ह,– "हमर पुत्रक मुँह तपतेजसँ उदिप्त अछि ।"

जिह्वाकेँ कण्ठक तर मस्तकक ठीक नीच्चा ल' जा कए अमरत्व रसक एकान्त आस्वादनमे लीन सोमदत्तकेँ देखि गर्वसँ रोमाञ्चित सूर्यदत्त कहथिन्ह,– "ब्राह्मणी, ई असाध्य खेचरी मुद्रा सेहो पुत्र सोमदत्त सहजसाध्य क' लेने अछि ।"

पुत्रसँ प्रति दिन आत्मा सम्बन्धी प्रवचन आ वेद-उपनिषत् तथा अन्यान्य धर्मग्रन्थक उल्लेख-उदाहरण सहित विद्वतापूर्ण विचार-विन्दुसँ पूर्ण परमात्माक व्याख्या सुनि कए मायकेँ अपन कोँइख धन्य लगन्हि । पिता अपन पितृत्वक सार्थकताक अनुभूति करथिन्ह । ओसभ एक-दोसरकेँ देखि कहथिन्ह,– "सोमदत्त हमरासभक समस्त कुलकेँ सहजेँ तारण क' लेत ।"

मुदा, एकटा चिन्ता हुनकासभकेँ घेरने रहन्हि – अपन विवाहक प्रति पुत्रक नितान्त विराग । सूर्यदत्त चिन्तित भ' पत्नीकेँ कहलखिन्ह,– "सोमदत्तक बाद की हमरासभक कुल निर्मूल भ' जाएत ?"

पत्नी अपन पाकल केश पर हाथ राखि कहलखिन्ह,– "यदि हमर ासभक कुल अही पुत्रमे शेष भ' जाएत त पितृलोकनि अपन अंश कोना पओताह ?"

एक दिन वृध्द माता किञ्चित आशंका आ संकोचसँ सोमदत्तक समक्ष अपन बात रखलखिन्ह,– "पुत्र सोमदत्त, आब तोरा विवाह करक चाही ।"

सोमदत्त अनुत्सुकतासँ माय दिस तकैत विरक्तिक स्वरमे बाजल,– "माता, हमरा विवाहक कोन प्रयोजन ?"

उत्तर पिता देलखिन्ह,– "सन्तान उत्पत्तिक लेल विवाह धर्म-अनुष्ठान अछि, पुत्र !"

सोमदत्त बाजल,– "हम त आजीवन ब्रह्मचारी रहक विचार कएने छी ।"

"वत्स, कर्तव्य हेतु कएल गेल विवाह निर्दोष आ अपितु धर्म प्रेरित सेहो अछि ।"– सूर्यदत्त कहलखिन्ह आ माय ओहिमे जोड़ैत बजलखिन्ह,– "प्रेतयोनि आ पूतनर्कसँ केवल पुत्र उद्धार कए सकैत अछि । सोमदत्त तोरा त समस्त ग्रन्थक ज्ञान छह ।"

सोमदत्त अत्यन्त उदासीनतासँ ओढ़ल कम्मल हटा कए अपन शरीर देखबैत बाजल,–"पुण्यमयी माता, ब्रह्मचर्य साधनाक क्रममे हम कोन-कोन तपस्या नहि कएलहुँ ? अपन शरीरकेँ काटि-काटि क' मांसखण्डसँ अग्निमे आहुति सेहो देलहुँ !"

सोमदत्तक सौंसे शरीर घाओक खतसँ भरल रहैक । सोमदत्तक पूरा देहमे घोर तपस्याक अचिन्त्य कठिनताक चिन्ह देखि कए कनेक कालधरि त माता-पिता स्तब्ध भ' गेलखिन्ह । मुदा फेर, स्तब्ध शान्तिकेँ भङ्ग करैत विनयक स्वरमे सूर्यदत्त कहलखिन्ह,– "पुत्र कर्तव्य पालनक उद्देश्यसँ पत्नीसमागमसँ ब्रह्मचर्य खण्डित नहि होइत छैक । त्याज्य त केवल वासना अछि ।" माय सेहो अनुनयक स्वरैं कहलखिन्ह,– "तोरा मात्रहिं एक गोट सन्तान प्राप्तिक लेल अपने सनके तापसी ब्राह्मणीक पाणिग्रहण करक चाही ।"

सोमदत्त क्षीण स्वरमे बाजल,– "एवमस्तु !" ओकर वाणीमे कामना आ उल्लासक कतहु कोनो सूक्ष्मातिसूक्ष्म चेन्ह नहि रहैक । मुदा वएह छोट स्वीकृतिसँ सोमदत्तक जीवन-यात्रा आगाँ बढ़ि जाइत छैक । ओकर स्वीकृति पितृ ऋणसँ उऋण हुअए हेतु लक्षित रहैक । विवाहक सामान्य

शारीरिक हेतुसँ पृथक प्रेरित भ' क' सोमदत्त माता-पिताकेँ "एवमस्तु"क वचन देने रहए ।

किछु दिनक उपरान्त एक गोट ब्राह्मण दम्पत्ति अपन कन्याक संगहिं ओहि आश्रममे अएलथि आ सूर्यदत्तक परिवारक आतिथ्य ग्रहण पश्चात् ओ अतिथि ब्राह्मण अपन यात्राक लक्ष्य सुनबैत कहलखिन्ह,– "अपनेसभक उच्चकुलीन ब्राह्मण परिवारसँ सम्बन्ध स्थापित करए हेतु हमरासभ अपन कन्याकेँ ल' क' अपनेसभक आश्रममे आएल छी । हमरासभक सुलक्षणा कन्या ब्राह्मणोचित शिक्षा-दिक्षासँ सम्पन्न अछि ।" सूर्यदत्त हर्षित भ' गेलाह । ओ कहलखिन्ह,– "अतिथि देव हमरासभक लेल सेहो ई सम्बन्ध कल्याणकारी रहत से लगैत अछि । धर्मशास्त्र अनुसार पुत्र सोमदत्त लेल अपनेक सुलक्षणा कन्याक याचना करैत छी ।"

एम्हर ई दू दम्पत्ति वैवाहिक चर्चामे लागल रहथि आ ओम्हर एहिसभसँ निःस्पृह सोमदत्त तथा ओ अतिथि कन्या पृथक विषय पर गप्प-सप्पमे रहए । सोमदत्त विवाहक प्रति नितान्त अनाग्र भावसँ बाजल,– "जीव आ आत्माक द्वैतभाव अन्ततः परमात्मामे जा क' लुप्त भ' जाइत छैक ।"

कन्या मधुर शब्दसँ समर्थन कएलकैकि,– "भेददृष्टि अज्ञान दृष्टि थिक ।"

ओम्हर माय-बाप विवाह-सम्बन्धकेँ विधिपूर्वक स्थिर करैत रहथि आ एम्हर लगेमे बैसल भावी वर-वधू कोना अनेकता यथार्थताक विभिन्न अंश छैक आ जे कोना एकता निराकार तथा शून्यक पर्यायवाची अर्थ थिकैक तकर प्रतिपादन करैत रहए ।

विवाह सम्बन्धी वार्ता सम्पन्न भेल । कन्याक पिता कहलखिन्ह,– "शुभस्य शिघ्रम् ।" पुत्रक पिता ओकर समर्थन कएलखिन्ह,– "हमरो यएह विचार अछि ।"

ओम्हर सोमदत्त अतिथि कन्याकेँ कहैत रहैक,– "शरीर स्वल्पजीवी तुच्छ मांसपिण्ड अछि ।"

कन्याक विचार सेहो ओहने सदृश्य छल,– "श्वाससँ फुलैत पानिक बुल्बुल्ला सन !"

दुनूमे सहमति रहैक – शरीरक विकारसँ आत्मा जतेक असंलग्न तथा शुध्द रहए सकत ततबहिं परमात्मासँ अपनाकँ आत्मसात करएमे समर्थ हएत । उएह त मोक्ष छैक । आत्मा आ परमात्माक एकाकारक स्थिति ।

पराते भने वैदिक धर्मानुसार स्थापित अग्निवेदीक परिक्रमा कए शास्त्रोक्त विधिसभसँ आयोजित अनुष्ठानद्वारा ओ दुनू पति-पत्नीमे परिणत भ' गेल ।

विवाह सम्पन्न भेलाक बाद सूर्यदत्त अपन पुत्र सोमदत्तकँ कहलखिन्ह,– "पुत्रक प्रति हमर मुख्य आ अन्तिम कार्य आइ समाप्त भेल । आब अहाँ अपन पितृक प्रतिक कर्तव्य करब ।"

विवाहोपरान्त वृद्ध दम्पत्तिद्वय अपन ऐहिक कर्तव्यक परिसमाप्तिक बाद सन्यास दिस ध्यान देबए लगलाह । एक दिन सोमदत्तक कुटी आगाँ आबि कए ओसभ कहलखिन्ह,– "आब हमरासभ चारु गोटा विदा भ' क' उत्तरायण पथ दिस जाइत छी । सन्यासी भ' क' योगद्वारा प्राण विसर्जन करक शास्त्रमे लक्षित आयु भ' गेल अछि । ... योगनान्ते तनुत्यजेत ।"

नव विवाहित वर-वधू अपन पूज्यपाद पितृ आ मातृसभक चरणमे माथ नवओलक । ओकरासभक माथकँ चुमि कए वृध्दसभ आशीष देलखिन्ह । जाइत-जाइत सूर्यदत्त कहलखिन्ह,– "सोमदत्त शारीरिक सुखकँ त्याग क' क' तपस्यामे फलीभूत भेल छह । अन्त तक धर्म नहि छोड़िहह ।"

सोमदत्त कहलकन्हि,– "सुखक भावना हमर कल्मष दीर्घ तपस्यामे भस्म भ' गेल अछि । तपक बाद आब हमरामे शुध्द कर्तव्य तथा धर्मक प्रेरणापुनीत सुवर्णखण्ड मात्रहिं शेष अछि ।"

वृद्ध माता-पिताक हिमालय यात्रा पश्चात् सोमदत्त आ ओकर पत्नी पुलोमा आश्रमक प्रधान कुटीमे चलि आएल । दुनू तपस्वी ब्राह्मण

रहए । ओकरासभक अधिकांश समय धर्मशास्त्रानुसार निर्दिष्ट दैनिक कार्यसम्पादनमे व्यतीत होइक । ओसभ भोरेसँ वैदिक अनुष्ठान तथा यज्ञादि कार्यक्रममे संलग्न भ' जाय । यज्ञक अग्निसँ उतप्त मुँहें धुवाँसँ पिराएल आँखि पोछैत पुलोमा ब्राह्मणी दुनूक लेल स्वल्प भोजन रान्हए, आ पतिक उच्छिष्ट भोजनक एक-दू कौर घोंटि अपन पतिक कोठरीमे पहुँचए । दुनूक दिन धर्मग्रन्थक अध्ययन-पाठमे बिति जाइक ।

सन्ध्याकालीन धार्मिक अनुष्ठान क' क' स्वल्प भोजन पश्चात् ओसभ दीपक धूमिल प्रकाशमे धर्मग्रन्थक पाठ करए । एहि क्रममे पाठमे निहित सत्यासत्यरूपक व्याख्या सेहो होइक । पुलोमा स्वयं पण्डित नारी रहए, तँए अध्यात्मवादक सूक्ष्मातिसूक्ष्म अर्थ आ व्याख्या करएमे सोमदत्तक यथार्थरूप अर्धाङ्गिनि भ' गेलि । कोनो-कोनो दिन त अध्ययनक तन्मयतामे समयक ज्ञाने नहि रहैक । दीपक तेलक समाप्तिपर ज्ञान होइक जे रातिक अबेर भ' गेलैक आ ग्रन्थाध्ययनसँ माथ उठा कए सोमदत्त कुशकखण्डसँ बाती ससारैत पत्नीकेँ सम्वोधित करैत कहैक,– "आब भ' गेलैक, ब्राह्मणी ! शैय्या समय भ' गेल । प्रकाशक आवश्यकता नहि छैक । 'पूर्णात् पूर्णमिदम'क व्याख्या काल्हि हएत । आब अहाँ सुतए जाउ ।"

पुलोमा उठि कए अपन कुशासन मोड़ि भीतमे ठाढ़ क' पतिक लेल बड़का कुशासन ओछाए ओहि पर एक गोट कम्मल बिछा दैकि आ सोमदत्तक चरणमे माथ टेकि विदा होइकि । पति गद्‌गद् भ' आशीर्वाद दैक,– "भाग्यवती भवः, कल्याणी !"

पुलोमा अपन कोठरीमे कुशासन पर कम्मल बिछाए पहिने किछु श्लोक पाठ करैकि आ तखन जा क' सुतैकि । ओम्हर सोमदत्त सेहो पहिने किछु श्लोक पाठ करए तकर बादेँ सुतए । दुनूकेँ अपन जीवन सार्थकताक बाटमे अछि से जानि सन्तोष रहैक ।

एक दिन सबेरेँ सोमदत्त शैय्यासँ उठल त ओकरा नित्य जेकाँ कुटीक असोरा, आङ्गन आ देहरि निपल-पोतल साफ-पवित्र नहि लगलैक । पतिक जागएसँ पहिने पुलोमा ई काजसभ सम्पन्न क' लैति छलि ।

ब्राह्ममहूर्तसँ पहिनहिं पुलोमा उठि स्नानार्थ कोशी नदी पहुँचि स्नान तथा सन्ध्याअर्चनादि दैनिक काज सम्पन्न कए गोशाला पहुँचैति छलि । ओकरा देखतहिं कपिला गाइ उठि अंग सोझ करैति ठाढ़ भ' जाइकि । गोशालाकेँ साफ कए पुलोमा कुटीक असोरा, आंगन, देहरि-दुरूखा, तुलसीचौरा आदिकेँ निपिपोति पवित्र करैकि । सोमदत्त उठए त पत्नीक गृहकार्य देखि सन्तोष होइक । मुदा, ओहि दिन जखन भोरे आङ्गन आदि निपल नहि बुझएलैक त ओ आश्चर्यित भ' पुलोमाकेँ बजोलकैक,– "पुलोमा, ब्राह्मणी !"

पुलोमाक क्षीण स्वर गोगृहक पाछाँ जंगल दिससँ अएलैक,– "देव, हमरा रात्रिक अन्तिम प्रहरसँ रजोदर्शन भ' गेल । तँए, विधि अनुसार गुप्तवासमे छी ।"

सोमदत्तकेँ आओर किछु पुछक आवश्यकता नहि बुझएलैक, ओ कमण्डल, कुशासन आ धौत-वस्त्र ल' क' कोशी दिस बढ़ि गेल ।

चारिम दिन प्रथम प्रहरमे विधिपूर्वक आप्लावनस्नान कए शुध्द पवित्र अहतवासा भ' क' पुलोमा दैनिक कार्यमे संलग्न भेलि । सोमदत्त सेहो कोशीसँ स्नानादि सम्पन्न कए घुरल । ओ पुलोमाकेँ कहलकैक,– "ब्राह्मणी, मलोद्वासा पश्चात् तीन रातिक बाद अहाँ आइ शुद्ध भेल छी । अपन गुरुजनसभक आज्ञाकेँ शिरोधार्य करैत कर्तव्यक हेतु पुत्र प्राप्ति लेल आइ हमरासभक समागमकाल उपस्थित भेल अछि । स्मृति तथा धर्मशास्त्रानुसार एहि कार्यकेँ सम्पन्न करए लेल आइ विशेष याज्ञिक अनुष्ठान सम्पादित करए पड़त ।"

ब्राह्मणी बाजलि,– "आज्ञा पतिदेव ! की छैक अनुष्ठान विधि ? तद्नुसारक काजहेतु हम प्रस्तुत छी ।"

सोमदत्त कहलकैक,– "सर्वप्रथम कामना शून्य हृदयसँ शुद्ध कर्तव्य भावमे स्थिर भ' हमरासभकेँ पुत्रेष्टि अनुष्ठान करए पड़त । एहिमे वासना-कामनाक परित्याग मूल तत्व अछि ।"

"पतिदेव ! काम तथा वासनासँ हम पूर्णतः शून्य छी ।"

"भार्या ब्राह्मणी ! हमरा ई बूझल अछि । आब विधिपूर्व शुद्ध अखण्ड वस्त्र त धारण कएनहिं छी, कि नहि ?"

"जी, आर्य !"

किछुए कालमे पुलोमा ढ़ेकीमे धान कुटि कए कुटीक आङ्गनक मध्य निर्मित यज्ञस्थलमे आएलि । सोमदत्त मन्थन कए शमीक गर्भसँ उत्पन्न अश्वत्थसँ अग्नि प्रगट करओलक । यत्नपूर्वक राखल समिधाक सुखल काठीसभमे अग्नि प्रज्वलित भ' गेलैक । तत्पश्चात् पुलोमा विधिपूर्वक घृत-संस्कार कए कूटल चाउरक खीर रन्हलकि । सोमदत्त विधिपूर्वक अग्निमे तीन बेर आहुति देलक,– "अग्नये स्वाहा, अनुमते स्वाहा, देवाय सवित्रे सत्य-प्रसवाय स्वाहा !" तहिना पुलोमा सेहो होम कएलकि ।

गृहसूत्रक विधिसँ बड़ी कालधरि यज्ञ चलैत रहलैक । लगभग मध्याह्नमे ओसभ यज्ञ सम्पन्न कए आसनसँ उठैत गेल । अग्निक प्रखर ताओ आ सूर्यक रौदसँ दुनूक मुँह लाल भ' गेल रहैक । एक गोट समिधा-काठी लए सोमदत्त होमक भष्म उठोलक आ अपन मस्तक पर होमक प्रसादक रूपमे तिलक लगोलक, पुलोमाकेँ सेहो लगा देलकैक ।

सोमदत्त कहलकैक, – "पुलोमा ! आइ एहि खीर-प्रसादकेँ हमर ासभकेँ भोजनक रूपमे ग्रहण करए पड़त ।"

तकराबाद ओ प्रसाद ग्रहण कएलक आ शेष पुलोमाकेँ देलकैक । तत्पश्चात् हाथ-पएर धोए आचमनसँ अपनाकेँ पवित्र क' ओ पुलोमाकेँ अछिञ्जलसँ 'उत्तिष्ठ' मन्त्रक जापसँ तीन बेर अभिषेक कएलक । शास्त्रोक्त नियमानुसार यज्ञकार्यक सम्पूर्ण विधि सम्पन्न करैत तक तेसर प्रहर लागि गेल रहैक । ताधरि पति आ पत्नी दुनू क्लान्त आ शिथिल भ' गेल छल । दिनान्तक सन्ध्याकाल सम्पन्न करक समय तत्क्षण भ' गेल रहैक । जेना सभ दिन करैत रहए ओ दुनू कोशी तट पर सन्ध्यादि पूजाआजा समाप्त कएलक । पुलोमा गायक दूधमे भिनसर कुटल धानक चाउरसँ खीर रान्हि कनेक गायक घी राखि रात्रिक भोजन प्रस्तुत कएलकि ।

सोमदत्त भोजन करैत बाजल,– "जे पुरुष विमल वर्ण, वेदाध्ययी आ पूर्ण आयुवान् पुत्रक कामना करैत अछि ओ अहिना पाक विधिद्वारा प्रस्तुत पायसक भोजन करैत अछि ।" पुलोमा थाकल छलि,– "स्मृति आ धर्मग्रन्थमे निर्दिष्ट विधि अनुसार हम ई क्षीरोदनम् प्रस्तुत कएलहुँ अछि । उपनिषद् कहैत अछि जे 'पुत्रो मे शुक्लो जायेत वेदमनुब्रूवीत सर्वमायुरियादिति ।', देव !"

"हँ, ब्राह्मणी !"

संध्याभोजन पश्चात् ओसभ दिपशिखाक प्रकाशमे किछु कालधरि नियमानुसार धर्मग्रन्थक पाठ कएलक । शयनकाल भ' गेलैक त पुलोमा उठलि । सोमदत्त कहलकैक,–"पुत्रप्राप्तिक लेल आइ अहाँकें हमरे कुटीमे रहए पड़त ।"

पुलोमा क्लान्त स्वरें बाजलि,– "तथास्तु !"

अपन कुटी दिस जाइत पुलोमाकें सोमदत्त थाकल स्वरें आज्ञा दैत कहलकैक,– "पुलोमा ! अपन कुशक आसन अही कुटीमे ल' आनू । आ देखब, ब्राह्मणी ! शुध्दिक लेल मृत्तिकापात्रमे कनेक गोबर आ गोमूत्र सेहो रहबाक चाही । तामक घैलसभमे स्नान लेल नदीक जल त हएबें करत?"

"हँ, देव !"

भरि दिनक थकैनीसँ क्लान्त सोमदत्तक शरीर कुशक गोनरिपर पसरि गेलैक । अपन आसन, गोबर, गोमूत्र आदि ल' क' पुलोमा पतिक कुटीमे प्रवेश कएलकि । सोमदत्त थाकल सुतल छल । ओ अपन आसन ओछबैति बाजलि,– "आजुक विशेष अनुष्ठानक कारणें शरीर किञ्चित क्लान्त अछि ।"

थाकले स्वरमे सोमदत्त कहलकैक,– "दीप बाहर राखि दिऔक ।"

कनेक कालक बाद सोमदत्त उठि कए गोनरि पर बैस रहल । ओ कहलकैक,– "आब आजुक अनुष्ठानमे पुरुषद्वारा पढ़एबला एक गोट मन्त्र बाँकी छैक । ... ब्राह्मणी ! पुत्र प्राप्ति लेल सम्पन्न हुअएबला शारीरिक

समागममे शरीरतत्व नहि रहैत छैक से जनिते छी । शरीरतत्वक बोधसँ शारीरिक सुखक अनुभव हुअए लागल त समागमक कर्तव्य हेतु लोप भ' जाइत छैक, धर्म विलीन भ' जाइछ आ धर्म विलीयमानक ओहि स्थितिमे खाली पाशविक वृति रहि जाइत छैक ।"

पुलोमा अत्यन्त थाकल छलि, महीन स्वरैं बाजलि,– "हमरा ज्ञान अछि, पतिदेव !"

सोमदत्त थाकले स्वरैं बाजल,– "अहाँक उपस्थेन्द्रिय वेद अछि, आ ओहिमेक मध्य भाग प्रोज्ज्वलित अग्नि । यौन-समागम त खाली धार्मिक अनुष्ठान अछि, वाजपेय यज्ञवेदि रूपस्थी समिद्धो मध्यतः ।"

"जी, पतिदेव !"

सोमदत्त मंत्र पाठ करए लागल,– "अमोऽहमस्मि सा त्वं सा त्वमस्यमोऽहं सामाहमस्मि ऋक् त्वं द्यौरहं पृथ्वी" ... हम प्राण छी अहाँ वाणी । अहाँ वाणी छी आ हम प्राण । हम साम छी अहाँ ऋक्, हम आकाश अहाँ पृथ्वी ..."

पुलोमा अत्यन्त थाकल छलि, तँए मंत्र पाठ दिस ध्यान केन्द्रित नहि क' सकलि । बरू मंत्र पाठक कारणैं ओकरा तन्द्राक अनुभव भेलैक आ ओ एक क्षण औंघा कए झपाएल सन भ' गेलि । तन्द्रेमे ओकरा महीन स्वर सुनाएल सन बुझएलैक,– "देवी ! आउ, सहभावमे सहरेतस् धारण करी ।" मन्त्रोच्चारणद्वारा विधिपूर्वक पत्नीक आलिङ्गन कए सोमदत्त दोसर मंत्रक जाप कएलक,– "विजिहिथां द्यावा पृथ्वी ..." पुलोमाक मुँहमे अपन मुँह सटा कए 'विष्णुयोर्नि कल्पयतु' पढ़ए लागल । तत्पश्चात् ओ पुलोमाक शरीर पर अपन शरीर सुता कए बाजल,– "किरणरूपी कमलक माला धारण कए अश्वनीकुमार हमरामे अभिन्न भ' स्थित होथु आ अहाँ गर्भक आधान करु ।"

शरीर समागमक विधिक सम्पन्नताक बाद दुनू अत्यन्त थाकल सन अनुभूति कएलक । पति कहलकैक,– "पुलोमा ! आजुक पुत्रेष्ठि अनुष्ठान कार्य सम्पन्न भेल । अहाँक शरीर भोगबोध त नहि कएलक ? वासनासक्त त नहि भ' गेलौं ?"

थाकल शरीरकेँ हाथक संबल दैत पुलोमा बाजलि,– "जी नहि, आर्यपुत्र !"

सोमदत्त कहलकैक,– "सएह हएबाक चाही, ब्राह्मणी ! आब अहाँ अपन कुटीमे जाऊ आ स्नानादिसँ शुचि भ' क' शैय्या ग्रहण करु ।"

सभ दिन जेकाँ भोरे पुलोमा उठलि त ओकरा विरक्ति आ थकैनीक अतिरिक्त कोनो परिवर्तनक अनुभव नहि रहैक । सोमदत्तक हाल सेहो ओहने रहैक । पितृऋणसँ मुक्तिक कोशिशमे अपन कान्हसँ एक गोट गहन उत्तरदायित्वक समाप्तिक अनुभव रहैक । एहिसँ ओकरासभमे किछु सन्तोष अवश्य रहैक । आब ओसभ निर्वाध रूपसँ लगनशील भ' परमार्थ चिन्तनमे लागि सकत । पराते भनेसँ ओकरासभक दैनिक जीवन पहिले जेकाँ सञ्चालित भ' गेलैक ।

एक महीनाक बाद फेर पुलोमा सोमदत्तकेँ ऋतुकालक सूचना देलकि आ वनमे गौशालाक पाछाँ तीन दिनक लेल गुप्तवासमे चलि गेलि ।

अखरे आङनमे ठाढ़ सोमदत्त चिन्तित स्वरेँ बाजल,– "ब्राह्मणी ! पितृ ऋणक बोझ अखनो बाँकीए अछि ।"

पुलोमा सेहो विरक्त छलि ।

अहिना पुलोमा बेर-बेर पुत्रेष्टि अनुष्ठानक असफलताक सूचना सोमदत्तकेँ देबए लागलि । दुनू भविष्यक प्रति आशङ्कित आ चिन्तित भ' गेल । सोमदत्तकेँ लगलैक,–'अनुष्ठानक विधिमे कोनो त्रुटि त नहि भेलैक ?'

ओ पुछलक,– "ऋतुकालमे अहाँ काँसक पात्रमे त भोजन नहि क' लैति छिऐक ?"

एहि प्रश्नमे नुकाएल आक्षेप पर पुलोमा कनेक तीब्र स्वरेँ उत्तर देलकैकि,– "आश्रममे काँसक पात्र कतए छैक ? आ की हमरासँ एहन त्रुटिक सम्भावना कोना भ' सकैत अछि ?"

सोमदत्त व्यग्र भ' गेल,– "तखन एना कोना भेल ? त्रुटि त कतहु छैक । अनुसूचिकालमे गोमाता कपिलाकेँ त नहि छू लैति छी ?"

एहि आक्षेपकँ सेहो पुलोमा दृढ़तासँ प्रतिवाद कएलकि,– "हमरा धर्मक साधारण ज्ञान सेहो नहि अछि की, देव?"

जेना-जेना रजोदर्शनकाल आबए लगैक पुलोमा उदिग्न भ' जाइक । सोमदत्त सेहो बेर-बेरक निराशाक कल्पनासँ उदिग्न भ' जाय । जेना-जेना शरीरसमागमक उद्देश्य विफल होइत जाइक, ओसभ यज्ञादि धार्मिक कार्यमे वृद्धि करैत जाए । दैनिक अनुष्ठानक समय सेहो बढ़ि गेलैक । पूजाआजा, जपतप, ध्यान–आराधनाक अवधि धिरे-धिरे बढ़ैत चलि गेलैक । ऋतुदर्शनक चारिम दिन अनुष्ठानक अनेकानेक विधिक पालन करैत-करैत एक्को क्षणक विश्राम नहि होइक । तैओ प्रतिमास विफलताक प्रमाण पुलोमामे चलि अबैक ।

दुःखी मनसँ सोमदत्त मनेमन बुदबुदाएल,– 'पुलोमाकँ कोनो दैवीश्राप त नहि पड़ल छैक ?'

पुलोमा सेहो शरीर आ मनसँ थाकलि सोचए लागए,– 'प्रायः ब्राह्मणकँ पूर्वजन्मक कोनो दोषक कारणेँ पुत्रलाभ लिखल नहि छैक की ?'

ओकरासभक सभ दिन एकहिं रसमे बढ़ि रहल छलैक पूजापाठ, यमनियम, ध्यान-निदिध्यासन, प्रणायाम आदि यौगिक क्रिया तथा विभिन्न यज्ञादि वैदिक अनुष्ठान । दुनू निःस्पृह छल । पुत्र कामना लेल स्थापित सम्बन्धक विफलतासँ चिन्तित छल । आपसी सम्बन्धमे खौंझाहट आ मनोमालिन्यक प्रवेश भ' गेल छलैक । ओना त ओकरा दुनूकँ एक–दोसरक लेल कोनो विशेष प्रयोजनक बोध पहिनहुँसँ कहिओ नहि भेल छलैक, वैवाहिक उद्देश्यक असफलतासँ आश्रमक जीवनमे कटुता देखाए लगलैक । पुलोमा पहिने जेकाँ कम बाजएबाली नहि रहि गेलि छलि । आब ओ चुपचाप पतिक आज्ञाकँ अन्धविश्वासी भ' क' शिरोधार्य करक अवस्थामे नहि छलि । सोमदत्त सेहो अपन अनन्त ज्ञानक बोधमे पत्नीक छोटछिन त्रुटिक प्रति क्षमाभाव राखब छोड़ि देने छल । धर्मग्रन्थ तथा आध्यात्मिक विषयसभ पर ओकरसभक वार्तालाप आब शास्त्रार्थमे परिणत भ' जाइत छलैक । दुनू अपन-अपन पाण्डित्यक परिचय देबए लगैत छल ।

एक दिन 'पूर्णात् पूर्णमुदच्यते' पर ओकरासभमे घोर शस्त्रार्थ भ' गेलैक । वाद-विवादकँ पतिक अधिकार प्रयोग करैत समाप्तिक संकेत दैत सोमदत्त कहलकैक,– "ठीक छैक, पुलोमा ब्रह्मणी ! आब जाऊ आ सुतू । राति बेसी भ' गेल ।"

पुलोमा उठलि त ओकरा सम्बोधित करैत सोमदत्त फेरो कहलकैक,– "अहाँकेँ बुझले अछि जे कोनो-कोनो शास्त्रमे नारीकेँ धर्मग्रन्थक अध्ययन वर्जित कहल गेल छैक । पहिनेक ऋषि-मुनिसभ बुझिए कए विधि-विधान रचने छथि ।"

बाहर जाइति पुलोमा ठाढ़ भ' गेलि । एक क्षण त ओकरा मन भेलैक जे पतिक कथनक उत्तर ओ ठीकसँ द' देअए । ओ कहए लागलि छलि,– 'वेदक बहुत रास ऋचाक रचयिता स्त्री छलीह ।' मुदा अपन पित्तकँ कहुना बलपूर्वक नियंत्रित करैत ओ चुप्पे बाहर निकलि गेलि । नित्यक नियमानुसार पतिक पएर छूबि अपन वासनी ल' क' निकलब ओ तैओ नहि बिसरलि ।

दोसर दिन फेरो अहिना अकारण विवाद बढ़ि गेलैक । 'आत्महन्ता' शब्दक आध्यात्मिक अर्थ पर विवाद भेलैक । सोमदत्त कनेक जोरसँ कहलकैक,– "ईशावास्योपनिषद्मे जे तमससँ आवृत असूर्य तथा अन्धलोकमे 'आत्महन्ता' पहुँचैत अछि कहि कए कहल गेल छैक सेहो कि अपन शरीरक हत्या करएबलाक लेल कहल गेल छैक ?"

पुलोमा सेहो अपन स्थितिमे बिना परिवर्तनके कनेक जोरेँ स्वरमे उत्तर देलकैकि,– "हँ, 'आत्महन्ता' पदकेँ शरीरहन्ताक अर्थमे बुझक चाही । मर्त्यधर्मा शरीरकँ 'हत' अर्थात् मारल जा सकैछ । आत्मा त अविनाशी छैक, मर्त्य नहि अछि ।"

सोमदत्त अपन तर्क प्रस्तुत करैत बाजल,– "ब्राह्मणी ! एतए 'हन्त' मारबक समार्थ नहि अछि । तुल्यार्थक अछि । 'यथा' अर्थात् जेनाक अर्थ जेकाँ । आत्माकेँ नहि बुझि कए जे ओकर उचित सेवन नहि करैत अछि ओ ओकरा मारबे त करैत अछि !"

पुलोमाकेँ पतिक तर्कक काट सोझेँ नहि फुरएलैक । निरूत्तर भ' चुप रहए पड़लाक कारणे भीतरे-भीतर क्रोध जागि गेलैक । सोमदत्त अपन विजयक ओहि क्षणमे तत्काल सन्ध्याकालीन धार्मिक वार्ताक समाप्तिक घोषणा कए देलक,– "आब जाऊ, सुतू ।"

पुलोमा सेहो अही क्षणक प्रतीक्षामे छलि । ओ पतिकेँ प्रणाम करैति अपन कुटीमे गेलि आ ईशावास्योपनिषत् उठा कए पढ़ए लागलि । आइ ओकरा कुण्ठाक बोध भेलैक । पाठमे सेहो ध्यान केन्द्रित नहि भ' सकलैक ।

दिन कहुना बिति रहल छलैक । आश्रम सामान्य ढंगसँ सञ्चालित भ' रहल छल । देखलासँ ओकरासभक जीवनमे कोनो परिवर्तन नहि छलैक । मुदा मानसिक चिन्तासँ सोमदत्त आ पुलोमा दुनू ग्रसित छल ।

कहिओकाल अत्यन्त विरक्तिसँ सोमदत्त कहैक,– "यदि पिता-माताक आज्ञा आ धर्मशास्त्रक आदेश नहि रहैत त हम कहिआ सन्यास ल' नेने रहितहुँ ।"

पुलोमा सेहो कहैकि,– "हमहुँ धर्मोपदेशक बाध्यतासँ एहि वैवाहिक जीवनमे अड़लि छी नहि त तापसी भ' क' वनमे पैसि गेलि रहितहुँ । मासे-मास पुत्रेष्टि अनुष्ठान आब असह्य भ' गेल अछि । कर्तव्य भावनाक कारणे एहि घोर यातनाकेँ स्वीकारैति आबि रहलि छी ।"

सोमदत्त चुप भ' जाइक ।

एक दिन अहिना वार्तालाप शुष्क भ' गेल रहैक । सांझुक भोजनोपरान्त पुलोमा अपन पाठ्यपुस्तक आ आसनी लए सोमदत्तक कुटीमे प्रवेश कएलक त ओ कहलकैक,– "पुलोमा ब्राह्मणी ! हमरा आ अहाँक बीचमे विचार-भेदक कारणेँ ग्रन्थ पाठक अर्थमे सेहो भेद होमए लागल अछि । तँए, सहपाठक तात्पर्य आब नहि रहि गेल । हमसभ अपन-अपन कुटीमे अपनेँ स्वाध्याय करी ।"

पुलोमा बैसलो नहि छलि, हाथक पुस्तक आ आसनी ल' ओ सोझेँ घुमि गेलि आ मनेमन बाजलि,– 'हमहुँ त यएह चाहैत छलहुँ ।' अपन

कुटीमे ओ एक गोट ग्रन्थ खोलि कए पढ़ए लागलि । पुस्तक पर ओकर आँखि गड़ल त रहैत छलैक, मुदा आइ-काल्हि ध्यान केन्द्रित भ' नहि पबैत छलैक ।

एकहिं आश्रमक वासी होइतहुँ आ प्रायसः दैनिक काजसभ संगहिं करितहुँ ओकरासभक बीच दूरी बढ़ि गेल छलैक । शनैः शनैः बहुत-बहुत दिन तक एक-दोसरक बीचमे शब्दक आदान-प्रदानक आवश्यकता सेहो नहि होइक ।

अहिना दिन बितैत गेलैक । एक दिन पुनः पुलोमा फेर रजस्वला भेलि त नियमपूर्वक अपनाकेँ ओ अलग क' लेलकि । आबएबला चारिम दिन अनुष्ठानक पुनरावृतिक कल्पना ओकरा सिहरा देलकैक । ओकरा लगलैक, एहि बेर ओ अपनाकेँ अनुष्ठान लेल कदाचित प्रस्तुत नहि करए सकति । ओ पत्नीक रूपमे आविर्भाव हुअएसँ अत्यन्त असमर्थ भ' गेलि छलि । पत्नीक अपन ओहि रूपक कल्पनासँ ओकर आत्मा आ शरीर जेना सुखा गेल होइक तेना बुझएलैक । घृणाक धार फुटि गेलैक । 'हे भगवान ! एहिसँ त मृत्यु नीक ।' – ओ सोचए लागलि । मन ओकिआए लगलैक । देह कसाए लगलैक ।

सोमदत्त सेहो एहि तात्पर्यहीन अभ्यास लेल अपनाकेँ एकदम तत्पर नहि पओलक । देहक सम्पूर्ण शक्ति जेना शून्य पर चलि गेल होइक । नससभ सिकुड़ि गेलैक । शरीर भर्रा गेलैक । पुलोमा रजस्वला भेलि त ओ तीन दिन तक चुप्पे सोचैति रहलि । कोनो त्रुटि नहि भेल छैक से ओ विश्वस्त रहए,– 'धार्मिक अनुष्ठानमे कोनो त्रुटि नहि छैक । कोनो नियममे कतहु कोनो लेश मात्र गल्ती नहि भेल अछि । यदि पूर्व जन्मक पापक फल छैक त ओ कइयो की सकति ? तँए, हे भगवान ! शिघ्र मृत्युदान द' क' पापमोचन करु !'

गोशालाक पाछाँ पुलोमा पर्णकुटीमे एहि तरहेँ नाना प्रकारक दुश्चिन्तासँ ग्रस्त छलि । एकान्त आश्रममे किछु दैनिक कार्य करैत आन बेर जेकाँ ई तीन दिनक गुप्तवास नहि बितलैक । बिनु काजक एकान्तवाससँ ओकरा

मनमे अनेक विचार खेलए लगैक । बाल्यकालक स्मृति आ पिता-माताद्वारा कठोर जीवनमे बलात् प्रवृष्टिक दबाब आदिक दृश्यक स्मरण ओकरा झकझोरि दैक । तखन ओकरा अपन गामक परिवेश देखाए लगैक । भिल्ल छौंड़ासभसँ फराक राखि ओकर माय कोना अपन सजग दृष्टिमे पालन-पोषण कएलकैकि से दृश्यसभ आगाँ चलि अबैक । एकटा भिल्ल बालक संग घनिष्टता देखि ओकर माय किंचित अधिकारक स्वरमे कहने रहैकि,– 'पुलोमा ! आब कहिओ घरसँ बाहर नहि निकलि !'

पुलोमाक मस्तिष्कमे एहन बहुतो घटनासभ घुमए लागल छलैक । बीच-बीचमे ओकरा चारिम दिनक कल्पनासँ घबराहटि सेहो होइत छलैक,– 'भगवन ! एक बेर माता बनाऊ । आब एहि चारिम दिनक उत्पीडनसँ रक्षा करु !'

ओम्हर चिन्तित सोमदत्त सोचैत-सोचैत आ बैसल-बैसल तनावक चरम अवस्थामे पहुँच गेल छल । पुत्र प्राप्तिमे असफलतासँ ओ मानसिक एकाग्रतामे चलि गेल । ओना एकाग्रतामे भावनाक विकार नहि रहैक, बौद्धिक तन्मयता रहैक । मुदा एकाग्रता अपन अस्तित्व स्वयं बना लैत अछि । व्यक्ति भीतरे-भीतर एकर शिकार भ' जाइत अछि । सोमदत्तकेँ आओर किछुमे कोनो ध्यान नहि रहि गेल रहैक । पुत्र प्राप्तिक मानसिक एकाग्रतासँ ओकर समग्र व्यक्तित्व आक्रान्त छलैक । विचारक समस्त क्षमता लटुआए गेल छलैक । जेना-जेना असफलता होइक, पुत्र प्राप्तिक लक्ष्य दूर बहुत दूर होइत जाइत बुझाइक एकाग्रताक मानसिक काँट आओर भोंकाइत जाइक । ओ सोचए,– 'ई की भेल जा रहल अछि ?'

अही असफलता जनित तीब्रतम एकाग्रतामे ओ सोचलक,– 'ई भूमि मध्य किरात देशक थिक । सम्भव अछि, कोनो अदृश्य शक्ति हमरासभकेँ बाधा उत्पन्न कए रहल होए । आर्यसभक समस्त देवी-देवता आ हुनकसभक शास्त्रमे उल्लेखित कर्मकाणड आ वैदिक ग्रन्थमे निर्देशित तपयज्ञादि विधिपूर्वक कएलोसन्ता कार्यसिद्धि किएक नहि भेल ?' यद्यपि सोमदत्त बुझैत छल जे निष्प्रयोजनीय होइतो धैर्यपूर्वक पुनः पुनः पुत्रेष्टि

अनुष्ठान छोड़ि आओर कोनो विकल्प नहि छैक तथापि एहिसँ ओकर मन वितृष्ण भ' जाइक । एहि वितृष्णासँ कतुहु मुक्ति भेट जाएत से सोचैत ओ किरात देवतासभकेँ सन्तुष्ट करब उचित बुझलक । अपन पुत्रेष्टि अनुष्ठानसँ थकित, उत्साहहीन आ असमर्थ भेलाक बाद किरात देवकेँ तुष्टि करक इच्छा ओकरामे जागृत भेल रहैक ।

चारिम दिन ओ ब्रह्ममुहुर्तमे उठि कोशीतट पर पहुँचल । रातिमे चिन्तासँ निन्न नहि भेल रहैक । कोशीमे स्नानादि कए ओ पद्मासनमे ध्यानमे बैसि गेल । ओकरा अनायास सुम्निमाक बिजुवा बाप मोन पड़लैक । ओकरा बुझल रहैक जे बिजुवा किरातीसभक धर्मगुरु छैक आ किरातीक सभ देवी-देवताकेँ सधने छैक । चारु भरसँ डुबैत व्यक्तिकेँ जेना तृणक सहारा भेट जाइत छैक, ओ बिजुवाक घर दिस अपन पएर बढ़ा देलक ।

किराती गाममे बिजुवाक घर कतए छैक से ओकरा याद नहि रहैक । ओकरा एतबे याद रहैक जे उत्तर दिस ओहि पहाड़ीक पार मध्य जंगलमे जतएसँ यदाकदा धुवाँ उठैत देखाइत रहैत छैक, ओतहिं कतहु किरात गाम छैक ।

ओम्हर ओहि दिन पुलोमा अलसाइति उठलि । शुद्ध होअक रहैक । उत्साह नहि रहितो ओ विवश छलि । उठितेँ ओकर अपन गामक भिल्ल संगी मोन पड़ि गेलैक जे ओकर घरक कोन्टामे पहुँचि कए पुलोमाकेँ बजबैत छलैक,– 'पुलोमा ! गे पुलोमा !!' आ पुलोमाक माय ओकरा खेहारैति बैला दैति छलैकि,– 'भिल्ल भ' क' ब्राह्मण बालिका संग खेलक तोहर दुःसाहस ? भाग !'

कहुना पुलोमा स्नानार्थ कौशिकीतट तक गेलि ।

भिनसरक सूर्यक किरणक संगहिं सोमदत्तक कृश शरीर थकित-क्लान्त किरात गाम लग पहुँचल । ओ अत्यन्त थाकल छल । अपन ठेङ्गा एक कात क' ओ एक गोट चट्टान पर बैस रहल । बाटसँ सटले बामा कात रहैक किरात गाम । एकदम शान्त ! दहिन कात एक गोट चिक्कन

संगमरमरी चट्टान पर अनवरत् झरैत जलप्रपात रहैक । जलप्रपात सघन वृक्षसभक शीतल छाँहमे रहैक । प्रपात ओहि स्थानकेँ आओर शीतल बना कए रखने छलैक । सोमदत्त अत्यन्त कृश छल तकर बोध आ ओ जाहि प्रयोजने ओतए गेल छल से उद्देश्य ओकरा लज्जित कए रहल छलैक तैंए ओ किंकर्तव्यविमूढ़ भ' क' बड़ी कालधरि ओहिना चुपचाप ओहि चट्टानपर बैसल रहल । सूर्यक किरण धिरे-धिरे उपर चढ़ि गेल रहैक । तखने ओ एक गोट युवतीकेँ पानि भरए लेल गामसँ निच्चा उतरैति देखलक । सोमदत्त हड़बड़ाएले उठल । दूरसँ ओकरा ओ युवती सुम्निमा सन बुझएलैक । मुदा ओहि युवतीक कोरमे नेना रहैक । 'प्रायः सुम्निमा नहि अछि । सभ किराती युवतीक शरीर एक्के रंग लगैत रहैत छैक ।'– ओ मनेमन गुनलक ।

सुम्निमाक स्मरणसँ सोमदत्तकेँ आओर ग्लानि भेलैक । युवती अपन घैल प्रपातसँ पानि भरएलेल पाथर पर थापि राखि देलकैकि आ सटलेक शिलाखण्ड पर बैसि अपन बच्चाकेँ स्तनपान कराबए लागलि । सोमदत्तकेँ कनेक कालक बाद बुझएलैक जे ओ अपन शिशुकेँ स्तनपान करबैति एक गोट अपरिचिताकेँ टकटकी लगा कए देखि रहल अछि । ओ हड़बड़ा कए विपरित दिसामे तकैत युवतीकेँ पुछलकैक,– "बिजुवाक घर कोम्हर छैक, किरातबाले ?"

युवती माथ उठा कए सोमदत्तकेँ एक बेर देखलकैक आ फेर अपन बाम हाथसँ स्तनकेँ बच्चा लेल ऊपर करैति पुछलकैकि,– "के छी अहाँ ब्राह्मण ?"

सोमदत्त दोसरे दिस तकैत कहलकैक,– "हमरा बिजुवासँ काज अछि ।"

युवती ऊपर देखबैति कहलकैकि,– "हे वाऽऽऽ ... ऊपर बाम कात ! ऊपर जा क' सोर करिऔक ।"

एतेक कहैत ओ फेर माथ खसा कए बच्चाकेँ ध्यानसँ स्तनपान कराबए लागलि ।

सोमदत्त उठि कए अपन ठेङ्गा लेलक आ गाम दिस प्रस्थान कएलक ।

युवतीक बताओल घरक दुहारि पर पहुँच कए सोमदत्त जोरसँ सोर कएलकैक,– "बिजुवा !"

निच्चा प्रपात लगसँ युवती सेहो सोर कएलकैकि,– "बिजुवा बाबू ! ... देखू, एकटा ब्राह्मण आएल अछि ।"

घरमे बान्हल भोटिया कुकुर सेहो चञ्चल भ' गेलैक । बिजुवा निकलल । एमहर–ओम्हर तकैत पुछलकैक,– "के अछि ? हमरा के खोजैत अछि ?"

सोमदत्त कहलकैक,– "हम बिजुवा !"

"तोँ के छह ? किएक अएलह ?"

सोमदत्त अपन परिचय आ अएबाक प्रयोजन बतओलकैक । बिजुवा आश्चर्यित होइत बाजल,– "सोमदत्त ब्राह्मण ! तोरा बेटी सुम्निमा बहुत दिनधरि खोजैति रहलह । आब त ओकर बिआह भ' गेलैक । छ महीनाक बेटीयो छैक ।"

ओ सुम्निमाकेँ सोर कएलक,– "सुम्निमा ! सुम्निमा !! देखह, तोहर सोमदत्त आएल छह !"

बिजुवा सोमदत्तकेँ कहलकैक,– "ई की भ' गेलह, तोरा ? कतेक लट्टल ? बुढ़ाएल सन देह बना लेलह !"

सोमदत्त माथ निहुरओने ठाढ़ रहल, किछु नहि बाजल । बिजुवा अपन व्यावसायिक अधिकारक स्वरमे पुछलकैक जेना एकटा वैद्य अपन रोगीसँ पुछैत छैक,– "तोँ फेर बेटे किए चाहैत छह ?"

सोमदत्त कहलकैक,– "धर्म निर्वाह लेल । सन्तानक आभावमे पितृसभक उद्धार नहि होइत छैक । सन्तान बिना मृत्युलोकमे अर्जित सभ धर्म निष्फल भ' जाइत छैक । शास्त्र अहिना कहैत छैक ।"

बिजुवा फेर पुछलकैक,– "आ एकर अलावा आओर कोनो ?"

"एकर अतिरिक्त हमरासभक लेल आओर कोनो प्रयोजन नहि ।"

"स्त्री समागममे तोरा ई कहिओ नहि लगलह जे शरीर सेहो भोग करैत छैक ?"

"नहि, कनेको नहि ।"

"त, की तौँ धर्मक लेलेटा बेटा चाहैत छह ? संभोगमे शारीरिक सुखक आवश्यकता कनेको नहि बुझाइत छह ?"

सोमदत्त दृढ़तासँ कहलकैक,– "नहि । भोग आ कर्तव्य ... हमरासभ तपस्यासँ मृत क' नेने छी । हमरासभक जीवनमे आब कर्तव्य उद्देश्य मात्र अछि ।"

बिजुवा गम्भीरतासँ कहलकैक,– "सोमदत्त, तोहर मनुवा तमसा गेल छह ! तौँ ओकरा तपस्यासँ मारक प्रयत्न कएलह !! तोरा मनुवादहमे नहाए पड़तह ।"

सोमदत्त चुपचाप सुनैत रहल । कनेक कालक बाद बिजुवा ओकरा फेर बुझबैत कहलकैक,– "हमरासभक शरीर यंत्र नहि, माध्यम नहि, साधन सेहो नहि । ई अपने साध्य अछि, लक्ष्य अछि । एकर अपहेलन आ उपहास कहुना नहि हएबाक चाही । मनुख यदि रस, भोगवासना, आ सुखसँ शून्य भ' जाइत अछि त शरीरमे जान नहि रहि जाइत छैक । तखन ओ सन्तान जनमा नहि सकैत अछि । शरीर बिना जानक खाली एकटा हथियारे टा नहि छैक । सन्तान त सम्भोगक परिणाम आ प्रमाण छैक । बुझलह, ब्राह्मण !"

तखन तक सुम्निमा सेहो बेटीकेँ कोरमे नेने पहुँच गेल छलि । सोमदत्त आ सुम्निमा एक-दोसरकेँ आश्चर्यमिश्रित दृष्टिसँ कने काल देखतहिँ रहल । सोमदत्त एखन बुझलक जे प्रपात पर पानि भरैति युवती सुम्निमे छलि । एतेक वर्षक पश्चातो सुम्निमाक शरीरमे कोनो परिवर्तन नहि छलैक । तारुण्य ओहिना आ ओहिना चमकि रहल छलैक

कञ्चनप्रभायुक्त सुम्निमाक शरीर ! कोशीतट पर अन्तिम दिन देखल सुम्निमामे एतेक वर्षक अन्तराल पर सेहो वयःवृद्धिक कोनो लक्षण वा प्रभाव नहि बुझाइत छलैक । सुम्निमा संगक दिनसभ ओकर स्मृति-पटलमे नाचए लगलैक । ओ निःशब्द ठाढ़ रहल ।

सुम्निमा शान्ति भंग करैति बाजलि,– "सोमदत्त !"

ओ ओतबे बाजए सकलि । कनेक काल केओ किछु नहि कहलकैक । दुनूकेँ बाजए लेल किछु नहि रहैक । देखा-देखी टा होइत रहलैक । किछु समय पश्चात् सुम्निमा स्नेहपूर्वक महीन स्वरमे कहलकैकि,– "सोमदत्त ! कतेक लटि गेल छह तोँ । केहन सुखल शरीर ! हे भगवान ! हम त तोरा चिन्हए सेहो नहि सकलहुँ ।"

सुम्निमा सोमदत्तक कान्ह पर प्रेमपूर्वक हाथ राखि स्पर्श कएलकैकि । सोमदत्तक सुखल शरीर पर एकाएक सूक्ष्म कम्पनक लहरि चलि गेलैक जेना शरीर सिहरि कए किछु अनुभूत करैत अछि । सुम्निमाक बेटी छातीमे स्तनपान करैत सुति रहलि छलैकि ।

बिजुवा बेटीकेँ कहलकैक,– "सुम्निमा ! सोमदत्त ब्राह्मणक मनुवा तमसा गेल छैक । ओ अपन मनुवाक अपहेलन कएलक, तँए ! ... हँ, सोमदत्त ! मनुवाकेँ जखन दुःख होइत छैक त रुसि रहैत अछि । धीया-पूता सनक स्वभाव होइत छैक एकर । सुम्निमा आब एकर मनुवाकेँ पूजा क' देबए पड़लैक ।"

सुम्निमा अपन सुतल बेटीकेँ सुताबए घरमे गेलि । बिजुवा माथ हिलबैत कहलकैक जेना ओ अपनेसँ बतिआइत होए,– "मनुवा माने शरीर । एकर उपहास नहि हएबाक चाही, सोमदत्त !" सोमदत्तक मनमे प्रतिवाद करक इच्छा भेलैक जे कहैक कि शरीर त खपटा सन छैक आत्माक । मुदा, ठाढ़ चढ़ाइ चढ़ल थाकल शरीर आ सुम्निमासँ भेँटक कारणेँ अस्तव्यस्त मष्तिस्कमे तर्क करक आग्रह आ शक्ति नहि रहि गेल रहैक ।

बेटीकेँ सुता कए सुम्निमा निकललि । ओकरा मुँहसँ खाली एतबहिँ निकलैक,– "हे दैव ! ई की गति भ' गेलह तोहर, सोमदत्त !"

ओ तारोम-तोड़ प्रश्न करए लगलैकि,– "तोहर बिआह एखन तक नहि भेल छह ? की ब्राह्मणी तोहर देखरेख नहि करैति छह ? नहि त एना किएक ? हड्डी-हड्डी ... ?!"

ओ सोमदत्तक बाँहि पकड़ि कए व्यथित स्वरमे बाजलि,– "हे देवता ! तोरा आहारक कमी छह ! तोरा कोइ स्नेहसँ देखरेख करएबला, किनसाइत नहि भेलह !"

बिजुवा कहलकैक,– "बेटी ! एकरा आओर किछु नहि भेल छैक । ई हठ कएलक । जिद्द पकड़लक । एकर ताल देखि कए शरीर सेहो अड़ि गेलैक । किछुओ नहि ! एकर मनुवा तमसाएल छैक, रुसल छैक । पूजा करए पड़तैक । दोसर कोनो रस्ता नहि छैक ।"

सुम्निमा कहलकैकि,– "बाबू ! जे-जे करए पड़तैक जल्दी क' दहो । एकर हाल नहि देखल जाइत अछि । कना जाइत अछि !"

बिजुवा बेटीकेँ सान्त्वना देलकैक,– "ई त तोरे करए पड़तौक, बेटी ! ... आ एम्हर, की-की करए पड़तौक तोरा से बता दैत छिऔक ।"

सुम्निमा सोमदत्तक ठेङ्गा हाथमे ल' असोरा पर गोनरि बिछबैति कहलकैकि,– "कनेक्के तोँ तावत् ठण्ढ़ा लह, सोमदत्त !"

सुम्निमा सोमदत्तक ठेङ्गा असोरा पर ओङ्ठा देलकैकि आ बिजुवा संगे भीतर चलि गेलि । बिजुवा सुम्निमाकेँ महीन स्वरमे किछु समझबैत रहैक जे सोमदत्त बुझि नहि सकल । खाली समझबैक तेहन आवाज कनेक-कनेक सुनाइ दैक । कनेक कालक बाद सुम्निमा एकटा नम्हर झोरा ल' क' बाहर निकललि आ सोमदत्तकेँ कहलकैकि,– "आब चलह !"

सोमदत्त आश्चर्यचकित रहए,– "कतए ?"

असोरा पर ठाढ़ बिजुवा कहलकैक,– "जाह सोमदत्त ! सुम्निमा संगे निफिकिर जाह ! तोहर ब्राह्मण धर्म नष्ट नहि हएतह ।"

सोमदत्त आश्चर्यसँ ठाढ़े छल कि सुम्निमा आग्रह कएलकैकि,– "चलह ने सोमदत्त ! देरी नहि करह !"

कोन आ केहन क्रियाक लेल सुम्निमा बजा रहलि छलि ? सोमदत्तकँ बुझएमे नहि अएलैक । ओकर मस्तिष्कमे उहापोह मचि गेल छलैक । ओतक सभ दृश्य अवास्तविक लागि रहल छलैक ।

बिजुवा भीतर चलि गेल । बाहर सोमदत्त आ सुम्निमा टा छल । ठाढ़ सोमदत्तक हाथ पकड़ि कए सुम्निमा चलए लागलि । सोमदत्तक मन आ शरीर कोनो बिरोध नहि कएलकैक, ओसभ नहुएँ-नहुएँ चलए लागल । सोमदत्तक हाथ सुम्निमाक हाथमे छलैक ।

"तोँ एतेक कोना लटि गेलह, सोम?"– सुम्निमा पुछलकैकि ।

सोमदत्त निरुत्तर छल । सुम्निमा बाजलि,– "बहुत दिन धरि हम तोहर बाट देखिते रहलहुँ ।" तैयो सोमदत्त चुपचाप चलैत रहल, कोनो उत्तर नहि देलकैक । मुदा, सुम्निमाकँ बिसरए लेल ओ तपस्या करैत देश-देशान्तर बौआइत रहल से सभ स्मृतिमे जागि गेलैक ।

सुम्निमाक बोली कहिओ थमएबला नहि छलैक । वएह चाञ्चल्य एखनो विद्यमान छलैक । ओ फेरो पुछलकैकि,– "तोरा एना भेलह कोना ? पूरा शरीर काटल-खूटल ! एना कतए कोना कहिआ घाहिल भेल रहए ?"

कहिओ ओ ओकरे बिसरए लेल अग्निमे अपन शरीरक मांसखण्ड काटि-काटि क' होम कएलक से सोमदत्त सुम्निमाकँ नहि कहलकैक । ओ कोनो मादक पदार्थक प्रभावसँ तन्द्रिल अवस्था जेकाँ सुम्निमाक संगेँ चलैत रहल । सुम्निमा तारम-तोड़ बाजि रहलि छलि, ओकर स्वर लघु जलप्रपात जेकाँ कोनो शीतल एकान्त वनमे छोट-छोट कङ्करसभ खसैत सन लागि रहल छलैक । ओकर कानमे पड़ैत स्वर-लहरीसँ ओ आओर तन्द्रिल भ' रहल छल । सूर्यक उर्ध्वारोही शुभ्र प्रकाश सुम्निमाक प्रपुष्ट चम्पक देहकँ आभासँ भरि रहल छलैक । सुम्निमाक रक्तिम गाल चमकि रहल छलैक । कान्ह तक लहराइत केशक किछु भाग पीठ पर किछु दुनू कात छाती पर स्तनक उपर कुदि रहल छलैक । सुम्निमा एकाएक ठाढ़ भ' सोमदत्तक ध्यान भंग कएलकि,– "एतेक दिन तोँ कतए छलह, सोमदत्त ?"

सोमदत्त एखनो किछु नहि बाजल । कनेक कालक बाद गम्भीर भ' क' उलटे प्रश्न कएलकैक,– "तोँ हमर सहायता कोना करए सकबह ?"

सुम्निमा बाजलि,– "तोँ बजलह त ! .... हमरा लगैत छल तोँ एखनो हमरा पर पिताएल छह आ तहीसँ बाजि नै रहल छह । हमरा मनेमन लागि रहल छल जे बाभनसभ कतेक दिन तक पित्त पोसने रहैत छैक ।" ओ फेर हँसैति बाजलि,– "हँ, आ ई देखहक ने, बाबू हमरा कोन काज जिम्मा लगा देलक ।"

ठमकैत सोमदत्त सुम्निमासँ पुछलकैक,– "तोरो धामीक काज अबैत छौक ?"

सुम्निमा मुड़ी डोलबैति बाजलि,– "नहि ! ... नहि अबैत अछि । हम मौगी छी, बस सोझसँ मौगी ! हमरा किछु नहि अबैत अछि । सोमदत्त, बस हमरा सुम्निमे टा बनए अबैत अछि ।"

"तखन त ...."– सोमदत्त सुम्निमा दिस प्रश्नवाचक नजरिसँ देखैत कहलकैक ।

सुम्निमा कहलकैकि,– "नहि डेराह सोमदत्त ! बाबू कहने छैक जे मनुवादहमे तोरा नहा देबएकैं .... देवी समक्ष तोरा सिंगारि देबएकैं ! तोरा लोक चिन्हए नहि सकओ तेहन रूप बना देबएकैं ... । देखह ने, एहि झोरामे हम सभ किछु अनने छी ।"

सोमदत्तकैं किछु बुझएमे नहि अएलैक । ओकरा लगलैक जेना ओकर माथ काज नहि क' रहल छैक । ओ अपन एखुनका स्थितिकैं विधिक विडम्वना बुझलक । जकरा किछु वर्ष पहिने निर्मूल करए लेल ओ घोरतम् तपस्यामे प्रविष्ट भेल छल । अपन देहकैं सुखओने छल आ आइ वएह नग्न किरात युवतीक पाछाँ-पाछाँ ओ अज्ञात स्थान दिस बढ़ि रहल छल । ओकरा अपन वर्तमान स्थिति आ समस्त वस्तु वास्तविक नहि स्वप्न बुझएलैक । ओ स्वप्नमे विचरण करए लागल । अपन आश्रम आ ओतए प्रतीक्षा करैत ओकर विवाहिता ब्राह्मणी पुलोमा स्वप्नमे देखल स्वप्न जेकाँ मष्तिस्कसँ धूमिल होइत गेलैक ।

कनेक काल अहिना चलैत-चलैत ओसभ गामक सीमा छोड़ि वनमे प्रवेश कएलक । जङ्गल देवदार, चम्पा, उतिस, कटुस, सिस्नु, लप्सी आदिसँ घन छल । सुम्निमा बाजलि,–"आब हमरासभ देवीथान लग आबि गेल छी । चारुकातसँ गाछसभसँ घेरल झाँपल, हे ओतए छैक मनुवादह !"

ओकरासभक गन्तव्य स्थल अत्यन्त रमणीय रहैक । जङ्गलक भीतर निर्मित दोसर जङ्गल – उपवन । हरिअर-हरिअर पातबला घनगर गाछ-वृक्ष तथा झार-झङ्खारसँ झाँपल-तोपल सदासर्वदासँ अखण्ड शान्तिमय ओ स्थल गुप्त एकान्तक लेल सुरक्षित राखल सनक लगैत रहैक । सुम्निमा अपन एक हाथसँ झार-झङ्खार हटबैति सोमदत्तकेँ ओ सुरम्य उपवन देखओलकि,– "देखह, इएह छैक मनुवादह !"

झार-झङ्खारक भीतर खाली स्थल आ तकर मध्यमे उपवनसँ परिवेष्ठित एक गोट जलाशय रहैक । जलाशयक निर्मल पानिक सतह पर गाछसभक डाढ़िसभ चतरल रहैक । पानि पर पड़ैत सूर्यक किरणसँ सोमदत्तक आँखि तिरमिरा गेलैक । मुदा जखनहिं सुम्निमा अपन हाथसँ पकड़ने झार-झङ्खारकेँ छोड़लकि आ झारसभ अपन पूर्ववत् आकार ल' लेलकैक एना बुझएलैक जेना मनुवादहक खुलल द्वार घनगर हरियर डाढ़ि-पातक पर्दासँ झँपा गेल होइक ।

सुम्निमा बाजलि,– "सोमदत्त ! भीतर पैसएसँ पहिने एक बेर पाछाँ त देखह जे अपनेसभ कतेक ऊँच जगह पर चलि आएल छी । ओतए ऊऽऽ ... निच्चा जङ्गलक बीचमे बड़का सिम्मरक गाछ लग ... तोहर आश्रम देखाइत छह । देखलह, हे वाऽऽ .... कोशी जतएसँ ओम्हर घुमैति छैक !"

सोमदत्त घुमि कए देखलक । जतए ओ ठाढ़ छल तकर निच्चा बड़का ढलान रहैक जे दक्षिणभर दूर-दूर तकक जङ्गलमे परिणत भ' गेल रहैक । सुदूर दक्षिणक क्षितिज तक पहुँचल ओहि वन-जङ्गलक विस्तार पर सूर्यक प्रखर किरण फैलल पसरल रहैक । लगैक जेना सम्पूर्ण दुनियाँ शान्त भ' गेल होइक आ सूर्यक प्रखर ताप निच्चाक वन-प्रदेशक सभ ध्वनि दबा देने होइक । सभ किछु निःशब्द भ' गेल होइक । सोमदत्त

ओहि निःशब्द निर्जनतामे केवल अपना लग सटलि ठाढ़ि सुम्निमाक श्वाँसक गरमाहट आ अपन धकधकाइत करेजक धुकधुकी सुनि रहल छल । मध्याह्नक सूर्यक ताप कठोर होइतो उँचाइक कारणे ठण्ढ़ा-गरम मन्द वायु सुम्निमाकँ स्पर्श करैत सोमदत्तकँ समेटैत पूरुब दिस बहैत जा रहल छलैक । ओहि मन्द वायुमे वनस्पतिक संग सुम्निमाक शरीरक गन्ध मिलल रहैक । अनजानेमे बहैत ओहि मन्द वायु संगक ओ मानव-गन्ध आत्मीयताक छोटछिन संसार निर्मित कए रहल छल । सोमदत्तकँ लगलैक, ई जगह अपरिचित नहि अछि ।

सुम्निमा कहलकैकि,— "देखलह, अपन आश्रमक स्थान ?" सोमदत्त बाजल,— "नहि, हम ठेकानए नहि सकलहुँ । विराटता छैक । सभ किछु लोप भ' गेल छैक ।"

सुम्निमा कहलकैकि,— "एक बेर फेरो नजरि बैसा कए देखह । हे वाऽऽ ... सिम्मरक गाछ लग, सोमदत्त !"

सोमदत्त कहलकैक,— "हम त एहि अरण्यक विस्तृत अगमतामे असंख्य वृक्षे टा देखि रहल छी । सभतरि सिम्मरक बेगिन्ती पोरसभ देखैत छी, सुम्निमा ! हम ठेकानए नहि सकि रहल छी ।"

"अच्छा भेलै, भेलै ।"— सुम्निमा बाजलि,— "आब तौँ मनुवादहक वनमे पैसह ।"

सुम्निमा फेरो पहिने जेकाँ हाथ पैसा कए झारसभ हटा कए द्वार जेकाँ बनौलकि । पहिने सोमदत्त पैसल आ तखन सुम्निमा । झार-झङ्खारक द्वार पहिने जेकाँ बन्न भ' गेलैक । जङ्गलक ओहि एकान्तमे ओतए फेर दोसर एकान्तस्थल बनल छल । विराट मातृत्वक भीतर जीवन्त गर्भ-गहवर जेकाँ !

भीतर पहुँचिते सोमदत्त नम्हर साँस लेलक । छातीमे किंचित सौरभमय शीतल वायु भरि गेलैक । ओकर थाकनि सोझेँ मेटा गेलैक । मुँहसँ निकलि गेलैक,— "वाह ! अद्भूत मनोरम स्थल ।"

सुम्निमा कहलकैकि,– "आगाँ चलह ने ! ओहि बड़का पाथर पर बैसि कए शोभा देखह । इएह छैक मनुवादह !"

सोमदत्त विशाल पाथर पर बैसि गेल आ चारुभर देखि कए बाजल,– "चारु कातसँ वनस्पतिसँ सुरक्षित ई सुरम्य दह हमरा माताक गर्भक स्मरण करबैत अछि । सरोवरक जल जीवनरस जेकाँ लागि रहल अछि जाहिसँ शिशु गर्भमे पोषण प्राप्त करैत अछि ।"

सुम्निमा निच्चामे भीड" पर बैसि कए अपन झोरासँ वस्तुसभ निकालि रहलि छलि, सोमदत्त दिस ताकि कनेक विस्मित स्वरमे बाजलि,– "सोमदत्त !"

सोमदत्त पुछलकैक,– "की सुम्निमा ?"

"कथिलैं एहन मुँह बनओने छह ?"

"की सुम्निमा ? केहन मुँह ?"

सुम्निमा बात घुमबैति बाजलि,– "किछु खएबह नहि ? भूख लागि गेल हएतह !"

"एतए भोजनक कोन प्रयोजन ? बहुत निक दृश्य छैक । .... परितृप्ति छैक ।"

"ई भूखे-पिआसे रहि कए देवाकेँ खुशी करक थान नहि छैक । हमरासभक देवा भूखल रहलासँ खुशी नहि होइत छैक ।"

सोमदत्त परिहास कएलक,– "त कोना खुशी होइत छथि ?"

"खा' कए, शरीरकेँ तिरिप्त क' कए । शरीर खुशी भ' जाइत छैक त देवता सेहो खुशी ... !"

सोमदत्तक दृष्टि सुम्निमाक उघार देह पर पड़लैक । स्वस्थ दिप्त सोनक मूर्तिसन पीयर वर्ण, कस्सल, जुआएलि । सोमदत्तकेँ, तखने कनेक कालक लेल, अपन सुखाएल, कारी, चोकटल, ढ़ील, शिथिल चामबला शरीरक बोध भेलैक ।

सुम्निमा हँसैति बाजलि,– "की हौ बाभन ! किरातीक छुअल किछु खाएक नहि चाही से एखन तक तोरा मनमे छहे ?!"

"हँ ऽऽऽ .... ! साँचे, तकर त हमरा ध्याने नहि रहल !"- सोमदत्त फुसफुसाइत कहलकैक ।

सुम्निमा बाजलि,– "मुदा हमरा ध्यान अछि । तोहर धर्म नहि टुटओ तैंए, घरसँ मही आ दूध अनने छी ।"

झोरासँ सुम्निमा मही आ दूधक दूटा ढुङ्ग्रो निकाललकि आ बाजलि,– "आइ हमहूँ तोरे जेकाँ दूध आ मही पीअब ।"

"एक साँझ बभिनियाँ बनए पड़त !"– ओ हँसैति बाजलि,– "देखहक ने ! हमरा बाबू बढ़ियाँसँ समझओलक जे मनुवादहक देवा बड़ कड़ा छैक । तोहर धर्म बिगड़एबला कोनो काज नहि हएबाक चाही । ... तोँ अपन धर्मकेँ कतेक पालन करैत छह से जेना हमरा गमले नहि होए !"

ओ सोमदत्तक आगाँ दूध आ महीक ढुङ्ग्रो परसि देलकै । सोमदत्त भरि मन पीअलक आ झोराकेँ सिरहन्नी बना कए शिलाखण्ड पर पएर पर पएर चढ़ा कए पसरि गेल । ओ पूर्ण सन्तोषक अनुभव कए रहल छल । सुम्निमा कहलकैकि,– "तोँ तावत पड़ह, हम झट्ट द' नहाकए अबैति छी ।"

दहमे सुम्निमा जलक्रिड़ा कए रहलि छलि आ सोमदत्त उलटि-पलटि कए देखि रहल छल । सुखक तन्द्रामे ओकरा आगाँ पहिने-पहिनेक कोशीतट पर सुम्निमाक जलक्रिड़ाक दृश्य उभरैत रहलैक । ओकरा लगलैक जेना सुम्निमा पहिने जेकाँ ओकरा बजा रहलि छैकि,–"सोमदत्त !"

ओ पसरल-पसरल औँघाए लागल । कोशी आ मनुवादह जेना एकाकार भ' गेल होइक ... ओ यथार्थ आ स्वप्नमे अन्तर करएसँ असमर्थ जेकाँ भ' गेल छल । कोशीक बालुक धीपल हवा एतएके शीतलता तककेँ सेहो जेना गरमा रहल होइक; आदि-इत्यादि बातसभ ओकरा मनमे खेलाए लगलैक । पहिने-पहिने ओ आश्रमसँ अपन गाय चरबए लेल जाए त शमीक गाछक जड़िमे बैसि कए सुस्ताए । शमी गाछक जड़ि आ अखुनका

शिलाखण्ड ओकरा एकहिं समान बुझाए लागल छलैक । सभ किछु एकाकार भ' गेलैक । ओ निन्नमे चलि गेल । शरीरमे अवर्णनीय सुखबोधक अनुभव भेलैक । कानमे रहि-रहि कए मधुर स्वर,– "सोमदत्त ! सोमदत्त !! सोमदत्त !!!"– झङ्कृत होइत अनुभूत भेलैक ।

मानव शरीरक गन्धयुक्त वायुक एक झोंक, जे रहैक त उष्ण मुदा सोमदत्तकेँ शीतल आ मनभावन सन ओकरा अपन मुँह पर उतरैत अनुभव भेलैक । ओ निन्नमे बड़बड़ाएल,–"सुम्निमा !"

सुम्निमा अपन मुँह ओकर मुँह लग ल' जा कए कहलकैकि,– "सोमदत्त !"

सुम्निमाक भीजल केशसँ टप-टप दू-तीन ठोप पानि ओकर मुँह पर खसि पड़लैक । सोमदत्त स्वप्नमे मन्द वर्षाक अनुभव कएलक ।

सुम्निमा कहलकैक,– "सोमदत्त ! सोमदत्त !! तोँ त निन्न पड़ि गेलह ।"

सोमदत्तक आँखि खुजि गेलैक । सुम्निमा भीजल शरीरसँ एकदम लगेमे हाथ-पएर रोपने ओकरा उठा रहलि छलैकि,– "सोमदत्त ! सोमदत्त !! आब उठह ने ।"

सोमदत्त अङैठी मोरैत उठल,– "केहन मादक भू-खण्ड छैक ई ! सुन्दर वनस्पतिसँ परिवेष्ठित आ मोहि लेबएबला !! हम त साँचे आनन्दमग्न भ' सुति रहल छलहुँ ।"

"हँ सोमदत्त ! हमहूँ उठबए नहि चाहैत छलहुँ । एकदम मस्त छलह तोँ ! कहिओ एहन निफिकिर निन्न नहि भेल छलह । बेचारा !"– सुम्निमा स्नेहसँ बाजलि,–"हम नहि उठैबितीअह तोरा ! मुदा देखहक ने सुरुज डुबए लगलैक ।"

सोमदत्त आनन्दपूर्ण आलस्यमे डुबल छल । कहलकैक,– "मन त होइत अछि, कतहु नहि जाइ । एतहिं बैसल रही, बैसल रही जावत तक मन करए अही ठाम बैसल रही ।

सोमदत्तक बात सुनि कए सुम्निमा बाजलि,– "देवीथानमे केओ रातिमे रहैत छैक ? बाबू कहने रहैक जे रातिमे ओतए नहि रहिहह ! तोहर धर्म नहि बिगड़ए !! मनुवा बड्ड पिताह देवा छैक, एकदम कड़ा । से ... आब चलह, सोमदत्त ! अबेर भ' गेल । हम तोरा तेल लगा दैति छिअह, नहा दैति छिअह आ तोहर रूप बदलि दैति छिअह । बाबू जेना कहने छलैक से क' दैति छिअह ! ... सनकाह जेकाँ एतहिं रहक बात नहि करह ।"

सुम्निमा हड़बड़ाइति झोरासँ तेलक माली निकालि कहलकैकि,– "कनेक काल पलटि क' सुतह ! देहमे लगा दैति छिअह । बाबू तोरा तेल लगा देब' कहने छैक । बाबू जड"ीबूटीसँ ई तेल बनओने अछि । देखह ने गमगम करैत छैक ।"

सुम्निमा अपन हाथमे तेल लगा कए ओकरा सुँघोलकैकि । धूपक सुगन्ध रहैक । सुम्निमा सोमदत्तक शरीरकेँ नहुएँसँ मालिस करए लागलि । सुम्निमाक हाथक स्पर्श ओकरा आनन्ददायी लगलैक । बड्ड नीक लगलैक । ओकर नग्न शरीरक स्पर्शसँ उष्ण शान्तिक अनुभव करैत सोमदत्त लठिआइत गेल । आ ओ फेर तन्द्रामे झम्मसँ डुबए लागल । सुम्निमा तेल लगबैति कहलकैकि,– "केहन सुखाएल देह ! तेल एना सटसट सोखैत छैक जेना देह पिआसल होइक । लगबिते जेना बालु तेल सोखैत छैक, सोखि लैत छह । बेमाए फाटल छह, हे भगवान ! ... कने उठह, माथमे तेल लगा दैति छिअह ।"

ओहि निःशब्द वातावरणमे सुम्निमाक स्वर चिड़ै-चुनमुनक स्वर जेकाँ सोमदत्तक कानमे पैसैत सुनाइत रहैक ।

सुम्निमा कहलकैकि,– "आब उठह आ जा क' नहाह एहि मनुवादहमे ।"

ओ यंत्रवत् सुम्निमाक संगेँ दहक जलमे प्रवेश कएलक । निर्मल आ शीतल जलक स्पर्श ओकरा पुलकित क' देलकैक । दहक जलक स्पर्शसँ एखन तक ओकरा लठिआ कए रखने मादकता त लोप भ' गेलैक मुदा लगलैक जेना शरीर आ मनमे अनयासे अद्भूत स्फूर्ति आ' चञ्चलता भरि गेल होइक । ओ सूर्यक रौदमे अपन ठीक आगाँ जाँघ तक पानिमे ठाढ़ि

सुम्निमाकेँ जलक्रिड़ा करैति अपना पर दुनू हाथेँ पानि झोंकैति पओलक । सम्पूर्ण वातावरण ओकरा पुलकित क' देलकैक । सभ क्रिड़ामय रहैक । ओहो अपन आँजुरमे भरि-भरि क' सुम्निमा पर पानि छप-छप छापि देलकैक । तरहत्थीसँ पानिक छिट्टा रोकैति सुम्निमा जोरसँ कहलकैकि,– "भेलै, भेलै, सोमदत्त !"

दुनू बड़ी कालधरि जलमे स्नान कएलक । दहमे क्रिड़ा करैत एम्हरसँ ओम्हर तक खूब हेललक । आ जखन, सुम्निमा ओकरा भीड़ पर कातमे बैसा कए लत्ता भिजा कए ओकर देहकेँ मलए लगलैकि त सोमदत्त कहलकैक,– "तोरा के सीखओलकौक एहन निक आ रमनगर चिजसभ ? एना मनमोहक गप्प-सप्प करए ? तोहर हाथ एहन सिद्धहस्थ आ लुरिगर कोना भ' गेलौक, सुम्निमा ? केहन कोमल स्पर्श ? तेल लगबैत काल त हम साँचेँ पूरे निसा गेल रही !"

सुम्निमा भीजल लत्तासँ ओकर गर्दन मलैकि, फेरो भिजबैकि मलैकि आ पोछैकि । एहि क्रियामे गर्दन तक पहुँचए लेल बेरबेर सुम्निमाक देह सोमदत्तक देहसँ सटि जाइक । ओ कहलकैकि,– "सोमदत्त ! तोँ हमरा खौंझबैत छह । हमरा किछु नहि अबैत अछि । ... कनेक घेंट निहुराबह, निकसँ मैल छोड़ा दैति छिअह ।"

सोमदत्त घेंट निहुरओलक । ओकर गर्दनकेँ मलैति सुम्निमा कहलकैक,– "गे माय ! देखही त, कोना मैल कसने छैक !"

घेंट निहुरओने सोमदत्त बाजल,– "ठट्टा नहि । तोँ वास्तवमे प्रवीण छेँ । एहन चर्या तोरा के सिखओलक, कह ने !"

सोमदत्त एहन सुखक अनुभव कहिओ नहि कएने छल । ककरो चर्यारत स्पर्श एहनो कोमल, सुखदायी आ तृप्तिदायक भ' सकैत छैक से ओकरा ज्ञात नहि छलैक ।

सुम्निमा बाजलि,– "ई की बजलह तोँ ? एहन छोटछिन बात की ककरो सिखाबए पड़ैत छैक - तेल लगाएब, नहाएब आ स्नेह करब ! ई

सभ त जीवन ओहिना द' दैत छैक । ओहिना सिखएबला चीजसभ छैक । मर्द आ मौगीक बीच स्नेह करब कोनो दोसरसँ सिखएबला चीज छैक ? जे चीज जीवन ओहिना नहि दैत छैक से ने केओ ककरोसँ लागि भिर कए सिखत ! तौँ बाभनसभ मेहनत क' क' कतेक चीज सिखने रहैत छह । केहन-केहन मोटगर-मोटगर पोथी पढ़ैत छह तौँसभ आ केहन-केहन नहि बुझएबला गप्पसभ करैत रहैत छह ...... ।" आ फेर ओ जोरसँ हँसैति बाजलि,– "छिः की बजलह ? .... तेल लगाबए आ' नहा' देबए सेहो सिखए पड़तैक ?"

सुम्निमाक बात सोमदत्त सुनलकैक कि नहि से नहि जानि । ओ नम्हर साँस लैत बाजल,– "सुम्निमा !"

सोमदत्तक पीठ मलैत सुम्निमा थम्हि गेलि आ आश्चर्यसँ ओकरा देखैति बाजलि,– "की सोमदत्त ? की कहलह ?"

सोमदत्त चुप्पे सुम्निमाकेँ निहारि रहल छल । सुम्निमा हड़बड़ा कए बाजलि,– "बड़ी काल पानिमे नहि रहक चाही । एतक देवा बड्ड कड़ा छैक । देवता चढ़ि जएतह । ... एम्हर आबए काल हमरा बाबू कहने रहैक 'देखिहे सुम्निमा ! बाभनक सन्तानकेँ लगले घुरा लिहे । किछु हएबाक नहि चाही !'"

पानिसँ निकलि ओसभ घाट पर एक गोट शिला पर ठाढ़ भेल । सूर्यक एक गोट किरण-रेखा वृक्षक सघन छायाकेँ चिरैत सोमदत्तक छाती आ सुम्निमा पेट पर पीयर डाँड़ि खिचि रहल छलैक । सुम्निमा कहलकैकि,– "अहिना कनिक काल हावामे ठाढ़ रहह । देह सुखा जएतह ।" सोमदत्तकेँ लगलैक जेना भीतरसँ ओ सिहरि रहल अछि । ओकरा निक लागि रहल छलैक । सुम्निमा पुछलकैकि,– "जाढ़ लगैत छह ?"

"नहि, हम बहुत खुशी छी । देह पुलकि रहल अछि ।"

"हूँऽऽऽ ! ..... तखन तोहर मनुवा खुशी भ' गेलह । देह मस्त भ' गेल त बुझह मनुवा आब पिताएल नहि अछि । मालजालकेँ नहि देखैत

छहक जे केओ स्नेहसँ छुबैत छैक त कोना देह सिहरबैत रहैत छैक ! देहक रोआँ खुशीसँ ठाढ़ भ' जाइत छैक । देहक मनुवा खुशीसँ पाँखि पसारैत छैक कहाँदोन ! हमर बाबू कहैत छैक !! .... हँ, त आब कनेक काल बैसह । तोरा सिंगारि दैति छिअह । तोहर रूप बदलि दैति छिअह ।"

सोमदत्त आश्चर्यसँ पुछलकैक,– "किए ? हमरा श्रृंगार कथिलैं ? हमर रूप परिवर्तनक कोन प्रयोजन, सुम्निमा ?"

"अइलेल ... अइलेल जे तोरा भिल्लक रूपमे सिंगारक अछि । बाबू कहने छैक जे तोहर रूप बदलि देबह त मनुवा नया रूप पाबि आओर खुश भ' जाएत ! मनुवा धीया-पूता जेकाँ होइत अछि । ओकरा फुसलाबए पड़ैत रहैत छैक । आ जखन मनुवा अपने खुश रहैत अछि त दोसरक मनुवाकेँ सेहो फुसला कए खुशी क' दैत छैक । .... ई सभ हमरा किछु नहि बुझल अछि, सोमदत्त ! ई सभटा बाबू कहने छल ।" सुम्निमा अपन झोरासँ कौड़ीक कन्दनी निकालि सोमदत्तक डाँड़मे बान्हि देलकैकि आ कौड़ीक माला गरमे सेहो पहिरा देलकैकि । माथ पर केश खखोरि कए मयूरक पाँखिबला मुकुट सजा देलकैकि । हाथमे कारी काठक एक गोट चिक्कन ठेंगा धरा देलकैकि आ कहलकैकि,–"इएह तोहर आब हथियार छह । .... अपन मुँह आब कनेक देखहक त ... दहक पानिमे ...!" ठेहुन रोपि कए दुनू पानिमे सोमदत्तक बिम्ब देखए लागल । सुम्निमा सोमदत्तकेँ ठेलैति कहलकैकि,– "की देखलह ? चिन्हलह तोँ अपनाकेँ ?"

सोमदत्त स्थिरसँ बाजल,– "एतए हम छी कहाँ ! ... एतए त बस एकटा भिल्ल आ सुन्नरि तरुणी अछि - सुवर्णक रूप ! सुन्दरी !!"

पानिमे युवतीक अनुहार हँसि देलकैकि । तखने वायुक एक झोंक पानिमे लहरि बनबैत गेलैक आ लगलैक जेना पानि सिहरि गेल होए । पानिक लहरिसभ दहक किनार तक पटकैत ओहि बिम्बसभकेँ हिलोरि देलकैक ।

सोमदत्त निसाएल बाजल,– "ई की भेल, सुम्निमा ? हमरा ई की भेल ? किछु बुझएमे नहि आबि रहल अछि ।" आ ओ निहुरल सुम्निमाक

दुनू बाँहि पकड़ि कए दबबैत जोरसँ हिलबैत कहलकैक, — "सुम्निमा !" ओकर आँखिमे ज्योति छलैक, जेना रातिमे बाघक आँखि चमकैत छैक । गर्म आ उत्तप्त श्वास-प्रश्वास भाथी जेकाँ उपर-निच्चा भ' रहल छलैक ।

सुम्निमा हड़बड़ा कए उठलि । ओ सोमदत्तकेँ उठबैति बाजलि,— "सोमदत्त ! आब तोरा एहि ठाम बड़ी काल नहि रहक चाही । एहि मनुवादहक देवता बलुआर आ' कड़ा छैक, कहाँदोन ! ... बाबू कहने रहैक तोरा जोगाकए घुरबए लेल !! ....."

जखन ओसभ मनुवादहक झार-झङ्खारकेँ चिरैत-फाड़ैत निकलल त बाह्यलोकक प्रकाशसँ सोमदत्त तिरमिरा गेल । एक लेखेँ सुम्निमा ओकरा पकड़ि कए बाहर घिचने रहैकि । बाहर अएलाक बाद सोमदत्त किछु संयत भेल । ओ बाजल,— "बाहर कतेक इजोत छैक !"

सुम्निमा कहलकैकि,— "आब बेर खसि पड़लैक । मुनहारि भ' जएतैक । तोहर आश्रम दूर छह । हम तोरा आश्रमक वन तक .... ओतए कोशीक किनार तक ओहि शमीक गाछ तक पहुँचा दैति छिअह । ... चलह, जल्दी चलह !"

किराती गामक दहिना कातक खुड़पेड़िआ दने ओसभ नहुएँ-नहुएँ निच्चा उतरैत गेल । सोमदत्त अत्यन्त शान्ति आ परमसुखक अनुभव क' रहल छल । एहन परिपूर्णता ओकरा कहिओ नहि भेटल छलैक । ओकरा लगलैक जेना जीर्ण रोगक बाद पहिल बेर तृप्तिसँ भोजन ग्रहण कएने होए । एहन सन्तोषक अनुभव ओ कहिओ नहि कए सकल छल । मन आनन्दित, सन्तुष्ट आ परिपूर्ण रहैक । मुदा एखन मनुवादह जेकाँ चञ्चलता नहि रहैक । ओ फेर सामान्य स्थितिमे आबि गेल छल । सोमदत्त आ सुम्निमा पुरान, घनिष्ट मित्र जकाँ खुटपेड़िआ पर बढ़ैत जा रहल छल ।

सोमदत्त पुछलकैक,— "तोहर विवाह कहिआ भेलौक, सुम्निमा ?"

ओ कहलकैकि,— "तौं हमरा कतिआ देलह, छोड़ि देलह त कए वर्षतक हम मन मसोसि कए कहुना जीवन बितओलहुँ । सभ किछु

फीका आ निरस बुझाए । बादमे मायक जीद्द टारए नहि सकलहुँ । गामेक छौंड़ासँ बिआह भेल । ओहो हमरेसँ बिआह करक जिद्द नेने ओहिना ओगरने बैसल छल । छ महीनाक बेटी अछि । तौँ तँ देखलहक ओकरा !"

"तौँ सुखी छैँ, सुम्निमा ?" महीन स्वरैँ सोमदत्त पुछलकैक ।

"घबाएल गाछो त बढ़ैत छैक कहुना क' एक दिन ! ... बाँचक इच्छा रहैक छैक त कहुना बाँचि जाइत छैक । आ फेर हमर घरबला तोरे सन लगैत अछि । रातिमे ओ हमरा तोरे सन बुझाइत आ लगैत अछि । ... अहिना सपनाकेँ पँजिअबैत चलए पड़ैत छैक, जिनगीमे !"

कनेक कालक लेल चुप्पी रहलैक । ओ दुनू चुपचाप चलैत रहल । फेर सुम्निमा कहैति गेलैकि,– "हमर घरबला कहैत अछि,– 'सुम्निमा ! तोरा हम कहिओ पाबए नहि सकलहुँ ।' हमरेसँ सटल सुतल रहैत अछि आ कहैत अछि पाबए नहि सकलहुँ ! एकटा बेटी सेहो जनमि गेलैक, मुदा कहैत अछि हम ओकरा नहि भेटलिऐक । ... आब कहैत अछि, –'काशी जाएब । ओतए बाभनक गोत्र ल' क' बाभन बनब आ हमहूँ बड़का सपना समेटब ।' अहुना केओ करतैक त हएतैक ? किराती बाभन कोना बनि जएतैक ? सोमदत्त !"

सोमदत्त अवाक् सुम्निमाकेँ सुनैत रहल । ओकर हृदय उद्वेगित छलैक, हलचली मचि गेल छलैक तथापि ओ किछु नहि बाजल । सुम्निमा नम्हर साँस लैति बाजलि,– "ओना जिनगीमे जीअ लेल छोटछिन सपना त समेटहिं पड़ैत छैक, मुदा किराती बाभन बनक सपना देखत, बड़का सपनाकेँ पंजिआबए चाहत से कोना हएतैक ? ... आ कि नहि ! सोमदत्त ? ... कह' ने !"

सोमदत्त कहलकैक,– "तोहर बेटी बड्ड सुन्नरि छौक ।"

दुनू कोशीतटक ओहि शमीक गाछ लग पहुँच गेल छल जतए वाल्यकालमे सोमदत्त आ सुम्निमाक पहिल बेर भेँट भेल रहैक ।

सुम्निमा गाछतर ठाढ़ि भ' गेलि आ सोमदत्तकैं कहलकैकि,– "तोरा मन पड़लह, सोमदत्त ! ... बहुत दिन पहिने एतहिं हमरासभक भैंट भेल छल ।" कहए लेल ओ एतबहिं कहलकैकि मुदा सोमदत्तकैं लगलैक ओ आब कानि देति । ओ नहुएँसँ कहलकैक,– "इहो केओ बिसरि सकैत अछि, सुम्निमा ?"

ओ सुम्निमाक हाथ पकड़ि लेलकैक । सूर्य अस्ताचलमे डूबि गेलैक कि हठात् गाछ तर अन्हार भ' गेलैक ।

सोमदत्तक हाथसँ अपन हाथ हटा कए सुम्निमा बाजलि,– "आब अबेर भ' गेल । हम जाइति छी । ... बिसरिअह नहि !"

सोमदत्त किछु कहिते रहैक कि सुम्निमा फुसफुसएलैकि,– "बाबू कहने त नहि रहैक, मुदा एकटा अन्तिम विधि हम अपने मनैं करैति छी ... ।"

ओ सोमदत्तकैं कसि कए आलिंगनमे पंजिआए लेलकैकि आ अपन मुँह ओकर मुँहसँ सटा देलकैकि ।

आ ओ झटकारैति निकलि गेलि । जाइत-जाइत कहलकैकि,– "हम अपन छातीक गरम साँससँ तोहर मनुवा फुकि देलियौक । सोमदत्त ! ... सोमदत्त !! ... सोमदत्त !!!" सुम्निमाक स्वर वनमे रात्रिक अन्धकारमे लोप भ' गेलैकि । सोमदत्त विक्षिप्त जेकाँ चिचिआएल,–"सुम्निमा ... ! सुम्निमा ... !!"

सुम्निमाक मधुर आवाज सुनएलैक,– "सोमदत्त ! हम आश्रममे बाट देखि रहलि छिअह । ... सपना जेकाँ तोहर आलिंगन ... ।"

सोमदत्तक ठोर अग्निस्पर्शसँ धीप गेलैक । नारीस्पर्शक अद्‌भूत अनुभूति कारणैं सम्पूर्ण शरीर दहकि गेलैक । जेना अपना पर कोनो नियन्त्रण नहि रहि गेल होइक, ओ उत्तेजित आ चञ्चल भ' गेल । उन्मत्त भ' चिचिआएल,– "सुम्निमा !"

कलकलाइत कोशीक ध्वनि पहाड़, जङ्गल आ खोंचमे प्रतिध्वनित भ' रहल छलैक जेना पूरा जङ्गल ओकरहि जेकाँ उन्मत्त भैरव भ' क' चिचिआ रहल होइक,– "सुम्निमा ! ...सुम्निमा !!"

कारी होइत अन्हारमे सुम्निमा दौड़ैति अपन गाम घुरि रहलि छलि । हृदयक बढ़ल धकधकीक कारणेँ ओ डगमगाइत बढ़ि रहलि छलि । सोमदत्तक प्रतिध्वनित होइत आर्तपुकारसँ बचए लेल ओ अपन दुनू कान मुनने जा रहलि छलि ।

कोशीतट अन्हारमे डुबि गेल रहैक । सोमदत्त सुम्निमाक तप्त स्पर्शसँ घामे-पसीने भेल झटकारैत पगसँ अपन कुटी पहुँचल । रातुक ओहि अन्हारमे ओकरा एक गोट पीयर सन प्रकाश जेकाँ बुझएलैक । ओहि क्षीण पीयर सनक प्रकाशमे औँघाएल बैसलि पुलोमा ओकरा कोनो गृहवासिनी किराती नारी प्रतीक्षारति बैसलि बुझएलैक ।

"ओहि भिनसर पुलोमा अलसा कए उठलि छलि । शरीरक शक्ति किञ्चित कतहु हेराएल सन लागल रहैक ओकरा । आसनी पर पड़ले-पड़ल ओ एक बेर अपन देह तनलकि आ सोचलकि, –'आइ पवित्र नहि हुअए पड़ैत त निक छल ।' देह गरम सन बोखार जेकाँ रहैक । देह आ सारी मैल सन त लगलैक मुदा एक मन भेलैक जे आइ अहिना बोखारेमे पड़ल रहैति त निक रहितैक । हठात् ओकरा अपन भिल्ल संगी मन पड़ि गेलैक । ओ फेर अपन देह तनलकि । आश्चर्य ! आइ की भ' रहल छैक ओकरा ?

मुदा एना असकतिआइति ओ कोना सुतलि रहि सकैति अछि ? कहुना ओ उठलि आ स्नान करए कोशीतट बिदा भेलि । घाटकेँ भीजल देखि ओ सोचलकि, – 'पतिक स्नानादि भ' गेल छैक । आइ ओकरा अबेर भ' गेलैक ।'

ओ ओतकक काज हड़बड़ा कए सम्पन्न कएलकि आ भीजले परिधानमे आश्रम घुरलि । माथक केशसँ पानिक बून्ह टप-टप खसि रहल छलैक । अपन कुटीमे पैसि ओ स्वच्छ परिधान पहिरलकि आ भीजल वस्त्र सुखबए लेल आङ्गनमे आएलि । पूब दिससँ सूर्यक किरण वनक अन्हारकेँ चिरैत आङ्गनमे कोन्हा कए पसरि रहल छलैक । तुलसीचौड़ा लग अपन भीजल वस्त्रकेँ पसारि ओ चाउर कुटए बैसलि । ओकरा आश्रम कनेक अस्वभाविक जेकाँ असामान्य आ शून्य लगलैक । एहि बेर

तक सोमदत्त अपन विशेष क्रियासभ समाप्त कए यज्ञ हेतु अग्नि स्थापित करए आबि गेल रहैत छल । पुलोमा सोचलकि,– "कदाचित् ओकरा अबेर देखि सोमदत्त आश्रमक उत्तर दिस अपन विशेष अनुष्ठानक अवधि बढ़ा देने हएत ।' ओ स्थिरसँ ढ़ेकीपर दहिन पएर धएलकि आ दबोलकि मुदा छोड़लकि नहि । गालपर हाथ राखि बड़ी कालधरि ओहिना किछु सोचैति दबओने रहलि । अही क्रममे नहुएँ ओकर पएर उठैत गेलैक आ मूसल स्थिरसँ ओखरिमे खसलैक । पुलोमा जेना किछुमे लीन भ' गेल हुअए, दुनू हाथ गालपर चलि गेलैक । बड़ी कालधरि ओ एहने स्थितिमे रहलि ।

दिन ससरए लागल रहैक । रौद आश्रममे पसरि गेल रहैक, मुदा पुलोमाकेँ समयक ज्ञान नहि रहलैक । ओ ढ़ेकीपर पएर रखने स्वप्न जेकाँ अपन वाल्यकालक दृश्यसभ देखि रहलि छलि । ओकर वाल्यकाल सामान्य बालिका जेकाँ साधारण रहैक आ ओ पिताक कठोर अनुशासनमे पललि छलि । मुदा, आइ ओकरा वएह वाल्यकालक दिनसभ, पिताक वएह कठोर अनुशासनक दिनसभ निक बुझा रहल छलैक । कतेक निक आ रमनगर रहैक ओ दिनसभ । ओ सोचैति अछि,– 'किछु रहैक, निर्दोष अज्ञानताक अपने आनन्द छल । एखन जे महिने-महिने दारुण निराशामे पिसाइति जा रहलि छी से त नहि रहए ने !' ओकरा स्मरण भेलैक – गामक आमक फुलबारी, पोखरि, कारी मुदा छरहर ओ भिल्ल बालक जकरासँ ओकर माय बादमे बेटी पैघ भ' गेलि कहिकए खेलही नहि दैक । आ तैओ ओ छौंड़ा कोन्टामे आबि कए ओकरा कहुना-कहुना क' सोर करक कोशिश करैक,– "पुलोमा ! पुलोमा !!" ओकर सोर सुनि कए ओ पोथी मोड़ि माथ त उठबैकि मुदा, मायक डरेँ उठैकि नहि । थाकिहेरि ओ छौंड़ा घुमि जाइक । तकर बाद बहुतो प्रयास कएलोसन्ता पोथीमे किन्नहुँ ध्यान नहि लगैक । ओ दीर्घ निःश्वास छोड़लकि आ फुसफुसाएलि,– "कतए हएतैक ओ भिल्ल छौंड़ा एखन ?"

गोगृहसँ ओकरासभक गाय कोपिला 'बाँऽऽऽ ..' कएलकैकि । पुलोमाक तन्द्रा भंग भ' गेलैक । ओ संयत भेलि आ सोचलकि,– "आइ धान कुटए नहि सकलहुँ । चारिम दिनक नियम आइ खण्डित भ' जाएत ।"

कोपिलाक सेवा क' क' ओ बाहर निकललि । आश्रमक प्राङ्गण असामान्य आ शून्य लगलैक । रिक्त अग्निवेदी पर पातसभ खसल तथा तुलसीचौड़ाक तुलसी प्रखर रौदक कारणे मौलाएल रहैक । पहिनेक निपल आङ्गन पपराएल फाटल रहैक । चिड़ैसभक बिष्टा, गाछसभक पात आ खर-पात यत्र-तत्र पसरल रहैक । बुझाइक जेना आश्रममे केओ करएबला नहि छैक । ओकर अपन लतरल सारी सेहो अनकरक जेकाँ लगलैक । ओ फेर फुसफुसाएलि,— "एतए कतेक वर्ष बिता लेलहुँ हम !"

सोमदत्त एखन तक यज्ञादिक उपक्रम नहि कएने छल से देखि ओकरा आश्चर्य भेलैक । ओ सोमदत्तक कुटीमे गेलि । कुटी शून्य रहैक । तकरबाद ओ ओकरा देखए ओतए गेलि जतए सोमदत्त आइ-काल्हि एकान्तमे अपन बेसी समय व्यतित करैत छल । आइ ओहो स्थल खाली रहैक । ओ आश्रम घुरि आएलि । तुलसी चौड़ा लग ठाढ़ भ' ओ आश्रमक चारु दिस देखलकि । कतहु किछु नहि रहैक । रिक्त अग्निवेदी शून्यताकेँ आओर गम्भीर बना रहल छलैक । पुलोमा अपनाकेँ असगर अनुभूत कएलकि । ओकरामे सोमदत्तक किंचित चिन्ता वा आग्रहक अनुभव नहि अपन खालीपन आ लादल दैनिक धार्मिक क्रियासभक आवरणक बोझसँ विरक्ति, खिन्नता आ निराशाक भाव रहैक । बिना विश्राम अनेक क्रिया, अनुष्ठानादि, व्रत, तप, पूजासँ जीवनमे सृजित शून्यताक पीड़ा रहैक ।

पुलोमा एकाएक भयभीत भ' गेलि । सोमदत्तकेँ किछु भ' त नहि गेलैक ताहिसँ नहि वरन् सम्भाव्य असगरीक विराटताक डरसँ ओ काँपि गेलि । ओ माथ उठा कए जोरसँ किलोल कएलकि,— "ब्राह्मण ! पति !!" कोनो आग्रहसँ नहि, बस ओहि निर्जन द्वीपमे बहुत दिनसँ देखैति आएलि वस्तुक लोपसँ खालीपनक अनुभव ओकरा सोमदत्तकेँ खोजए लेल बाध्य कए देने रहैक । ओकर किलोलक उत्तरमे वन-जङ्गलमे प्रतिध्वनित ओकर अपने आवाज सुनएलैक । दोसर कोनो स्वर नहि अएलैक । पुलोमा सोचलकि,— 'कतए गेल हएत ?' आ ओ अपन कुटीमे आबि बैसि गेलि, मनेमन सोचलकि,— 'आइ यज्ञ-पूजादि आब नहि भ' सकल ।' एहिसँ पुलोमाकेँ अपना किछु हल्लुक सन बुझएलैक । ओ अपन कुटीमे आबि

आसनी पर पड़ि रहलि । कुटीक शीतलता आ विश्रामक अवसरसँ ओकरा शान्तिक अनुभव भेलैक । ओ कहिओ एहन निश्चिन्त अवकाशक भोग नहि क' सकलि छलि – सभ दिन सदिखन किछु ने किछु काज-चर्यासँ ओ अगुता गेलि छलि । ओ निश्चिन्त भ' क' शान्त पड़ल-पड़ल आजुक अवकाशक अप्रत्याशित आनन्दकेँ भोगए लागलि । आइ ओकर शरीरक पोर-पोर विश्रामक आनन्द भोगि रहल छैक आ संगहिं तँए, ओकर मन सेहो ।

पाप आ पुण्य ? जीवन भरि जाहि धार्मिक क्रियासभकेँ पुलोमा पुण्य मानि कहुना-कहुना कए करैति आबि रहलि छलि ओहि पुण्य कार्यसँ अवकाशक एहि क्षणमे सेहो जेना संस्कार एक बेर फेर खेहारि देलकैक, ओ सोचलकि,– 'पुलोमा जीवनभरिक सञ्चित पुण्य तोहर ई एकहिं क्षणक अवहेलनामय असावधानीसँ नष्ट भ' जएतौक ! ई तोँ की कए रहलि छेँ ?'

मुदा, शीतल आसनी पर पसरल देह उठक उत्साह नहि देखओलकैक । बाहरक दूपहरक रौदमे किछु करक कोनो उत्सुकता नहि जगलैक, –'पुण्य एतेक क्षणभङ्गुर अछि ? एतेक बाह्य तत्व जे एकरा अपन जीवनमे संजोगि कए राखए लेल सदैव सचेष्ट रहए पड़तैक ? प्रतिकूल वातावरण आ माटिमे सौष्ठाएबला गाछ जेकाँ अछि ? आ एकर संरक्षण लेल खास-खास तत्व आवश्यक छैक ? एहिमे कतहु कोनो स्वाभाविकताक लेशे नहि छैक ? ... आइ धार्मिक अनुष्ठानसँ निवृत्ति पाबि देह एना सुख-भोगक अनुभूतिसँ किएक रमा रहल अछि ?!' ई सभ प्रश्नसभ औंघाएल पुलोमा लग स्पष्ट भ' क' नहि आबि रहल छलैक । अबैक चलि जाइक दूर लौकैत बिजलीक लौका जेकाँ आ फेर अबिते बिला जाइक । ओकर वास्तविक सुखानुभूति थकैनीमे विश्राम प्राप्तिक छलैक जे सुख आ आनन्दमय आसकति दुनू जनमा रहल छलैक । ओ बुदबुदाएलि, –'आइ हम भानस नहि करब !'

तत्क्षण ओकरा भूखक अनुभव सेहो भेलैक । किछु खाएक मन भेलैक । ओ भण्डारगृहमे जा कए रातुक पौड़ल दही आ चुड़ा खा' क' निकललि कि गाय 'ब्वाँऽऽऽ ... ' कहि सोर कएलकैक । आइ गाय सेहो

भूखाएले रहि गेलैक । ओ कपिलाक गरसँ पगहा खोलि कहलकैकि,– "जाउ ! जतए मन करैत अछि, चरि आउ ! स्वच्छन्द ... !!"

पुलोमा कुटीमे आएलि । आबए काल ओ मोड़ल औंगठल मृगचर्म जाहि पर सोमदत्त ध्यान-पूजा करैत छल देखि ओकरा सोमदत्तक ध्यान एक बेर फेर अएलैक । ओ सोमदत्तक बारे सोचए नहि चाहए, मुदा मनमे चलि अबैक,– 'सोमदत्त हमर पति अछि ।' जखन-जखन सोमदत्तक बारेमे ओ सोचए त बस एकहिटा वाक्य बहरा जाइक,– 'ओ पति अछि । पुत्रेष्टिकार्य लेल नियुक्त पुरुष ।' एहिसँ बेसी कोनो दोसर भावनाक जन्म नहि होइक । एतेक वर्षधरि दिन-रातिक संग सेहो सहधर्मिणीक अनुभूति नहि देबए सकलैक । भरि दिन एकहि रंग आ एकहि प्रकारक पूजा-व्रतक अविश्रान्त सम्पादन आ धार्मिक अनुष्ठानयुक्त वासना-शून्य हृदयसँ रातिमे सह-शय्यावती बनक रात्रि अनुष्ठान त बादमे देह आ मन दुनूकेँ थकाबएबला चर्या बनैत गेलैक । जीवन यंत्रवत भ' गेलैक । धिरे-धिरे वार्तालापक आवश्यकताक आभावमे बोली-चाली सेहो बन्द होइत चलि गेलैक । दुनूक व्यवहार एक-दोसर प्रति सुस्त भ' गेलैक । एक-दोसरक अस्तित्वक अनुभव थाकल लाल भेल आँखिसँ कहिओ तरेर कए देखैत भेल होइक त होइक, नहि त ओसभ वास्तवमे अपन आपसी अस्तित्वकेँ पूर्णतः हेराइए नेने छल । सहवासोमे मनुख एतेक निस्पृह भ' सकैत अछि ? पुलोमा ई सभ सोचैति-सोचैति फसफुसाएलि,– 'ओ आखिर पति अछि ! आइ कतए चलि गेल ?'

पुलोमा भरि दिन यएहसभ सोचैत रहलि । ओ कखनो सोमदत्तक बारेमे सोचए त कखनो अपन बाप-मायक बारेमे आ बेसी ओकर ध्यान गामक ओ भिल्ल छौंड़ा पर चलि जाइक । पाप आ पुण्यक बात सेहो झकझोरि दैक । सोचक उद्देश्य कोनो श्रृंखलापूर्ण चिन्तन अथवा सोचि-विचारि कए दृढ़तासँ कोनो निर्णयमे पहुँचक नहि रहैक । ओ एखन अतीतक क्षणसभक प्रवाहमे बहैत सुखल पात सदृश भ' गेलि छलि । कोनो निश्चित धारणा नहि रहैक ।

समय व्यतित करक दृष्टिसँ कनेक असकतिआइति प्राचीन कालक इतिहास पढ़ए लेल ओ वस्त्र-खण्डमे बान्हल महाभारत खोलि लैति अछि। एक-दू पन्ना पढ़लाक बाद ओकरा आगाँ पढ़क इच्छा नहि भेलैक। ओ चुप्पे बैसल टकटकी लगा कए सोचए लगैति अछि,–'हमरा सन्तान नहि भेल !' ओ अपन देह निहारलकि – बनए नहि सकल देह पातर, टटाएल, खरखर, आ सिकुड़ल रहैक। ओ अपन पेटकेँ हँसोथलकि – वेदम, बिना जोशक, ठण्ढा, मिझाएल दीप सन लगलैक। ओकरा ग्लानि भेलैक,– 'आओरसभ सोझे गर्भधारण क' लैत अछि त हम किएक बन्ध्या भ' गेलहुँ ? कोन पापक कारणेँ एना भेल ?'

एक बेर सोमदत्त ओकरा एक गोट ग्रन्थमे देखओने रहैक,– 'पापी नारी बन्ध्या भ' क' जन्मैति अछि।' सोमदत्तक पाठक स्वरमे तखन कोनो कटुता त नहि रहैक, मुदा तखन ओ पाठक विषय एहन चुनलक किएक ? सोमदत्त अपनाकेँ उच्च स्थान पर राखि एना किएक सोचैत अछि ? ओकरासभक विवाहक निष्फलता ओकर अपने पापक परिणाम सेहो त भ' सकैत छैक ? पुरुष श्रेष्ठ अछि, त कि ओ अपन पाप सेहो स्त्री पर थोपि कए दोषी बनबक काज करैत रहत।

अपना पर नियंत्रण राखए लेल पुलोमा फेर पसरि कए पलटाओल पुस्तक पढ़ए लागलि। मुदा पुस्तक पर ध्यान लागए नहि सकलैक। पुस्तकक प्रसङ्ग मेनकाद्वारा विश्वामित्रक तपस्या भङ्गक रहैक। 'ओहन-ओहन ऋषिसभक तपस्या कतेक सहजेँ भङ्ग भ' जाइक !'– पुलोमाक मस्तिष्क सक्रिय भ' जाइत छैक,– 'एतहि कौशिकीतट पर कतहुँ एहन प्राचीन प्रणयलीला भेल छलैक हएत !' एक क्षणक लेल पुलोमा सचेष्ट भ' जाइति अछि। ओकरा लगैत छैक,– 'पुराणसभमे वर्णित कथासभमे प्रायः पुरुषे मोहित भ' क' स्त्रीक वशमे पड़ल अछि। कोनो स्त्री सहजेँ पुरुषसँ मोहित भ' क' मर्यादाच्युत भेल से पुराणसभमे नहि छैक।' ओ फेर बुदबुदाइति अछि,– 'छैक की ! कोना नहि छैक ? ओहनो छैक। अहिल्याकेँ की कहबैक ?'

तखने स्मृतिक सुदूरसँ पुलोमाकेँ बजबैत भिल्ल छौंड़ाक स्वर सन सुनएलैक,– 'पुलोमा ! गे पुलोमा !!' अहिना होइक गाममे । ओ पाठ्पुस्तक ल' क' बैसए कि कोन्टासँ ओ भिल्ल छौंड़ा दबल स्वरेँ बजबैक आ से सुनितेँ पुस्तकसँ ध्यान हटि जाइक । ओ माथ उठा कए बाहर बाड़ी-खेत दिस तकैकि आ लगले मायक डरेँ पोथी पर मुड़ी गोंति लैकि । किछु काल त किछुओ पढहि नहि सकए । एखनो ओहन स्वरक अनुभवसँ ओ एक क्षण केबारक बाहर दिस उत्सुकतासँ तकलकि । जङ्गलक अन्तर-कुन्तरसँ तृतीय प्रहरक बसात उदास श्वास लए रहल छलैक – स् ...स् ...स् ...स् ... ।

बुझएलैक, आब शिघ्रे सूर्यास्त भ' जाएत । वन-जङ्गलमे सूर्यास्त होइतहिँ सोझे अन्हार भ' जाइत छैक । ओ असकतिआइति उठलि । संध्याक लेल दीप तैयार क' ओ पुनः कुटीमे आएलि । गोशालासँ कपिला 'बाँऽऽऽ' कए बजोलकैकि । 'चरि कए घुरि आएलि अछि ।'– ओ बुदबुदाएलि ।

'आइ सोमदत्त ब्राह्मण कतए चलि गेल ?' – ओकरा मनमे फेर एक बेर उठलैक । साँझ भ' गेलैक तँए दीप जड़ा देलकि । मनमे एखन तक मेनका, विश्वामित्र, अहिल्या आदिक प्रसङ्ग सट्टल अँड़लेँ रहैक । महाभारतकेँ समेटि ओ रामायण निकालि पढ़ए लागलि,–

तस्यान्तरं विदित्वा सहस्राक्षः शचीपति ।
मुनिभेषधरो भूत्वा अहल्यामिदमब्रवीत् । ।'

ओ मनेमन सोचलकि,– 'शचीपति इन्द्र मुनि भेष ध' क' प्रोषितभर्तृका संगे रमण कएलक । असम्भव ! ई पुराणक असम्भव आख्यान अछि । बिनु मोहाच्छन्न भेने कोनो नारी एना क' भ्रमित भैए नहि सकैत अछि । कवि बादक प्रसङ्गमे अहल्या इन्द्रकेँ चिन्हि गेलि रहैकि से देखबैत अछि । यदि से सत्य रहैक आ अहल्या इन्द्रकेँ चिन्हि गेलि रहए त इन्द्रकेँ भेष बदलक प्रयोजन किए भेलैक ?'

पुलोमा आश्चर्यित छलि,– 'बिना प्रयोजनक एहन विचारसभ आइ हमरा मनमे किए आबि रहल अछि ?' एहिसँ पहिनहुँ ओ कए बेर एहि ग्रन्थसभक अध्ययन क' नेने अछि । पहिने कहिओ ई उपख्यानसभ ओकरा

एहन मानवीय आ तात्कालिक अर्थयुक्त नहि लागल छलैक । शुष्क तारपत्रक सरदिआएल अक्षरसभ आइ एना किए जागृत भ' गेल छैक ? कोनो बड़का मानव–अनुभवक उष्णताक स्पन्दन उठल सन, किएक ?!

पुलोमाकैं लगलैक, –'आसकति आ अप्रत्यासित अवकाश ओकरा चञ्चल बना देने छैक । जीवनपर्यन्तक नियमनिष्ठाक बादो मनक किछु अंश बन्धनसँ मुक्त रहिए गेलछैक । 'ई उचित नहि, उचित नहि !' – एक बेर ओकर शरीर काँपि गेलैक । मन डेरा गेलैक । ओ पोथीसभकेँ लपेटि कए राखि देलकि आ सुतबाक उपक्रममे लागि गेलि । आँखि मुनलक, मुदा बेसी कालधरि मुनाएल नहि रहलैक । वनमे असंख्य जीवसभक ध्वनिसँ ओकरा किछु भिन्न सन दुनियाँक भास भ' रहल छलैक । आइ ओ एकसरि राति बिता रहलि छलि । हृदयक कोनो गहींर कोनसँ उठैत भयक सञ्चारक कारणेँ देह ठढ़ल बुझाए लगलैक । ओ अपन देहकेँ एम्हर–ओम्हर करए त लगैक जेना कँपकपी छुटि अओतैक । तखन ओ कनेक स्थिर भ' क' आटव्यक ध्वनि सुनए लागए आ ओकरा बुझाइक, ओकर हृदयक भयक कम्पन बाहर रात्रिक अन्हारमे डूबल वनक अस्पष्ट ध्वनि संगेँ मिलि गेल होइक । ओकरा लगलैक जेना बाहरक ध्वनि ओकर हृदयमे पैस रहल छैक आ भीतरक भय कारी अन्हार बनि पसरि रहल छैक । ओ फेर कान पथलकि । लगलैक अन्हारक भय दोसर रूपमे ओकरे दिस आबि रहल छैक । धकधकाइत हृदयसँ ओ शान्त भ' प्रतीक्षा जेकाँ करए लागलि । तखने एक गोट पक्षी लगेक गाछसँ जोरसँ बजलैक । ओकर चित्कारसँ वनप्रान्त लहरि गेलैक । दूर पहाड़सँ प्रतिध्वनित ओ स्वर पुलोमाकेँ वाल्यकालसँ परिचित ध्वनि जेकाँ लगलैक । गाममे ओकरन घरक कोन्टासँ नुका कए नहुएँसँ भिल्लकिशोर जेना बजबैक तेना,– 'पुलोमा ! गे पुलोमा !!'

पुलोमाकेँ मन पड़लैक,– 'गामसँ एम्हर विदा होइत काल ओहि भिल्ल छौंड़ासँ अन्तिम भेँट भेल रहैक । नदीक कातमे ओ असगरे कनेक जामुन आ एकटा पात पर पाकल कदम नेने प्रतीक्षारत् ठाढ़ छल । बरखा ऋतुक ई फलसभ हमरा बड्ड निक लगैत अछि से ओकरा बुझल रहैक । ओ

गाछ पर चढ़ि कए ठाढ़ि हिलबैक आ हम निच्चा झरैत जामुनक फलसभ बिछिऐकि । बादमे हमरा माय बाहर निकलहिं नहि देलन्हि । माय ओकरा देखि भगाबक कोशिश कएने रहथिन्ह,– "जो ! एहि फलक जरुरी नहि छैक ।" हम त निराश भ' क' टुकुर-टुकुर देखैति रही मुदा तखने बाबू कहलखिन्ह,– "की भेलैक ? फलमे कोन दोष ? पुलोमा ! ल' लिअ ।" आँजुरमे ओ फलसभ राखि ओ चुप्पे ठाढ़ रहल आ हमसभ ओकरा ओहिना छोड़ि बढ़ि गेल रही । दूर जा क' गाछसभक झारसँ झपाएसँ पहिने हम एक बेर घुमि कए ओकरा देखने रही । दूर कारी आकृति जेकाँ ओ ओहिना ठाढ़ देखाएल रहए । अस्ताइत सूर्यक किरणसँ ओकर कटि आ गर्दनमे लागल कौड़ी आ सितुवा चमकैत रहैक ।'

अहिना पुरान बातसभ सोचैत पुलोमा तन्द्रामे चलि गेलि । ओकर मस्तिष्कमे किदन-कहाँदन घुमए लगलैक । मेनका, विश्वामित्र, अहल्या, भिल्लकिशोर । दीपक पीयर ज्योति कुटीक एक गोट भागकेँ पीत आभामे प्रकाशित कए रहल छलैक आ बाहर निर्जन स्तब्धतामे वन्य पशु-पक्षीक चित्कारक सम्मिलित गुञ्जन रहैक ।

तत्क्षण पुलोमाकेँ भान भेलैक जेना केओ प्रचण्ड वेगसँ कुटीक केबारक बाहरक अन्हारसँ प्रकट भेल होए । ओ भयसँ थरथरा गेलि । ओकरा लगलैक जेना कारी अन्हारसँ निकलि कोनो आकृति कुटीमे हुलि गेल होए । पुलोमाक कण्ठसँ चित्कार उठए लागल रहैक मुदा तखने दीपक क्षीण प्रकाशमेसँ ओ एक गोट भयंकर रौद्र रूप प्रकट होइत देखलकि आ पुलोमा जोरसँ चिचिआएलि,– "भिल्ल युवक !"

तकरबाद ओ कारी छाया पुलोमाक सर्वाङ्ग झाँपि देलकैक । अन्हार छोड़ि ओकरा किछु नहि देखाइक । एक गोट उत्तप्त उग्र शरीर पुलोमाक देह पर खसल रहैक आ ओकरा निकसँ पिचैत रहैक । ओकर उष्ण निःश्वाससँ पुलोमाक नाक-कान गरम होइत गेलैक । ओकरा त्रास, पीड़ा आ आनन्दक अनुभव एकहिं संग बुझाए लगलैक । ओकरा कान लग सुनएलैक,– "सुम्निमा ! सुम्निमा !!"

भय आ त्रासक प्रतिक्रियास्वरूप पुलोमा ओहि कारी आकृतिकेँ कसि कए जकड़ि लेलकि आ हकमैति बाजलि,– "भिल्लयुवक ! भिल्ल !!"

ओहन कारी राति फेर कहिओ नहि भेलैक । ओहन डराओन घड़ी फेर कहिओ नहि अएलैक । ओहन पीड़ाक अनुभव सेहो कहिओ नहि भेलैक । ओकरा लगैक जेना ओकर मृत्यु भ' रहल छैक मुदा तैओ ओ ओहि मृत्युकेँ कसि कए पकड़ने रहए । पुलोमा ओकरा किन्नहुँ छोड़ए नहि चाहए । ओ ओहि मृत्युकेँ अपन आलिङ्गनमे कसने राखए चाहए । पीड़ा आ आनन्दक संयुक्त भोगसँ ओ सित्कारैति कहैति जा रहलि छलि,– "अह् अह् भिल्ल अह् अह् !" ओकरा लगलैक ओकर कानमे सम्पूर्ण वन-प्रान्त निश्वसित भ' क' वाष्पध्वनिमे फुसफुसा रहल छैक,– "सुम्निमा ! सुम्निमा !!"

"परात भने भोरे जखन सोमदत्तक निन्न खुजलैक त ओकरा लगलैक जेना आँखि त खुजल छैक मुदा ओ एखनो रात्रिक भोगविलासमे निमग्न अछि । ओ कुटीक चारुभर दृष्टि घुमओलक । एखने उगल सूर्यक किरणसभ झरोखासँ पसरि प्रकाशक पीयर इजोत छिटैत कुटीमे जीवन सञ्चार कए रहल रहैक । पीयर किरण देखतहिं ओकरा सुम्निमा मन पड़ि गेलैक । सुम्निमाक देह सुवर्ण केंवड़ा सन गोर छैक । काल्हि राति ई कुटी सेहो ओकरा दीपक प्रकाशमे ओहने आभामय लागल रहैक । ओ पुलोमाकेँ देखलक जे एखनो ओकरहिंसँ सटलि निन्नमे भेर रहैकि । रातुक पीयर प्रकाशमे पुलोमा सेहो पीयर आभायुक्त छलि । सोमदत्तकेँ पीयर रंग निक बुझएलैक । सोहनगर । ओ मनेमन सोचलक,– 'सुम्निमाक रंग सेहो एहने छैक । अखनुक प्रातःकालीन सूर्यक पातर पीयर किरण सन ।' सोमदत्तकेँ उठक मन नहि भेलैक । देहक थकैनी निक लगलैक आ आसकति विलासमय । पुलोमा एक बेर असकतिआइति देह तनलकि आ निद्रामे नमहर साँस छोड़ैति करोट फेरि लेलकि । हाथ सोमदत्तक छाती पर पड़ि गेलैक आ जाँघ सोमदत्तक जाँघसँ आओर सटि गेलैक । सोमदत्त पहिनहिं जेकाँ शान्त चित्त पड़ले रहल । पुलोमा निश्चिन्त निन्नमे छलि । साँसमे कनेक फोंफ सनक ध्वनि सेहो रहैक । अचल सुतल-सुतल

ओकरा किछु असमान्य लगलैक । किछु गड़ैत रहैक । ओकरा अपन डाँड़मे बान्हल कौड़ीक कन्दनीक ध्यान अएलैक । वएह गड़ैत रहैक । ओ स्थिरसँ अपन छाती परसँ पुलोमाक हाथ हटोलक आ उठि कए बैसल त देखलक ओकर कन्दनी टूटि गेल रहैक आ चारु भर कौड़ी छिड़िआएल रहैक । मयूरपंखी मुकुट सेहो गेडुआ पर पिचाएल आ मसोरल रहैक । कातमे दीप, नहि जानि कोना, औन्हा गेल रहैक आ तेल हेराकए पसरल रहैक । ओ पुलोमाक गेडुआ निकसँ सरिआ देलकैक । स्थिरसँ ओढ़ना ओढ़ा देलकैक आ छिड़िआएल कौड़ीसभ बिछलक । मयूरक पाँखि उठओलक आ कुटीसँ बाहर निकलल । बाहरक शीतल, स्वच्छ बसातसँ मन पुलकित लगलैक, देह हल्लुक बुझएलैक । निक लगलैक । ओ कमण्डल लेलक, चार पर पसारल मृगछाल उतारलक आ स्नानहेतु कौशिकी नदीतट दिस बहराएल । प्रभातक शीतल पवनसँ देहमे गुदगुदीक बोध भेलैक । चिड़ै-चुनमुनसभ चिरबीर कए रहल छलैक । ओकरा आइ चिड़ै-चुनमुनक कलरवक मधुरताक ज्ञान आ अनुभूति भेलैक । एहिसँ पहिने ओ चिड़ै-चुनमुनक बाजब कहिओ एना क' सुननहिं नहि छल ।

कौशिकीतट पर पहुँचते सोमदत्त सभसँ पहिने पानिमे अपन भिल्ल रूप निहारलक । अपनाकेँ देखि ओ जोरसँ हँसल । ओकरा लगलैक ओ जीवनमे पहिल बेर हँसि रहल अछि । तकरा बाद ओ एक-एक क' क' भिल्ल रुपक श्रृंगार-सज्जाकेँ उतारि-उतारि नदीक धारमे फेकए लागल । कौड़ीक माला पानिमे चप्पक आवाज दैत डुबि जाइक । मुदा, मयूरक पाँखिसभ दूर-दूर तक छताइत चमकैत पानिमे बहैत जाइक । ओहि दिन सोमदत्तकेँ स्नान करैतकाल आनन्द अएलैक । ओ बड़ी कालधरि पानिमे रमाइत खेलैत रहल । आ फेर जेना पहिने करैत रहए स्नानादि सम्पन्न कए सन्ध्या-जप करए ओ कुशासन पर बैस गेल ।

ओम्हर पुलोमा कनेक देरीसँ उठलि । उठलि त स्थिति ओकरा स्पष्ट नहि भेलैक । बस, ओकरा किछु निक अनुभव भ' रहल छलैक । निक आनन्दायी सपनाक आनन्द जेना निन्न टुटलो पर रहबे करैत छैक, ओ

रातुक घटना मोन पाड़ए लागलि । माता-पिताक संगे जहिआ ओ गाममे रहए तहिआक मित्र भिल्ल छौंड़ाक संगक सुन्दर आ मधुर क्षणसभ स्मरणमे आबि रहल छलैक । ओ एक बेर सुतले–सुतले आँखि मूनि लेलकि । ओकरा रातुक अनुभव फेरसँ भोगक लालसा जागि गेल रहैक । … मुदा, आखिर एना निसाएल आसकतिसँ भरलि ओ कखनतक आ कोना रहि सकैति छलि ! उठए त पड़बे करतैक आ तँए ओ उठलि । अपन मुँहक ठोरकेँ गोलाकार करैत ओ स्नेहपूर्ण मधुर स्वरेँ नहुएँसँ बाजलि,– "आह, भिल्ल छौंड़ा !" एक बेर ओ अपन चारुकात ओहि भिल्लकेँ खोजलकि । कतए छैक ओ ! ओ त कुटीमे एकसरि अछि । एकदम एकसरि ! कतए गेल ओ ? चारुकात एक बेर ध्यानसँ देखलक । तखने ओकरा सोमदत्तक ध्यान अएलैक,–'ओ त काल्हि भोरेसँ निपत्ता अछि ।' ओ सम्हरलि,–'कतहु सोमदत्त देखि लेत त ? … कुटीक एहन अवस्था पर ओकर नजरि पड़ि जएतैक तखन ?'

पुलोमा हड़बड़ा कए उठलि । टूटल मालासँ छिड़िआएल कौड़ासभ सिरहन, गोनरि आ कुटीक कोनकान तक ओहिना छिड़िआएल गुड़कल रहैक । मयूरक पाँखिक टूटल केशसभ सेहो यत्र-तत्र चमकैत रहैक । ओकर सारी खुजल रहैक । ओ सरिओलकि, उठलि आ छिड़िआएल केशसभ, गुड़कल कौड़ीसभ बिछए लागलि । दीपकेँ उठा कए नीकसँ रखलकि आ बहराएलि । चारु भर निकसँ निहारि कए देखलकि । मनकेँ संतोष भेलैक । सोमदत्त अएलैक तकर कोनो चेन्ह देखएमे नहि अबैक । मुदा, तखने ओकर दृष्टि मृगचर्मक स्थान पर गेलैक । ओतए मृगचर्म नहि रहैक । ओकरा शङ्का भेलैक,–'सोमदत्त घुरि आएल अछि ! जौँ नहि त मृगचर्म कतए छैक ?' छातीक धुकधुकी बढ़ि गेलैक । ओ दौड़ैति पाछाँ गायघर दिस गेलि । एक गोट खधिआ खनि कए जल्दी-जल्दी कौड़ी आ मयूरक पाँखिसभ गाड़ि देलकि । गाय 'बाँऽऽऽ…' कएलकैकि मुदा पुलोमाक ध्यान त कतहु दोसरे ठाम रहैक । ओ चिन्तासँ व्यग्र छलि । एकाग्रताक केन्द्रमे सोमदत्त रहैक । पल-पल ओकरा शङ्का होइक, कतहु सोमदत्त रातिएमे ने त घुरि आएल रहए !

चिन्तित आ मनसँ विकल पुलोमा कोशीतट पर नहाए लेल पहुँचलि । मन व्यग्र होइतो ओकरामे असाधारण स्फूर्ति आ कोनो अज्ञात प्रसन्नता रहैक । सूर्य दिस तकैत ध्यानमग्न अचल सोमदत्त पर नजरि पड़लैक त पुलोमाक पएर लज्जासँ भारी भ' गेलैक जेना धरती पएरकेँ रोकक यत्न कए रहल होइक । पुलोमा देखलकि सोमदतक मुखमण्डल आइ असाधारण रूपसँ दिप्त छल । सूर्यक किरण ओकर मुखाकृतिकेँ आओर ऐश्वर्यमय बना रहल छलैक । एहन तापसी ब्राह्मणक पत्नीक कुलटा आचरणक बोधसँ पुलोमा अपनाकेँ धिक्कारलकि,– 'हे भगवान ! किए हमरा एहन पापमे बान्हि देलौं ? अपन तपस्वी पति जेकाँ हम किए ने रहि सकलहुँ ?'

पुलोमाक पगध्वनि सुनि सोमदत्त आँखि खोललक । पुलोमाकेँ ओकर नेत्रमे स्नेह आ करुणाक ज्योति झलकलैक । एहन प्रेममय दृष्टिक अनुभूति ओकरा कहिओ नहि भेल रहैक । आ एम्हर त आओर ओकर आग्रहहीन दृष्टिमे खाली तिरस्कार तथा वैरभाव भरल रहैत छलैक । पतिक एहन सुकुमार दृष्टिसँ पुलोमा आश्वस्त भेलि । ओ सोचलकि,– 'सोमदत्त किछु बुझए नहि सकल अछि ।'

सहसा ओकरामे तीब्र आनन्दक ज्वार उठलैक । ओ नहाए लेल पानिमे पैसलि । नदीक शीतल पानिक स्पर्शसँ लगलैक जेना ओकर देहक सम्पूर्ण व्यथा बिला गेल होइक । परत-परतमे जमल जीवनक सम्पूर्ण ताप धोआ गेल होइक । मन भीतरसँ पुलकित भ' गेलैक । ओ फेर भिल्ल युवकक सुधिमे डुबि गेलि । शीतल जलक स्पर्शसँ देह आनन्दित आ तनमना रहल छलैक । 'कतए हएत ओ युवक ? रातिमे कखन नहि जानि कोन बेर ओ कुटीसँ चुप्पेँ बिदा भेल ?' आदि-इत्यादि सोचए लागलि । नदीमे ओ स्नान करैत एहन आनन्द कहिओ नहि पओने छलि । देहक रोम-रोममे गुदगुदीक स्पन्दन छलैक । पूबक ओ तट जतए ओ नहा रहलि छलि कनेक ऊँचगर रहैक तँए ओतए प्रभातक शीतलता त रहबे करैक, मुदा पश्चिमक तट सूर्यक किरणसँ आच्छादित भ' गेल रहैक । तँए, बालुक कण आ पाथरसभ प्रकाशसँ चमचम चमकि रहल छलैक । माटि, बालु, छोट-छोट पाथर होइत नदीक ओ पूर्बारी तटसँ सटल वन-प्रदेशमे

चहल-पहल प्रारम्भ भ' गेल छलैक । चिड़ै-चुनमुनक चह-चहक संगे बीच-बीचमे कोनो पक्षीक स्वर गुँजि जाइत छलैक । पुलोमाक मर्ममे ओ स्वर ध्वनित भेलैक । ओ पुलकि उठलि । पानिमे डूबल ओकर नग्न शरीर पर कोशीक दक्षिणवाहिनी प्रवाह गुदगुदी लगा देलकैक । ओ निहुरि कए अपन देहकेँ देखलकि । कसल देह, मुदा आब किछु प्रौढ़ाएबक प्रक्रियामे ! आइ पुलोमाकेँ देहक प्रति ममताक बोध भेलैक । स्नेहक अर्थहीन चेष्टासँ ओ बहैत धारकेँ पँजिआबक कोशिश कएलकि । ओहि रिक्त चेष्टामे सेहो ओकरा अतीव आनन्दक अनुभव भेलैक । लगलैक ओ पूर्ण चेतनामे स्वप्नक आनन्द भोगि रहलि हुअए । ओ फेर बुदबुदाएलि,– 'कतए हएत ओ भिल्ल युवक, एखन ?' चेतनाकेँ लुप्त क' देने रातुक असहनीय आनन्द ओकरा फेर डुबबए लागल छलैक । रातुक आनन्दकेँ ओ कल्पनामे पुनरावृति त नहि कए सकैति छलि मुदा ओहि विराट अनुभवसँ जे जतेक ओ टिपए सकलि टिपैति आत्मविभोर भ' बड़ी कालधरि कोशीक पानिमे नहाइति रहलि । ओ सभ किछु बिसरि गेलि । इहो सुधि नहि रहलैक जे आश्रमक लग नदीतटमे स्नान कए रहलि अछि आ आश्रमवासी पति ओतहिं लगेमे कुशासन पर ध्यानमे लीन छैक । ओ प्रातःकालीन समयकेँ, ओहि कोशी प्रान्तकेँ बिसरि गेल छलि । ओकर चेतनासँ वर्तमान लुप्त भ' गेल छलैक । ओकरा खाली भिल्ल-युवकक छोटसँ छोट बातसभ सेहो मोन पड़ि रहल छलैक । बीच-बीचमे कोनो संगीतक मधुर टेक जेकाँ मन चिहुँकि जाइक,– 'कतए हएत एखन, ओ भिल्ल युवक ?'

सोमदत्त कुशासन पर बैसल सभ दिन जेकाँ ध्यानमे लीन होबक यत्न कए रहल छल, मुदा मन अस्थिर आ चञ्चल रहैक । कोनो व्यथासँ नहि वरन् एखन तक अप्राप्य आनन्दक अनुभवसँ । ओकरा शरीरकेँ प्राप्त विशिष्ट अनुभव चञ्चल बना देने छलैक । मन ईश्वरक आराधनामे कनेको एकाग्र नहि भए रहल छलैक । क्षण-क्षणमे ओकर शरीर आनन्दित भ' पुलकि उठैक । मस्तिष्क काल्हिक घटनासभसँ भरल रहैक जे एक-एक क' प्रकट भ' जाइक । मनुवादह ओकर आँखिक आगाँ स्पष्ट उपस्थित भ' जाइक । काल्हि साँझक ओकरा पर चढ़ल उन्मादक स्मरण भ' जाइक

जतए अन्हारक महासागरमे देह पर परमानन्दक ज्वार पर ज्वार उठैत आएल रहैक । ओहि अन्हार आ परमानन्दमे ओकरा पीयर-पीयर पीत प्रकाशक याद अबैक जे गोर सोन सन सुम्निमाक प्रतीक बनि जाइक । कुशासन पर बैसल ध्यानमग्न होइतैं सोमदत्त रातुक अनुभवमे भसिआ जाइक आ आगाँ ठाढ़ भ' जाइक किरातबाला सुम्निमाक प्राणवन्त सोनक मूर्ति !

सोमदत्तकैं मोन पड़लैक,–'अही तट पर सुम्निमासँ प्रथम भैंट भेल रहए ।' एक-एक क' सुम्निमाक विभिन्न भाव ठाढ़ होइत अबैत गेलैक । ओ स्मृतिक प्रवाहमे भसिआइत गेल ... भसिआइत गेल । वर्तमान ओकरा लेखैं लोप भ' गेल रहैक । पुलोमा ओतहिं कोशीमे नहाइति रहए से ओकरा सुधिमे कनेको नहि रहैक ।

पुलोमा पानिसँ निकलि उपर भेलि त पतिक ध्यानमग्न अवस्था देखि थकमका गेलि । तुरत्तेक आनन्दमग्नता एकाएक लोप भ' गेलैक । पानिसँ धिरे-धिरे बहराइत बाहर आएलि । तरबा तरमे बालु भरभरा कए भसि जाइक आ पुलोमाक पएर गुदगुदा जाइक । ओ धिरे-धिरे सोमदत्त लग जा रहलि छलि । सोमदत्तक लग पहुँचितैं ओ फेर थकमका गेलि । मनमे ग्लानि भेलैक । पतिक एकाग्र ब्रह्मचिन्तनक मुद्रा देखि ओ सोचलकि,– 'सोमदत्त कतेक धर्मभीरु आ ऋषितुल्य अछि । ओकर तुलनामे हम कतेक खसल आ पातकी ! जीवनक सम्पूर्ण धर्मक आर्जन मुदा एक रात्रिक अनुभवमे लुप्त भ' गेल ! आब ओ साधारण कुलटा अछि, केवल एक रातिक अनुभवक खातिर !!' पुलोमा मनेमन आत्मभर्त्सना कएलकि । ओकरा लगलैक सोमदत्तक तुलनामे ओ तुच्छातितुच्छ अछि । ओकरा मनमे अपन पतिक प्रति आदरभाव जागृत भेलैक । आत्मग्लानिसँ पस्त ओ पतिक आगाँ ठेहुन रोपि अपन भीजल माथ पतिक चरण पर राखि देलकि ।

सोमदत्तक ध्यान खुजलैक । पत्नीक एहन व्यवहारसँ ओ प्रसन्न आ आश्चर्यित होइत पुलोमाक माथ पर अपन हाथ रखैत बाजल,– "कल्याणी ! भद्रे !!"

ओकरासभक लेल ओ क्षण जीवनक एहन क्षण रहैक जाहिमे भाव बाहुल्यसँ ओ दुनू हृदय एक-दोसरक स्नेहपूर्ण निकटता अनुभूत कएलक । पति-पत्नीक सीमाक्षेत्रमे प्रवेश कए दामपत्य प्रेमक दर्शन कएलक । ओहि एक क्षणमे सोमदत्त सुम्निमाकेँ आ पुलोमा भिल्ल युवककेँ बिसरि गेल । आपसमे प्रेमक मधुर भावनाक अनुभव कएलक जे ओकरासभक लेल अभिनव अनुभव रहैक । सोमदत्त अत्यन्त स्नेहसँ पत्नीकेँ सुकुमार सम्वोधन कएलक,– "पुलोमा !" अपन सम्वोधनक स्वरक कोमलतासँ किञ्चित सोमदत्त स्वयं आश्चर्यित छल । ओ चुप्प भ' गेल । पुलोमा सोमदत्तक स्नेहपूर्ण वाणीसँ अचम्भित छलि, ओ पति दिस माथ उठा कए तकलकि । ओकर मुखमण्डलमे स्नेहक दीप्ति रहैक जे एकदम स्पष्ट देखाइक । पुलोमाक हृदय पिघलि गेलैक । आर्द्र स्वरमे बाजलि,– "पतिदेव !" ओकरा अपन एहि अनायासक आर्द्रता पर विस्मय भेलैक । एहिसँ पहिने एखन तक कहिओ एना नहि भेल रहैक । कनेक सकुचाइत ओहो चुप आ शान्त भ' गेलि ।

आपसी सनेहक भावनासँ गद्गद सोमदत्त आ पुलोमा दुनू आश्रममे संगहिं घुरल । अबेर भ' गेल रहैक । यज्ञक समय बिति गेल रहैक आ दुनूमेसँ ककरो यज्ञ करक कोनो उत्साह नहि रहैक तथापि ओसभ दैनिक नियम भंग दिस नहि गेल । दुनूमेसँ ककरो रुचि त नहि रहैक मुदा सदैव जेकाँ ओसभ यज्ञ सम्पन्न कएलक । दिनक भोजन पश्चात् धर्मग्रन्थक बारेमे किछु-किछु बात भेलैक । सोमदत्त विश्राम चाहैत रहए, ओ पुलोमाकेँ कहलकैक,– "आब कनेक काल विश्राम क' लिअ ।"

पुलोमा सेहो एकान्त चाहैत छलि । ओ अपन कुटीमे गेलि । दुनू अपन-अपन कुटीमे ओछानपर पड़ल-पड़ल रात्रिक घटना पर सोचए लागल । अपन एकान्तक प्राप्ति आ कृपणसँ गाड़ल गुप्त धनकेँ निकालि कए जेना लोक देखैत अछि, मनमे सहेजए लागल । सोमदत्तकेँ त बुझल रहैक जे राति भरि उन्मादमे जकरा सुम्निमा जानि ओ कसिआ कए आलिंगनमे रखने रहए ओ आओर केओ नहि ओकरहिं पत्नी पुलोमा

रहैकि । मुदा ओहि उन्मादित क्षणक भ्रम सेहो ओहि अवसरक अनुभव तथा प्राप्ति ज्ञाने यथार्थसँ बेसी सत्य बुभ्का रहल रहैक । कोनो-कोनो ग्रन्थसभमे ब्रह्मानन्दक तुलना यौन-आनन्दसँ भेल छैक । ब्रह्मानन्दक अनुभवक पश्चात् साधारण जीवन स्थितिमे अएलापर सेहो ओहि आनन्दक अनुभव स्थूल दैनिक जीवनक यथार्थसँ गहींर आ बेसी सत्ययुक्त होइत छैक से आत्मदर्शीसभक कहब छनि । सोमदत्त सोचैत अछि,– 'हमर कल्हुका रातुक अनुभव उन्मादजन्य रहल हएत, मुदा ओ उन्माद साधारण विक्षिप्तता अवश्ये नहि रहए जकर परिणामसँ व्यक्तित्वक क्रमशः ह्रास होइत छैक । हमर विक्षिप्तता त जीवनदायिनी रहए । रातुक ओहि अनुभूतिसँ हमर व्यक्तित्व आओर बेसी विकसित भ' गेल अछि । हमर जीवन आ चेतनाक स्तर ओहि अनुभवसँ आओर उच्चतर भ' गेल अछि ।'

पुलोमा अपन कुटीमे गेलि त देखलकि ओकर कक्ष ओहिना रहैक जेना ओ भिनसरे छोड़ने रहए । रतुका घटनाक स्मरण समग्र चेतना पर चारु भरसँ आक्रमण जेकाँ क' देलकैक । बेहोशीक ओहि घड़ीक दृश्यसभसँ ओ भ्कँपा गेलि । ओकरा लगलैक जेना कक्षक सभ किछु चलायमान भ' गेल छैक । ओ गोनरि पर थच्च द' बैसलि आ फेर स्थिरसँ अपनाकेँ पसारैति गेडुआ पर माथ रखलकि । ओ मनेमन सोचलकि,– 'काल्हि रातिखन पाप-पुण्य जे भेल होइक, मुदा आब हम पहिनेक पुलोमा नहि रहि गेल छी । ई अनुभव हमरा दोसरे नारीमे परिणत क' देलक । आब भावजगतमे मात्रहिं नहि एहि शरीरक रग-रगमे किछु नव सन सृष्टि भए रहल अछि । नहि जानि पुरुषकेँ कोना आ केहन होइत छैक यौन अनुभव ? मुदा, ओ यदि सार्थक होइत छैक त तखने ओही क्षणसँ नारीक नया जीवन प्रारम्भ भ' जाइत छैक । यदि भगवानक आशीष अछि त सम्भवतः सन्तान-रचनाक क्रिया हमरामे प्रारम्भ भ' गेल हएत ।'

पुलोमा स्थिरसँ हाथ पेट पर रखलकि । ओकरा सोमदत्तक स्मरण भेलैक,– 'हाय ! एहि महान अनुभवमे हम ओकरा सम्मिलित नहि क' सकलिऐक । ई उपलब्धि हमर नितान्त हमरे टा रहल ।' अहिना चिन्तन करैति ओ औंघाइत गेलि । एकबेर औंघाएले ओ अपन भाग्यक सराहना

सेहो कएलकि,– 'हे इश्वर ! हमर रक्षा लेल सोमदत्तकेँ अहिना अज्ञान राखह !'

परात भनेसँ ओकरासभक जीवन सदैव जेकाँ नियमवद्ध चलए लगलैक । धार्मिक अनुष्ठान, यज्ञादि कार्यसभमे कोनो व्यतिक्रम नहि भेलैक । ओसभ आपसी जीवनमे कहिओ शारीरिक सम्बन्धक आकर्षणसँ नहि बन्हाएल – वास्तवमे संगहिं निवास करितो ओसभ फराके रहि रहल छल । ओहि रात्रिक अनुभव ओकरासभक जीवनक जरिकेँ भीतर तक हिला देने रहैक तथापि दृढ़तासँ गढ़ल स्वभावक कारणे ओसभ फेरसँ अपन-अपन जीवनक रथकेँ पहिनके लीक पर दौड़ा देलक । त की ओसभ पहिने जेकाँ निश्चिन्ततासँ दैनिक कार्यसभ सम्पन्न कए रहल छल ? बाहरसँ देखला पर त सभ किछु ओहिना लगैक, नियम-निष्ठा ओहिना रहैक परन्तु ओहिमे रहल दू प्राणक – स्त्री आ पुरुष दुनूक अन्तर्जगतमे पूरा उथलपुथल मचल रहैक । हृदयमे आकर्षणशून्यता रहितो आपसी सम्बन्धक आधार पुरान दीर्घ सहवासक कारण स्वभावतः निर्मित रहैक । पति-पत्नीक धार्मिक उद्देश्य तथा ओहिसँ उत्पन्न आस्था समाप्त भ' गेल रहैक । ओना सम्बन्धक कोनो नव आघात सेहो निर्मित नहि भ' सकल रहैक । तँए, ओकरासभक स्थिति अत्यन्त विचित्र सदैव एक-दोसरसँ मनेमनक डेराइत रहक रहैक । पहिने जतए एकान्त सेवन निरस लगैत रहैक, आब ओसभ बेसी काल अपन-अपन कुटीमे असगर बैसक अनुभवसँ परिपूर्णताक प्राप्तिक बोध करए । आब ओसभ बुझए लागल छल जे एकान्तता रिक्तता नहि छैक आ तँए, अवसर भेटिते अपन कक्षमे जा कए एकान्तक निर्वाध सुखक भोग करए । शान्तिक प्राप्ति लेल नहि, भाव एवं उत्तेजनामय विचारक श्रृंखलासभकेँ बिछि-बिछि कए तारतम्य मिलाबए लेल ओसभ एकान्तवास पसिन करैत छल । हँ, अनुभवक एक झोंकसँ ओकरासभक पहिनेक विचारक ठाढ़ प्रासाद जतक निवाससँ ओकरासभकेँ निरापदताक भान होइत रहैक, सोझेँ ढ़हि गेल छलैक ।

जीवनपर्यन्त जाहिकेँ ओसभ सत्य मानि कए आएल रहए ओकर विनाशक खण्डसभ आँखिक आगाँ उपस्थित रहितो ओकरासभमे अपन

स्वभावक कारणे वास्तविकताकेँ स्वीकारक सामर्थ्य नहि रहैक । आ तँए, ओकरासभक मन-हृदयमे भयानक अन्धवेग मचि रहल रहैक । की अछि मिथ्या ? अनुभव की आस्था ? अपनेसँ भोगने अनुभव की चिन्तनक आधार पर ठाढ़ परिकल्पित विश्वास ? की सत्य अछि ? इन्द्रियजन्य भोग की बुद्धिजन्य वैचारिक निष्कर्ष ? की इन्द्रिय सदैव सत्यानुभूति करबैत छैक ? तखन की मृगमरिचिका दृष्टिन्द्रिय दोष नहि छैक ? हँ, बुधि सेहो तर्कमूलक हएबाक कारणेँ गणित-न्याय अनुसार सैद्धान्तिक परिणाम त निकालत मुदा की ओ परिणाम जीवनक अनन्तमुखी सत्त्वसँ नितान्त दूरक नहि हएत से कोना क' मानिलेल जाय ? यदि इन्द्रियानुभूतिक माध्यमसँ एकर पुष्टि नहि होए त एहन परिणामक पुष्टि कोना हएत ?! ओहि रात्रिक अनुभवकेँ ओसभ कोनो तरहेँ जीवनसँ परिष्कृत क' मेटबएमे समर्थ भ' गेल रहैत त निक होइतैक मुदा से भ' नहि सकलैक । त कि आब ई सम्भव रहैक ? नहि ओसभ आब एना किन्नहु नहि क' सकत । चाहे कोनो चिन्तन वा केहनो कार्यमे किए ने लागि जाओ वा लागल रहओ, ओ विशिष्ट अनुभव आब सभतरि सटले रहतैक – हरेक साँसकेँ अपन विशिष्ट सुगन्ध प्रदान करिते रहतैक । ओसभ अपनो ओहि अनुभवक स्मरणक आनन्दसँ मुक्त करए नहि चाहए । वएह त ओकरासभक जीवनकेँ परिपूर्ण बनओने रहैक आ ओही घटनासँ ओसभक जीवनक समर्थताक अनुभूति प्राप्त कएने रहए । एहि निरन्तरक विचार-द्वन्द्वमे सोमदत्त आ पुलोमा दुनू छटपटाइत रहल ।

असगरिमे पुलोमा सोचए,– 'की छैक पाप ? की जीवनमे कोनो एहन लक्षण छैक जे घाओमे पीज जेकाँ प्रकट भ' जाएत ? मरलाक बाद पाप-पुण्य, दण्ड-पुरस्कार भेटैत छैक से कहैत छैक लोक, मुदा ओहो त प्रतिकार्यमे भेटएबला भेलैक ! ओतहु की पाप-पुण्य चिन्हाबएबला, ओकर यथार्थ रूप देखाबएबला किछु छैक ? एहि जीवनमे दण्ड वा कोनो पुरस्कारक प्रश्ने नहि छैक त ककरा पाप आ ककरा पुण्य कहबैक ? नहि जानि सोमदत्तकेँ पाप-पुण्य चिन्हक ज्ञान छैक की ? ओ त धर्मात्मा अछि । हमहीं पातकी भ' गेलहुँ । ... त साँचे हम पातकी भ' गेलहुँ ? इएह

त हम जानए चाहैत छी । एतेक दिनक बादो ओहि रात्रिक अनुभवसँ हम पुलकित भ' जाइत छी, ओ मन पड़िते नारी शरीर द्रवित भ' जाइत अछि, उल्लाससँ मनमे सङ्गीतक मधुर धुन बनए लगैत अछि ! पापक एहन अनुभूति त नहि हएबाक चाही ?!'

सोमदत्त सेहो असगरे अपन कक्षमे कल्पनाक सागरमे आनन्दलहरीमे बहैत रहैत छल । गङ्गास्नानसँ कल्मष पखारिते जेना देह आ मनक शुद्धिक अनुभव होइत छैक, आइ-काल्हि ओकरा ओहने भान होइक । ओहि रात्रिक अनुभव मन आ शरीर दुनूकेँ पुलकित करएबला महागङ्गास्नान छल । किए भेलैक एहन अनुभव ? यौन-सम्बन्धमे एहन शुचिताक बोध, एहन विपुल आनन्दक अनुभव किए भेलै ? की एना हएब पापशक्ति नहि छैक ? की छैक पाप ? की स्त्री समागमक सुखमे पाप निहित छैक ? शास्त्र त कहैत छैक जे स्त्री-समागममे पाप निहित नहि छैक – यदि आनन्द ओकर उद्देश्य नहि छैक आ स्त्री-पुरुष पति-पत्नी अछि त ! पुलोमा ओकर पत्नी छैक । तँए, धर्मशास्त्र सेहो ओकरा संगक समागमकेँ वर्जित नहि कहैत अछि आ फेर पुत्र प्राप्तिक हेतु सेहो अछि । एहि सभसँ सोमदत्तकेँ सन्तोष होइक ।

सोमदत्त आनन्द प्राप्तिक दोषकेँ एहि तर्कसभसँ शुद्ध करक कोशिश करए । अन्तत्वोगत्वा, सम्भोगक संयोगजात, पक्ष-उत्पाद अछि आनन्द । मुख्य प्राप्ति हेतु त सन्तान छैक । पुलोमा गर्भ धारण करए सकत त ओ दोष मुक्त भ' जाएत । त की एतेक साधारण आ सहज अनुभव रहैक ओकर ? कहैत छैक, धर्मक गति सूक्ष्म छैक, ओकर प्रवेश वायु समान अदृश्यगोचर छैक । पाप-पुण्यक विवेचना करक दृष्टि अत्यन्त तीक्ष्ण होइत छैक । की सोमदत्त व्यावहारिक तर्कसँ धर्मक आँखि बन्द क' सकत ? ओहि दिन रातिमे ओ ककरासंगेँ सम्भोग कएलक ? पुलोमाकेँ त ओ भिनसरमे जखन जागल तखन सटि कए सुतल देखने रहए ! तँए, अनुमानसँ आइ ओ ई कहैत अछि जे ओकर समागम अपने सहधर्मिणीसंग सेहो शास्त्रविहिन रहैक । ओहि भरि राति भलेहीं ओ पुलोमाकेँ अपन

आलिंगनमे कसने रहए मुदा भावनासँ त ओ सुम्निमाक संग कसल रहए ! पुलोमाकेँ सुम्निमा जानि कए !! त पाप आ पुण्यक आधार की ? शरीर अथवा मन ? दोषक मूल श्रोत कतए अछि ? देहजगत् अथवा भावजगत् ? सोमदत्त जे आनन्दानुभूति पओलक तकर कारण त यएह रहैक जे ओकर आत्मा भ्रमहिंमे सही सुम्निमाक संग रहैक ! सुम्निमाकेँ जौँ एहि अनुभवसँ हटा देलजाय त बाँकी की रहतैक ? सोमदत्त उद्विग्न भ' फुसफुसाएल,– 'पाप भावनाजगतक वस्तु थिक ।'

एक दिन सोमदत्तकेँ पुलोमा पुछलकैकि,– "आर्यपुत्र ! पापक रूप केहन होइत छैक ? ओकरा कोना क' चिन्हबैक ? स्वाद केहन होइत छैक ? कोना क' बुझबैक ? शरीर आ मनमे केहन अनुभव होइत छैक ? की पक्षीद्वारा मङ्गलप्रभाती गाबि उठाओल सूर्योदय सनक रूप छैक ओकर ? की जिह्वा पर ओकर स्वाद मधुसन मीठ छैक ? की शरीर आ मनमे ओकर अनुभवेसँ मन्दवायु, नदीक वक्ष-कम्पन करैत लघु लहर जेकाँ आनन्दोर्मि जगा दैत छैक ?"

सोमदत्त कहलकैक,– "पुलोमा ! ई मनक बात छैक, पाप । अहाँ निश्चिन्त रहू । अहाँक मनमे ई बातसभ अकारण अबैत अछि । अहाँ पुण्यात्मा नारी छी । शरीरसँ सेहो अहाँ पवित्र छी । मुदा, यदि मन पवित्र रहैत शरीरसँ अनचेतमे कोनो एहन कार्य भ' गेल जे अहाँक दृष्टिसँ दोषपूर्ण अछि तैओ, ई बुझू जे शरीर केवल मनक यंत्र छैक । पाप अथवा पुण्य त मन करैत अछि । अहाँ अपनाकेँ व्यर्थहिं नहि धिक्कारु ! पापी त हम छी, मनसँ ।"

सोमदत्तकेँ लगलैक एहि रीतिसँ ओ पत्नीक आगाँ अपनाकेँ दोषी स्वीकारैत अपन पापक किछुए अंश सही मोचन कए रहल अछि । पुलोमा पतिक एहन अचिन्त्य शब्द सुनि पतिभक्तिसँ विह्वल भ' बाजलि,– "ई केहन असङ्गत गप्प आइ अहाँ हमरा सुना रहल छी ? हमरा बुझल अछि, हमर पति ऋषि छथि । हुनकासँ मनसा कमर्णा कहिओ कोनो पाप भैए नहि सकैत अछि । पापी नारी त हम छी ।"

सोमदत्त पत्नीक प्रति करुणासँ गद्‌गद भ' गेल। पुलोमाक अज्ञानजनित भावना देखि ओकरा स्वयं अपन पाप आओर भारी बुझएलैक। ओ स्नेहसँ कहलकैक,– "अहाँकेँ ओहिना बुझाइए, अहाँ पवित्र छी। पापी हम छी !"

पुलोमा भीतरसँ खुशी छलि, बाजलि,– "ओना नहि कहू, पतिदेव ! वास्तवमे पापक कुण्डमे त हम डुबलि छी।"

सोमदत्त कहलकैक,– "विश्वास करु पुलोमा ! ... हमरा सभ किछु बुझल अछि। अहाँसँ कोनो पाप नहि भेल अछि। निश्चिन्त रहू।"

पुलोमा किछु संयति भेलि। कनेक कालधरि ओ सोमदत्तकेँ देखैति रहलि। ओकर भावमे स्निग्धता रहैक। तथापि ओ एकटा सोचसँ विह्वलि भ' गेलि,– 'आइ सोमदत्तक व्यवहार एहन किए छैक ? कहैत अछि, हमरा सभ किछु ज्ञात अछि। की ज्ञात छैक ? ओहि रात्रिक घटना सेहो ज्ञात छैक ?' ओकरा कोनादन लगलैक ओ फेर सोमदत्तकेँ देखए नहि सकलि। माथ निहुरि गेलैक। निहुरले ओ सोमदत्तक भाव देखक यत्न कएलकि। सोमदत्त सेहो पुलोमाकेँ कन्छिआ कए देखि रहल छलैक। पुलोमाकेँ असह्य भेलैक, ओ उठलि आ अपन कुटीमे पैसि गेलि।

अपन कुटीमे पुलोमा उद्विग्न छलि,– 'सोमदत्तक कथनक अर्थ की छल ? ओ कहैत अछि जे ओकरा बुझल छैक। की जनैत अछि ओ ? कि ओ ओहि राति हमरासभकेँ देखि लेलक ?! एहन लज्जाजनक नग्नतामे हम एकरासंगे कोना जीवन बिताएब ?' पुलोमा एहन सर्वनाशक कल्पना नहि क' सकैत छलि आ तँए, ओ अपनाकेँ सम्हारैति फुसफुसाएलि,– 'ओकरा किछु नहि बुझल छैक !'

कुटीमे अधुंराएल दीपक तेलक चिन्ह एखन तक छलैहे आ आओर करिआ गेल छलैक। तत्क्षण फेर ओहि रातिक बातसँ ओकरामे स्फूर्ति जेकाँ भेलैक। ओ सोचलकि,– 'ओहि सुखक अनुभवकेँ केओ छिनि नहि सकैत अछि। यथार्थ त यएह छैक जे ओ सुख जीवनमे कहिओ खाली नहि हुअक लेल हमरामे आबि कए भरि गेल। तँए, आब ओ ऐश्वर्यवती, भाग्यवती, सौभाग्यवती भ' गेल अछि। एहि तथ्यक आगाँ सोमदत्तक

कहबक कोनो अस्तित्व नहि छैक । ओ अपने अस्पष्ट अछि ? वनक बाघसँ खतरनाक मनक बाघ होइत छैक । तँए, हम व्यर्थ एहन आचरण किए करु ।' ओ अपनाकेँ आश्वस्त कएलकि । ओ फेर स्वपनलोकमे पहुँचि गेलि जतए ओकर सहचर वएह भिल्लयुवक रहैक आ ओकरहिं गुदगुदाबएबला स्वर गुँजैक,– 'पुलोमा ! पुलोमा !!' अहिना सुखतन्द्रामे बहैति पुलोमाकेँ फेर मर्मस्थलमे काँट जेकाँ सुनएलैक,– 'हमरा सभ किछु बूझल अछि ।'

पुलोमा मनकेँ स्थिर करए आ सोचए,– 'की बूझल अछि ? ...सोमदत्त ! नहि, अहाँकेँ किछु बुझले नहि अछि । अहाँ सदासर्वदा दुःख आ व्यथा देलहुँ । एतेक दिनक सहवासमे हमरा पीड़ा आ रिक्तता छोड़ि आओर किछु नहि देलहुँ । आइ हमरा जेना-तेना जीवनमे एक बेर प्राप्त सुखक प्रति सेहो अन्धशत्रुतापूर्ण दृष्टि किए ?! कहैत छी जे सभ किछु ज्ञात अछि ! सोमदत्त अहाँ द्रोही छी, ईर्ष्यालु छी । अज्ञानतामे हमर अहितक चेष्टा कए रहल छी ।' अहिना विचारक तरङ्गमे सुम्निमा सोचलकि,– 'बाह्यरुपमे पति-पत्नीक होइतो सोमदत्तसँ ओकर सम्बन्ध अन्तरहृदयमे बैरी-बैरीक छैक । ओ सभ अवसर भेटिते एक-दोसरकेँ घात करक खोजमे रहएबला प्राणीसभ अछि ।' ओ बुदबुदाएलि,– 'सोमदत्तक मनमे यदि एहन भावना छैक त ओ सुनओ, हम ओकरा हृदयसँ घृणा करैत छी ।' तखनक असगरक ओहि क्षणमे ओ मुँह घुमा कए दूसि लेलकि ! ओ साँचे सोमदत्तकेँ घृणा करैत अछि । सोमदत्त ओकर जीवनमे नहि आएल रहितैक त ओकर जीवन अत्यन्त सुखमय रहितैक ।

ओम्हर सोमदत्तक मनमे सेहो अहिना चलैत रहैक । पुलोमा हठात् उठि कए चलि गेलि त ओकर व्यग्रता बढ़ि गेलैक । ओ अपन कक्षेमे एम्हर-ओम्हर टहलए लागल । आइ बेचैन करएबला एकटा बात रहैक जे जखन ओ पुलोमाकेँ कहलकैक जे ओकरा सभ किछु ज्ञात छैक त पुलोमाक भौंह चढ़ि गेल रहैक । पहिने त ओ समर्पणक भावोद्वेगमे अपनाकेँ पापिन कहलकि मुदा बादमे, ओकरि कान ठाढ़ रहैक । केओ अज्ञातमे प्रहार त नहि क' देत तेहन भाव रहैक । डेराएल गाय जेकाँ । एना किए

भेल ? हमर सहज उक्ति पर सजग प्रतिक्रिया किएक ? सोमदत्तकैँ बहुत सोचए नहि पड़लैक । हृदयमे ईर्ष्याक ज्वाला धधकि उठलैक । पुलोमा अपन गुप्त सुखकैँ पतिसँ सेहो गुप्त राखए चाहैत अछि ? भेष बदलि कए आएल सोमदत्तकैँ ओ कोन पुरुष बुझि लेलकि ? की ओकरा कोनो दोसर भिल्लयुवकसँ राग छैक जे ओकर हृदयमे निवास कए रहल छैक ? ओ जतए अपन किशोरावस्था बितओलकि ततए भिल्लसभक बास सेहो छैक । की कोनो भिल्लयुवकसँ राग त नहि भेल रहैक ? आ तँए त ने, ओ ओहि राति स्वातीक सितुआ जेकाँ उघरल रहए ?! ओहन तन्मयता अतीतक कोनो असम्पन्न वासनाक वर्तमानमे भोगतृप्तिसँ मात्र अबैत छैक । ओकरा बुझएलैक शायद पुलोमा ओहि राति ककरो प्रतीक्षामे छलि । ओहि राति ओकर चेष्टामे आनन्दक कठोरता रहैक । की एहन चेष्टा व्यभिचार नहि छैक । हठात् सोमदत्त किछु अनुभव कएलक आ घेघिआइत फुसफुसाएल,– 'असती नारी ।'

सोमदत्त विरक्त अनुभव कएलक । ओ अपनाकैँ शिथिल सन पओलक ।

"यदि ओसभ कोनो पैघ समाजक अंग रहैत त शायद कोनो अन्य घटनासभक कारणेँ अथवा दोसरक सहचार्यसँ अपनाकैँ स्थिर क' सकैत आ बिसरि सकैत । सम्भवतः एक रातिक ओहि घटना पर छोटछीन आओर घटनासभ कालक परत चढ़ा दितैक । मुदा ओहि आश्रममे से सम्भव नहि भेलैक, नहि रहैक । शनैः शनैः अन्य घटनासभक आभावमे वएह एक गोट घटना बीजसँ विशाल वटवृक्षक रूपमे विकराल भ' गेलैक । ओकरासभकैँ लगैक जीवनमे ओहि घटनाकैँ छोड़ि जेना आओर किछु रहबे नहि करैक । ओकरासभकैँ वएह एकटा वटवृक्ष छपने रहैक । ओतक समाजमे बस वएह दू सदस्य, आओर त केओ रहैक नहि ! आ तँए कहिओ ओसभ पति-पत्नीक प्रेमसँ आभूत भ' जाए आ सोचए,– 'बेचारी पुलोमा, अज्ञानतामे दुःख भोगि रहल अछि । बेचारा सोमदत्त, मनसँ ठगाएल अछि, ओह !' कखनो वैमनस्यताक आगिमे ओसभ एक-दोसरकैँ सरापए । ओकरासभक

सम्बन्ध सामान्य नहि भ' सकलैक । दुनूमे एकहिंटा सामान्यता रहैक - दुनू ओहि रातिक भोगकेँ अपना-अपना हिसाबेँ एकान्तमे जोखैत रहैत छल ।

प्रेम ! - सोमदत्त कहिओ प्रेम नामक भावनाकेँ अपना हृदयमे प्रश्रय नहि देलक । हँ, किशोरावस्थामे एक दू बेर ओकरा शरीरक आग्रहक रूपमे बुझएलैक जहिआ ओ सुम्निमाक देह प्रतिक आकर्षणसँ चित्कार कएने रहए,– 'ई पाप अछि । … नरक अछि ।' मनुवादहमे एहने उग्र असंयम उठल रहैक जाहिमे संयमक मर्यादाकेँ भंग करैत ओकर जीर्ण शरीरमे तपक यज्ञक छाउरसँ झाँपल मानव प्रकृतिक वाञ्छा एकाएक धधरामे परिणत भ' गेल रहैक । त की एहन कामवासना पाप नहि छैक ? आइ सोमदत्त अपन किशोरावस्थाक दृढ़ विश्वासक स्वर निकालएसँ असमर्थ अछि जे ई पाप छैक आ सुम्निमाक नग्न शरीर नरक अछि । एकटा किशोरक लेल अनास्वादित सम्भोगक सुख कल्पनाक वस्तु थिक । जतए समस्त जीवन आ भविष्य अपन सम्भावनाक संग सम्मुख रहैत छैक ओतए एकर उपेक्षा सहज होइत छैक । मुदा, समाप्त प्रायः निरस यौवन यदि ओ सुख एको बेर पाबि लैत अछि त ओहि प्रतिक आकर्षण सिकुड़ैत जिनगीमे शून्यताक कारणे आओर असहनीय तथा दुर्दमनीय शक्तिक संग आलोड़ित होइत रहैत छैक ।

एक बेर फेर सोमदत्त अपनाकेँ ढाढ़स दैत सोचलक,–'स्त्रीगमन पाप नहि अछि - धर्मशास्त्र निहित कार्य अछि । ओना एक प्रकारसँ विस्मृतिमे ई काज सम्पन्न भेल तथापि क्षणिक मदोन्मादोमे हमर पग सतपथमे रहल । धर्मशास्त्र कतहु हमरा दोष नहि द' सकत । कतहुसँ हमरा पर आरोप नहि लागत ।' तैओ एकटा मनबाधा रहैक – ओकर शिक्षानुसार पति-पत्नीक सम्बन्ध सन्तानोत्पत्ति लेल आ कामवासना शून्य हएबाक चाही । पति-पत्नीक बीच समागम सोद्देश्यहिँ शास्त्रानुकूल हएत । वासना एहि पवित्र उद्देश्यकेँ कलुषित कए दैत छैक । पति-पत्नीक समागम निष्काम कर्म अछि – यएह ओकरा प्राप्त एखन तकक शिक्षाक सार रहैक । … एतहिँ आबि कए ओ अपन तर्क-बुद्धि, शिक्षा-दीक्षा एवं शास्त्राचारसंगे अपन आनन्दानुभवक तारतम्य जोड़एमे असमर्थ भ' जाइत छल आ अशान्त भ'

क' कहिओ अपनाकेँ धिक्कारैत छल त कहिओ अकारण पुलोमाकेँ दोष दैत छल । मुदा, खुलि कए पुलोमाकेँ कहि नहि सकैत छल । ओकरा लगैत छलैक,– 'आखिर पुलोमाक की दोष छैक ?' ओ फेर सोचलक,– 'पुलोमाक कोनो दोष नहि छैक । ने पुलोमाक दोष ने हमर दोष ! पतिक सहज ओ स्वाभाविक सम्बन्ध स्थापित क' क' निश्चय हम कोनो दोषक भागी नहि छी । सम्बन्धजनित ओ आनन्द ओहि सम्बन्धक अप्रतिहार्य प्राप्ति अछि ।' 'प्रेम ओकरे कहैत छैक ।'– ओ नव निष्कर्ष पर पहुँचल,– 'ई आनन्द, ई प्रेम पति-पत्नीक बीच उत्पन्न भेल छैक । तँए, ई निर्दोष अछि ।'

एहि प्रकाशमे पुलोमा अद्‌भुत सुन्दरतासँ महिमामण्डित छलि । सोमदत्त व्यग्र भ' क' पुलोमाक कुटीमे पहुँचल । तखन पुलोमा अपन कुटीमे एकान्तक आनन्द भोगि रहलि छलि । देह पुलकित रहैक, भिल्लयुवकक सुधिसँ अद्‌भुत विलासक अनुभव भए रहल छलैक । अत्यन्त आनन्ददायी स्वप्नमे डूबलि छलि कि हठात् सोमदत्तक प्रवेशसँ सुन्दर स्वप्न भंग भ' गेलैक । संयति भेलि । देह शिथिल भ' गेलैक । आनन्दभोग तत्क्षण विलीन भ' गेलैक । ओ विरक्तिसँ सोमदत्तकेँ देखलकि,– 'केहन कुरूप अछि, हमर पति !'

सोमदत्त साग्रह पुलोमा लग सटि कए बैसल । पुलोमा ओकर स्पर्शसँ बचए लेल कनेक घुसकि गेलि । सोमदत्त आर्द्र स्वरेँ कहलकैक,– "सौम्ये ! हम आइ प्रेमकाँतर छी ।"

पुलोमा आश्चर्यित भ' सोमदत्तकेँ देखलकि,– 'केहन सुखाएल झुर्रिआएल अछि सोमदत्त ! कान्हसँ दू टा सूखल हाथ गाछक सूखल ठाढ़ि जेकाँ निकलल छैक ।' पुलोमा तिक्तासँ बाजलि,– "केहन अशोभनीय वाक्य अछि ई अहाँक आइ, ब्राह्मण !"

मर्माहत सोमदत्त पुछलकैक,– "की पतिमे प्रेमक प्रादुर्भाव हएब अशोभनीय छैक ?" पुलोमा कठोर होइत कहलकैकि,– "अहाँ हमर पति छी परन्तु हमरासभक सम्बन्ध प्रेमक नहि अछि ।" सोमदत्तक शब्द सेहो कठोर भ' गेलैक,– "त की अछि हमरासभक सम्बन्ध ? प्रेमक नहि अछि त ?"

"केवल कर्तव्यक"–पुलोमा दृढतासँ उत्तर घुमोलकैकि,– "अहाँक प्रति हमर पत्न्युचित कर्तव्य अछि जेना अहाँक हमरा प्रति पत्युचित । एतए प्रेमक स्थान कहाँ छैक ?"

"आ सम्भोग ?"

"ओ प्रेमक आग्रहजनित वस्तु नहि अछि । हमरासभक बीच ई कर्तव्य सम्पादन मात्र अछि ।"

सोमदत्त एकदमसँ परास्त जेकाँ भ' गेल आ तँए ओकर रोष उग्र भ' गेलैक । ओ कहलकैक,– "आ तँए, पुलोमा ! हम अहाँसँ पत्नीक कर्तव्यक दावी करए आएल छी । कतए अछि हमर कमण्डल ?"– ओ अकारण चिचिआए लागल,– "किए ओ भिनसर आ साँझ माँजल नहि जाइत अछि ? कतए अछि हमर मृगचर्म ? किए ओ नित्य सुखाओल नहि जाइत अछि ? किए आङ्गन यथासमय निपल नहि जाइत अछि ? किए ... किए ?"

पुलोमा अवाक् सुनैति रहलि आ फेर बाजलि,– "ब्राह्मण ! आइ अहाँ विमूढ़ भ' चिचिआ किएक रहल छी ?!"

सोमदत्त पुलोमाक उत्तर त नहि सुनलक मुदा मुँह परक वितृष्णाक भाव पर दृष्टि देलक । ओ जोर-जोरसँ चिचिआइत बाजल,– "हम आइ आहाँसँ पत्नीक पतिक प्रतिक कर्तव्यक दावी करए आएल छी, बुझलहुँ ! असंस्कृता नारी !! हम एखने अही क्षण अपन सम्भोगाधिकारक दावी करैत छी ।" पुलोमा उठलि । तीव्र क्रोध आ घृणासँ ओ थरथरा रहलि छलि । ओ कटिमे बान्हल वस्त्र-ग्रन्थि खोलि देलकि । शरीरसँ वस्त्र खसि पड़लैक आ पुलोमा सर्वाङ्गनग्न भ' सोमदत्तक आगाँ ठाढ़ि भ' गेलि । सोमदत्त अत्यन्त क्रोधमे छल । प्रेमक आग्रहसँ विह्वल भ' आएल छल तथापि पत्नीक निवस्त्रा रूप देखि कए ओ हठात् शान्त भ' गेल । ओकर देहक सम्पूर्ण शक्ति हेरा गेलैक । क्रोध सेहो कतहु नहि रहि गेलैक । देह ठरि गेलैक । ओहि नीरव क्षणमे, पति-पत्नी बीचक सूक्ष्म मुदा सम्बन्धक तापविहिन क्षणमे, घृणा आ क्रोध प्रकम्पित जीर्ण नग्न शरीर सोममदत्तक

झूकल आंखिक आगाँ ठाढ़ रहलैक। सोमदत्तकेँ लगलैक,– 'कतेक विभत्स नग्नता। कतेक असुन्दर ! रसहीन !! सुखाएल !!!'

पुलोमा क्रोधसँ लाञ्छना आ घृणाक स्वरमे बाजलि,– "अश्लील पुरुष ! सम्भोगकामी असंयमी ब्राह्मण ! लिअ, अपन अधिकारक प्रयोग करु।"

सोमदत्त परास्त भ' गेल। उठल आ जाइत-जाइत ओहिना क्रोध तथा लाञ्छनाक स्वरसँ चिचिआएल,– "अभिनिर्लज्ज नारी ! असंस्कृता बर्बर स्त्री। झाँपू, अपन विभत्स नग्नता।"

एतेक कहि ओ अपन कुटीमे आएल आ पत्नीक कुरूप शरीरक कल्पनासँ माथ पकड़ि लेलक। मुँह घोकचि गेलैक। तखने ओकर आगाँ प्रतिक्षारति सुम्निमाक नग्न शरीरक चित्र उद्भासित भेलैक। नहि जानि कए बेर विभिन्न भङ्गिमामे ओ सुम्निमाकेँ देखने रहैक। ओ फुसफुसाएल,– 'नग्नता सेहो विभिन्न प्रकृतिक होइत अछि – विभत्स आ कुरूप तथा दोसर सौम्य आ सुन्दर। स्वप्न सेहो विभिन्न प्रकृतिक होइत अछि – सुखमयी तथा क्लेशदायी।'

पुलोमा ओहिना नग्न बड़ी कालधरि ठाढ़ि रहलि। क्रोध आ घृणासँ देह थर्थराइत रहैक। 'ई की भेल ?' ओ अपनेसँ प्रश्न कएलकि। ओकरा स्पष्ट बुझएलैक जे घृणा आ आक्रोशसँ ओ कम्पित अछि। ओ अपन कम्पन पर नियंत्रण किएक नहि करए सकि रहलि अछि ? एतेक असंयमित क्रोध किएक भेलैक ? ... कहुना ओ अपना पर नियंत्रण कएलकि। मुदा, देहक कम्पन थम्हल नहि रहैक। ओकरा लगलैक, –'ई ओकर देह अपन सम्पूर्ण यौवनकालक वञ्चना एवं रित्ताक भूखसँ असह्य क्रन्दन कए रहल छैक। ओहि वञ्चनाक स्थूल रूप पतिक समक्ष सम्पूर्ण तित्कतासँ पटकि रहल छैक।' पुलोमाक अपन जीवनमे, एक बेर एक क्षण, तखन ओहि घड़ीमे, एहन अएलैक जे ओ अपने वात्सल्यसँ द्रवित भ' क' देहकेँ हथोरलकि - जाँघ, डाँड़, पेट आ स्तनकेँ छुलकि। दरिद्र माय जेना अपन भूखल बच्चाकेँ भोजनक आभावमे स्नेहसँ पोछैत छैक, तहिना

पोछलकि । ओकरा अपन शरीरक प्रति अतीव ममता जागि गेलैक । अपन शरीरकँ हँसोसैति ओ कनैति रहलि । पहिने त एक-दू बून्ह नोर खसलैक, मुदा लगले ओ साड़ीसँ मुँह झाँपि भोकासी पाड़ि कानए लागलि जेना कतहुँ ओकर पूरा शरीर नोरमे पिघलैत जा रहल होइक । धिरे-धिरे क्रन्दन आओर बढ़िते गेलैक । रूदनक विलासमे सम्पूर्ण शरीर शिथिल भ' गेलैक । आब ओकर नोर तीत आ गरम नहि रहैक । आब ओकर नोर ओकरा विलासक आनन्द दैत देहकँ हल्लुक करैत गरमाबए लागल छलैक ।

नोर रुकलैक त पुलोमा अपनाकँ हल्लुक अनुभव कएलकि – घाओसँ जेना पीज निकलि गेलाक बाद बुझाइत छैक । तखने ओकरा फेर एक बेर ओहि रातिक घटना मन पड़ि गेलैक । ओ आनन्दसँ काँपि गेलि । कनेक काल पहिने जेना ओ क्रोध आ वितृष्णासँ काँपल रहए, कँपकपी त तहिना आ तेहने रहैक मुदा क्रोधक स्थान पर एखन ममता रहैक आ वितृष्णाक स्थान पर भावाकर्षण रहैक । ओकरा मनमे एखन सम्पूर्ण विश्वक प्रति अकारण सद्भाव जनमि गेलैक आ ओ मनेमन बाजलि,– 'सोमदत्तक की दोष ? यदि ककरो दोष छैक त ओ हमर अछि । ओ त नितान्त निर्दोष अछि । आइ हमरासभक जीवनमे पहिल बेर ओ आग्रहक संग आएल छल आ हम अकारण तिरस्कृत कए देलिऐकि । जीवनमे पहिल बेर प्रेमक उदय भए रहल छलैक, हम तकरा उषाकालेमे मेघसँ झाँपि देलिऐकि । एकरे त प्रेम कहैत छैक जकर आभाव हमरासभक दाम्पत्यजीवनकँ निरर्थक आ शून्य बना देने अछि ।

ओ उठि साड़ी फेरलकि, मुँह पर पानि छिटलकि आ पहिल बेर केश झाड़लकि । केशमे तेल लगा कए निकसँ ककबा करैति ओ बुदबुदाएलि, –'प्रेम ! आइ ई कोन भावना हमरामे जागि गेल अछि ?' ओ आङ्गनसँ रक्तकरबीरक गाछसँ एक टा फूल तोड़लकि, अपन केशमे लगोलकि आ स्फूर्तिसँ सोमदत्तक कुटीमे प्रवेश कएलकि ।

सोमदत्त क्लान्त कुशासन पर बैसल छल । ओकर क्रोध त शान्त भ' गेल छलैक तैओ पत्नीक विभत्सताक तीत एखनो जीहसँ हेराएल नहि

छलैक । ओ मनेमन सोचि रहल छल,– 'किए कोनो नारीक शरीर एतेक कुरूप, विभत्स आ विरक्तिकर – फेर ककरो ओहन सुन्दर, सुरुचिपूर्ण, कलात्मक आ आकर्षक ? सयो बेर सुम्निमा ओकरा आगाँ ठाढ़ि रहैति छलैकि त सुम्निमा एतेक अनिन्द किए ?' तखने पुलोमाक प्रवेश भेलैक । ओकरामे किञ्चित कोमल संकोचक भाव रहैक । ओ सोमदत्त लग सकुचाइति बैसलि आ स्थिरसँ ओकर हाथकेँ अपना हाथमे ध' लेलकि । सोमदत्त अपन हाथ घीचक कोशिश जेकाँ कएलकैक आ कनेक दूर होइत कहलकैक,– "ई की ?"

पुलोमाक हृदयमे विफलताक शूल भोंकाएल सन भेलैक तैओ ओ अपन आँखिमे स्नेह भरि सोमदत्त दिस तकलकि । आँखि लज्जासँ नहि, क्षमायाचनासँ आ आग्रहसँ विस्फारित रहैक ।

ओ साग्रह बाजलि,– "प्राणनाथ ! हमरा क्षमा क' दिअ ।"

सोमदत्तक स्वर कठोर आ शुष्क रहैक,– "ई की ?"

तखन तक पुलोमा पराभूत भ' गेल छलि । सोमदत्तक रूख व्यवहारसँ ओकरा हृदयमे उमड़ल लालसा सुखाए लगलैक । ओ किछु नहि बाजलि ।

ठोरकेँ सिकुड़बैत व्यङ्गक स्वरमे सोमदत्त कहलकैक,– "आइ ई केहन परिधान, पुलोमा ! ... ई केशविन्यास ? ... लाल फूल ! लगैत छैक जेना कोनो सुखाएल गाछमे केओ रक्तकरबीरक फूल खोंसि देने होए ।"

अपमान आ लज्जासँ पुलोमा जेना गड़ि गेलि । ओ नतशिर छलि । ओकरा सभसँ बेसी लज्जा ओहि फूलसँ भेलैक जे ओ केशमे खोंसने रहए । सोमदत्त अपन आक्रमण यथावत् रखलक,– "अहाँ मर्यादाशून्य भ' गेल छी । अहाँक वृद्ध शरीरमे पाप भावना जागि गेल अछि, पुलोमा ! .... पाप !!"

पुलोमा लज्जाकेँ त्यजैति किञ्चित रोषपूर्ण स्वरमे कहलकैकि,– "पति-पत्नीक बीचमे प्रणय की पाप छैक ?"

सोमदत्तकेँ मनुवादहसँ घूरल रातिक बात मन पड़लैक जकर बाद ओ पुलोमाक आचरणमे परिवर्तनक आभास पओने रहए । ओ ईर्ष्यासँ बाजल, – "अहाँमे आइ प्रणय कतएसँ आबि गेल ? शरीरकेँ श्रृंगार करक ई लालस ? एहि फूलकेँ अपन केशमे खोंसक लालस कोन कारणसँ जागल ? अहाँक आजुक प्रणय कोन गुप्त अवाञ्छनीय कामनासँ प्रेरित अछि ?"

पुलोमाक मुँहसँ निकलैकि,– "हृदयहीन पुरुष ! ... अहाँ हमर पतिक रूपमे दुश्मन छी । ... हाय !"

सोमदत्त आओर आघात करैत कहलकैक,– "नारी ! अहाँक आइ-काल्हिक आचरणसँ अहाँमे पाशविक वृतिक आचरण जाग्रत भेल स्पष्ट देखाइत अछि । संयम आ धैर्यकेँ त्यागि कए केशमे तेल आ रक्तकरबीर लगओने उन्मादिनी जेकाँ छटपटा रहलि छी । ई प्रणय नहि अछि, हमरा लेल आग्रह नहि अछि – सतीत्व नहि अछि । अहाँ अनार्य भिल्लिनी जेकाँ बर्बर भ' गेल छी ।"

ईर्ष्यासँ वशीभूत सोमदत्त पत्नीक आग्रहकेँ कोनो परपुरुष भिल्ल प्रतिक आग्रह बुझि नकारि रहल छल । ई बात ओ स्पष्ट रूपसँ कहए नहि चाहैत छल आ तँए, ओकर बात हेतुहीन तथा अप्रसांगिक भ' गेल रहैक । ओ कहलकैक,– "अहाँ वृतिसँ, स्वभावसँ शरीरक चेष्टासँ अनार्य भ' गेल छी । आर्यसंस्कृति, शास्त्रशिक्षा, धर्मादेश लोप भ' गेल अछि ।"

पुलोमा पहिने त लज्जासँ जरजर छलि, मुदा आब ओहो क्रोधमे आबि गेलि,– "केहन तात्पर्यहीन आ असंलग्न बातसभ अहाँ बकबका रहल छी, सोमदत्त ! एतए ईश्वरक प्रसंग कतएसँ अएलैक ? एतए ईश्वरक प्रश्न उठलैक किएक ?"

सोमदत्त आगाँ बाजल,– "हमरासभक आर्य ईश्वर अहाकेँ आब छोड़ि देलन्हि आ तँए, अहाँ आब उन्मादिनी, असंयमी, अनार्य भिल्लिनी बनि गेलि छी ।"

पुलोमा जोरसँ चिचिआएलि,– "की छैक ईश्वर ?"

सोमदत्त शास्त्रार्थमे विजित पण्डित जेकाँ अन्तिम निष्कर्ष सुनबैत कहलकैक,– "यएह त बात छैक ! यएह त अहाँ शून्य भ' गेल छी तकर प्रमाण अछि । एतेक वर्षक बाद, एतेक अध्ययन तथा धर्मानुष्ठानक नम्हर जीवनक बाद आब मरए कालमे की प्रमाण चाही, हँ !"

पुलोमा शास्त्रार्थक विचारसँ त नहि मुदा अनुभवक आधार पर कहलकैकि,– "की छैक ईश्वर ? की ई हमरासभक मानव-सम्भावना वा हमरासभक क्षमताक कल्पित रूप नहि अछि ? हमरासभक सम्भाव्यता आ विकासशीलताक एक टा रूप नहि अछि ? की ई सम्भाव्यताक विकास नहि अछि जकरा अपन अज्ञानतावस हमरासभ सीमावद्ध क' देने छिऐक ?" सोमदत्त प्रश्न कएलकैक,–ँएकर अर्थ ई जे अहाँ शास्त्रक विधिविधानकेँ सीमाबन्धन कहैत छी ? अर्थात् अहाँ शास्त्रलक्षित ईश्वरकेँ अमान्य कहैत छी ?"

पुलोमा उत्तेजित भ' बाजलि,– ँनहि, हम ईश्वरकेँ नहि मानैति छी । हम त ईश्वरकेँ अपन शरीरमे स्थापित मानैति छी । हम अपन अन्धकामनामे अनुमोदित भेलि ....."

पुलोमाकेँ लगलैक जे ई विवाद निरर्थक अछि । भावनाशून्य सुखल पुरुषरूपी ढोङ्क आगाँ अनुभवसिक्त वाक्यसभ अर्थहीन अछि । ओ उठल मुदा जाइति-जाइति कहैति गेलि,– "ईश्वर लोकक शत्रु नहि छैक !"

पुलोमा कुटीमे आबि माथ पर हाथ ध' क' सोचलकि,– 'ओह ! केहन मूर्ख हम आ देखू त, हमर पतिक वञ्चना ! ... कतेक धोखा ! केवल सत्य आ निष्कपटता त ओहि रात्रिक क्षणमे रहैक – अस्थायी घड़ीक ओ अशेष आनन्द !'

एहि तरहेँ स्त्री आ पुरुषक स्वाभाविक तथा बलवती भावनासँ प्रेरित भ' क' पति-पत्नी प्रेमक सन्धानमे एक-दोसरकेँ साग्रह पछिअबैक, मुदा दुर्भाग्य एक टाक प्रेमक घड़ी दोसरक वितृष्णाक क्षण बनि जाइक । प्रेमक पारस्परिक क्षण एकहिं बेर ओसभ कहिओ नहि पओलक । ओहन प्रत्येक निष्फल साक्षात्कारक बाद ओसभ आओर दूर-दूर होइत गेल ।

एक दिन ओहिना अपन कुटीमे बैसल पुलोमाकेँ नारीक सहज ज्ञानसँ बुझएलैक जे ओ गर्भवती भ' गेलि अछि । ओकरा बड्ड निक लगलैक । ओ उठलि । कोनो सुख एतेक वेचैन क' दैत छैक से ओकरा कहिओ नहि लागल छलैक । कनेक काल ओ अपन कुटीमे एम्हर-ओम्हर घुमैति रहलि । मनमे कोनो विचार नहि रहैक । मस्तिष्क शून्य रहैक । खुशीसँ फुरफुराएलि ओ बाहर प्राङ्गनमे आबि गेलि । आङ्गन बहुत दिनसँ निपल नहि छलैक । कए ठाम दूभि जनमि गेल छलैक । ठाम-ठाम पपरा आ भुरभुरीसभ ओहिना देखाइत छलैक । ओ गायघर गेलि । खुशीसँ कपिलाक गर्दन पकड़ि बाजलि,– "गोमाता ! कपिला माता ! आब त हमहुं माय बनब ।" गाय देह झारि अपन गर्दन आगाँ क' देलकैकि जेना कहैकि कनेक कुरिआदह । पुलोमा कनेक कालधरि कपिलाक गर्दन पकड़ि हँसोसति रहलैकि । आ फेर ओ सोचलकि,–'ई शुभसम्वाद सोमदत्तकेँ सेहो देबक चाही ।'

ओ दौड़ैति सोमदत्तक कुटी तक पहुँचैति-पहुँचैति लाजसँ शिथिल भ' गेलि । सङ्कोचक कारणे ओ केबारे लग ठाढ़ि छलि, ओकरा एतेक लाज कहिओ नहि भेल रहैक । मन हर्षसँ आनन्दित, मुदा मुँह पर लाजक रक्तिम आभा ओहिना देखाइक । ओकरा आश रहैक जे सोमदत्त आओत, आलिंगन करत आ ओ स्पर्शसँ आओर गड़ैति जाएति । अत्यन्त लाज भए रहल छलैक ।

मुदा, सोमदत्त कोनो उत्साह नहि धेखोलकैक । पुलोमा कनेक काल आश नेने केबार लग ठाढ़ि रहलि, कनेक कालकबाद सोमदत्त शुष्क स्वरमे कहलकैक,– "एना किए ठाढ़ि छी । आबक मन अछि त आउ ने भीतर ।"

पुलोमाक उत्साह मरि गेल छलैक । ओकरा लगलैक जे एहनमे लाज अस्वाभाविक आ असामयिक अछि । एहन लाज त प्रेमीक समक्ष ठीक छैक । ओ जेना कोनो युद्धक घोषणा कएल जाइत छैक तेहन स्वरमे कहलकैकि,– "हम गर्भवती भ' गेलहुँ ।"

सोमदत्तक उत्तर सेहो ओतबे नीरस रहैक,– "नीक भेल । आब अहाँ पुत्रक कामना करु जे अहाँकेँ तारि देत ।"

पुलोमा कहलकैक,– "की आइ अहाँकेँ एतबा कहक अछि ?"

सोमदत्तक स्वर सेहो दृढ़ रहैक,– "आओर की कहू त ? जे काज सामान्य नारी सहजेँ क' सकैत अछि से काज एतेक दिनक बाद आइ अहाँ करए सकलहुँ त एहिमे विशेष की ?"

पुलोमा उत्तेजित भ' क' बाजलि,– "अहाँकेँ पिण्डदान करएबला आवश्यक छल, देर वा सबेर हम देबएबाली भेलहुँ । अहाँ मायक भावसँ विचार नहि पहुँचाबए सकैत छी त कमसँ कम बापक दृष्टिसँ त सोचितहुँ ।"

उत्तरमे सोमदत्त किछु कहलैक मुदा, ओ फनफनाइति निकलि गेलि ।

सोमदत्त कोनो तीत घोंटए सन मुँह बनओलक आ फुसफुसाएल,– 'पेटक सन्तान निमित्तसँ हमर वीर्य ग्रहण कएने अछि, अछि त आखिर नहि जानि कोन भिलक मानस-सन्तान !'

आहति पुलोमा सोचि रहलि छलि,– 'भिल्लक घरमे एखन रहितहुँ त नहि जानि कतेक उत्सव होइत रहितैक ओतए – ढ़ोलक वादन आ नृत्यसभ ।'

बहुत दिन तक अही बातक कारणेँ ओसभ एक-दोसरसँ घृणा करैत रहल । पुलोमाक ह्रदयमे जे व्यथा रहैक से ओ बिसरए नहि सकलि । सोचए,– 'अपन आनन्दक विह्वलतामे सुधि हेराए गर्भवती नारी पतिक द्वार पर लाजसँ गड़लि शुभसंवाद सुनबए गेलि छलि त ओहि खुलल ह्रदय पर सोमदत्त निर्मम प्रहार कएलक । की पतिक एहन ह्रदयहीनता कोनो नारी बिसरि सकैति अछि ? नारीत्वक अहं पर एहन असम्मान के बिसरि सकति ?' ओमहर सोमदत्त सेहो पुलोमाक ओहि दिनक आचरण कोना बिसरि सकैत छल जे ओहि दिन पुलोमा ओकर केबार लग घोषणा करए आएल रहए जे देखह, हम तोरा लेल पेट थम्हने छिअह ! नारीमे व्यभिचारजनित एहन निर्लज्जता आ खुशी सोमदत्तक लेल अक्षम्य छलैक ।

यदाकदा ओकरासभक बीच अहिना अस्पष्ट आ परोक्ष उलहन-परतर होइत रहलैक । एक दिन वाद-विवाद मर्यादा नाघि गेलैक । अवकाशक

तृतीय प्रहर रहैक । सोमदत्त एहि समयमे सामान्यतया असगर बैसल सोचैत रहैत छल । मन पीड़ासँ भरि जाइक जेना कोनो घाओ अनचेतमे छुआ जाइत छैक । बेसी काल पुलोमाक गर्भधारण सोचक विषय बनि जाइक । ईर्ष्याक आगि एहन प्राणान्त जे सोमदत्त फतिङ्गा जेकाँ ओहिमे जरि जाए । ओ सोचलक,– 'एतेक दिनधरि हम पिता बनएसँ असमर्थ रहलहुँ । हमर अथक प्रयास आ परिश्रम करितो पुलोमा बन्ध्याक बन्ध्या रहलि । हमरामे एहन अनाकर्षण रहए कि पुलोमाक गर्भ लेलक सभ प्रयास निष्फल आ निष्फल रहल । एहन कोन तत्व रहैक जे ओहि राति ओ खुलि कए उद्घाटित भेलि आ तत्क्षण अपन गर्भमे वीर्य धारण कएलकि ? कोना पुलोमा तखनहिं उर्बर भ' गेलि ?' क्रोध आ ईर्ष्यासँ शिथिल सोमदत्त स्वीकारलक,– 'हम ओकरालेल ओहि राति नहि रही । ओ ओहि क्षण जरूर ककरो आनसंग रमण कए रहलि छलि !' पुलोमामे देखल गेल ओहि रातिक दुर्दान्त चेष्टा, उग्र आ प्रचण्ड रूप त ओ ओहिसँ पहिने कहिओ ने देखओने छलि । ओ मर्माहत छल,– 'हम नहि रही ओहि दिन । हम एखनो एहि गर्भक पिता नहि छी ।'

ईर्ष्या आ डाहसँ छटपटाइत ओ बाहर निकलल त देखलक जे पुलोमा एक टा वृक्षक आड़मे बैसलि अपन उगल पेट पर हाथ फेरि रहलि छलि । साड़ी डाँड़क नीचा घुसकल रहैक । एकान्तक खोजीमे ओ ओतए बैसलि छलि । हृदयमे उमङ्गसँ ओ बेर-बेर अपन हाथ पेट पर फेरैति एकान्तमे मातृत्वक चिन्तनमे सभ किछु बिसरि गेलि छलि । सन्तोषसँ दिप्त ओकरा देखि सोमदत्त पित्ते दग्ध भ' गेल । घोर ईर्ष्यामे सोमदत्त ओतहिंसँ जोरसँ कहलकैक,– "नारी ! अहाँ कोन बातसँ ओतए आनन्दे विभोर छी ? ओहि राति हमही रही अहाँक संग, बुझलहुँ ?"

ईर्ष्यासँ मनुखमे हत्यावृति उत्पन्न भ' जाइत छैक । सोमदत्त ओहने भ' गेल छल । ओकरा मनमे रहैक,– 'हम अपने दग्ध छी त एकरो सुखकेँ भस्म क' देबैक ।'

पुलोमा हड़बड़ा कए उठलि । अपन साड़ी ठीक कएलकि आ सोमदत्तक वाणीप्रहारकेँ ओही स्वरमे घुरोलकैकि,– "कोन राति ? कोन राति ?"

सोमदत्त क्रोधसँ चिचिआएल,– "ओहि राति, जहिआ अहाँकेँ लागल रहए जे अहाँ व्यभिचाररति छी । दुर्मते ! ओहि रात्रिक भिल्ल हमहीं छी ।"

पुलोमाक मातृह्रदय दानवीक रूप ल' लेलक । ओकरा लगलैक जेना सोमदत्त ओकर आजीवन शत्रु होइक आ ओकर मातृत्वक हत्याक लेल आएल होइक । ओकरो क्रोधक सीमा नहि रहलैक,– "ब्राह्मण ! हँ, हँ, बुझलहुँ । हँ, अहाँ देखने छी अपन आँखिसँ कि अहाँक ब्राह्मणी कतेक पतिव्रता अछि ! तैओ आइ अहाँ हमर ओहो सुखकेँ हरए चाहैत छी, ओहि राति हमहीं ओ भिल्ल रही कहि कए ! व्यभिचारक सुखमे सेहो ईर्ष्या करएबला अधम पुरुष !"

एतेक भेलाक बाद आब बाँकीए की रहि गेलैक ? ओसभ प्रकट बैरीक रूपमे स्पष्ट देखार भ' गेल । ओहि दिनसँ पति-पत्नीक सम्बन्धक ओ छोट सामाजिक तन्तु सेहो टूटि गेल रहैक । ओसभ पूरा फराक-फराक भ' गेल । पुलोमा ओहि भिल्लक स्मरणमे कखनो आनन्दित त कखनो चिन्तित रहि कहुना अपन पेटक बच्चा बढ़बैति गेलि । सन्ध्यादि धार्मिक कार्यसभ छुटि गेलैक । सोमदत्त सेहो असगरे अपन कुटीमे बैसल रहैत छल । कहिओ-कहिओ उतरबरिया असोरा पर बैसि एकटक पहाड़केँ तकैत रहैत छल । कहिओ पहाड़ पर धुवाँ उठैत देखाइक त मनमे अबैक,–'वाऽऽऽ अछि, सुम्निमाक गाम ।'

समय पहुँचलैक त पुलोमा पुत्रकेँ जन्म देलकि । प्रारम्भमे सोमदत्त बेटाक प्रति कोनो रूचि नहि रखलक । मुदा, बादमे जखन ओ ठहुनिया दैत पुलोमाक कुटीसँ ओकर कुटीमे चलि अबैक । स्नेह उमड़ए लगलैक । ओ ओकरा कोरमे उठा कए कहैक,– "अन्ततः हमरे विर्यक अछि । पुलोमा त हमर वीर्य धारण करक क्षेत्र मात्रहिं भेलि । क्षेत्रपति त हमहीं छी ।" ओ बेटाकेँ छातीसँ लगबए त ओकरा सुम्निमा मन पड़ि जाइक । ओ मनेमन कहए,–'ई हमर पुत्र अछि । सुम्निमाक मानस-गर्भसँ जनमल पुत्र !' आ कहिओ विचारमे लीन अवस्थामे जखन बेटा अबैक ओ तमसा जाइक । क्रोधसँ कहैक,– "भाग एतएसँ !"

जोरसँ डाँट सुनि कए बच्चा डेरा जाइक आ कानए लगैक । पुलोमा दौड़ कए बेटाकेँ उठा कए ल' जाइक । बच्चाकेँ अपन स्तन दैत स्नेहसँ थपकी दैति कहैकि,— "किए ओतए जाइत छी । नहि जाउ ओतए । हमर राजकुमार !" मातृस्नेहसँ ओकर स्तनसँ दूधक धारा आबए लगैक आ ओ बच्चाकेँ चुमए लागए । सोमदत्त अपन कुटीसँ बरबराइक,— "हमरे वीर्य अछि त की भेलैक ? मायक लेल त ई पुत्र व्यभिचार वासनाक परिणाम छैक । एकर मानस-पिता त भिल्ल छैक !" ओम्हर पुलोमा बच्चाकेँ चुम्मा लैत भकभकाकि,—"पितृविहिन अभागल !"

एहन क्षुब्ध वातावरणमे बच्चा पोसाएल । ओकर शिक्षादीक्षाक उचित व्यवस्था नहि भेलैक । बाप-मायक स्नेहक निश्चित आधार कहिओ नहि भेटलैक । मायक आसाधारण वात्सल्य ओकरा कहिओ-कहिओ अति आ अपच बुझाइक । कहिओ अकारण माय पिटए लगैकि,— "बड़ भाग्यमान रहितह त हमरा कोँखिसँ जनमए किए अबितह !"

बेटाकेँ निर्दयतासँ पिटैत देखि सोमदत्त पिताइत अबैक आ उठा कए अपन कुटीमे ल' जाइक,— "राक्षसी नारी ! पतिक त अहाँ सत्यानाश कएलहुँ-कएलहुँ, की आब अपन पुत्रक भक्षण करब ?"

बेटाकेँ अपन कुटीमे ल' जा कए सोमदत्त ओकर माथकेँ फेरैत कहैक,— "आब नहि जाउ, माय लग । एतहि रहू । आब त अक्षरो ने सिखए पड़त !" बेटा किंकर्तव्यविमूढ़ भ' चुपचाप देखैत रहि जाइक ।

बेटा कनेक नम्हर भेलैक त कोशीतट पर गाय ल' क' जाए लगलैक । गाय चरबैत भरि दिन ओहिना बौआइत ओकर समय व्यतित हुअए लगलैक । थाकि जाय त शमीक गाछतर पैना राखि विश्राम करए । एक दिन एकटा छौंड़ी गाछतर अएलैकि आ पुछलकैकि,—"हम सुम्निमाक बेटी छी । तोँ ?"

ओ कहलकैक,— "हम सोमदत्तक बेटा ।"

ओही एक दिनक परिचयसँ ओसब एक-दोसरसँ आकर्षित होइत गेल । सोमदत्तक बेटाक लेल सभसँ सुन्दर क्षण वएह होइक, नदीतट

पर गाय चराबक । ओतहिं सुम्निमाक बेटी सेहो अबैकि । दुनू संगे खेलाइत-खेलाइत दिन बिताबए ।

सुम्निमाक बेटीक देह पर कोनो वस्त्र नहि रहैक, सर्वाङ्ग नग्न रहैत रहए ओ । सोमदत्तक बेटा मुदा पातर लंगौट कसने रहैत रहैक ।

एक दिम सुम्निमाक बेटी कहलकैकि,– "तोँ हमर यावा !"

सोमदत्तक बेटा मुँह देखिते रहि गेलैक त सुम्निमाक बेटी समझोलकैकि, – "नहि बुझलह ! यावा माने साथी !!"

छौंड़ाकेँ बड्ड निक लगलैक । ओहो कहलकैक,– "तखन तहूँ हमर यावा !"

बालु पर बैसल ओ दुनू बड़ी कालधरि एक-दोसरक छातीकेँ आङ्गुरसँ छुबैत रटैत रहल ,– "तोँ हमर यावा ! तहूँ हमर यावा !!"

अपन खेलक नव आविष्कारसँ ओसभ आनन्दित छल, खूब हँसि रहल छल । सुम्निमाक बेटी कहलकैकि,– "चलह, यावा आब नहाउ ग' ।"

ओकर पाछाँ सोमदत्तक बेटा सेहो नदीमे पैसलैक । सुम्निमाक बेटी कहलकैकि,– "तोहर ई लत्ता भिजि जएतह, यावा ! पहिने एकरा निकालह । ऊपर कातमे राखह । तखन धारमे पैसिअह ।"

ठेहुन तकक पानिमे ठाढ़ सोमदत्तक बेटा कहलकैक,– "बाबु आ माय देखताह त तमसएताह ।"

सुम्निमाक बेटी चारूकात तकलकि आ फेर कहलकैकि,– "एतए के देखतह ? केओ नहि ।"

सोमदत्तक बेटा डाँड़सँ लंगोट खोलि कए कातमे बालुपर फेकि देलक आ कुदि गेल । ओसब बड़ी कालधरि नहाएल । ओहि दिन सोमदत्तक बेटा ललाएल आँखि नेने आश्रम पहुँचल रहए । ओहि दिन ओ बहुत कसि कए थाकि सेहो गेल रहए ।

* * *

उपसंहार

आश्रम धिरे-धिरे उजड़ैत गेलैक। आब ओतए यज्ञादि नहि होइक। कुटीक चाड़सभ कए वर्षसँ छड़ाएल नहि रहैक आ तँए, आब चुबैक। आङ्गन झार-झंखोरसँ जंगल भ' गेल रहैक। आश्रम लग पाथरसभ राखि कए बैसए लेल बनाओल गेल चबूतरासभ भसि कए खसैत रहैक। बेटाक जन्मक बाद किछु दिनधरि पुलोमा उत्साहित रहए। मुदा ओकर मन प्रसवकेँ बाद निरन्तर खराब होइत गेलैक। परसौतीक सेवा नहि भेलैक। ओ रोगी बनैति गेलि। सन्तान बेसी उमेरमे भेल रहैक आ तँए शारीरिक श्रम बेसी पड़लैक। जीवनक यावत रस झोंकए पड़लैक। प्रसव उपरान्त शरीरक न्यूनतम पोषण सेहो नहि भ' सकलैक। बेटाक जन्मक बाद ओ बूढ़ जेकाँ भ' गेलि। छोटछिन रोग सेहो व्याधि जेकाँ ध' लैक। प्रायः कुटीमे कराहैति रहैति छलि। देहमे कनेको शक्ति नहि रहि गेलैक। ओ दिन प्रति दिन सुखाइति गेलि .....।

ओम्हर सोमदत्त सेहो बूढ़ भ' गेल। शक्ति क्षीण भ' गेलैक। लगैक जेना ओ अन्तिम दिनक प्रतीक्षामे अछि। ओ घरसँ प्रायः नहि निकलए। कोशीतट पर सेहो जाएब छुटि गेलैक।

एक दिन सोमदत्तक बेटा सुम्निमाक बेटीकेँ कहलकैक,– "माय बड्ड बिमार अछि।"

ओ अत्यन्त भावशून्य भावेँ जेना कोनो दोसरक बात कहि रहल होय तेना अपन यावाकेँ सुना रहल छल जे ओकर माय बिमार छैक। स्वरमे

चिन्ताक लेश नहि रहैक । लगैक, जेना ओकरा मायसँ कोनो सम्बन्ध नहि होइक अथवा ओकरा लेल मायक होबक वा नहि होबकमे कोनो भिन्नता नहि होइक । अपन माय आ बापक विषाक्त सम्बन्धक कारणेँ ओकरा माय अथवा बापसँ वात्सल्यक प्राप्ति नहि भ' सकल छलैक । दुनूक झगड़ामे ओ अपनाकेँ ओकरसभक अपन-अपन पक्षक प्रमाणक रूपमे खाली प्रयोग होइत देखलक । पुलोमाकेँ सेहो अपन बेटा दोसर जेकाँ बुझाइक । आश्रममे कोनो तेसर आदमी जेकाँ ।

ओकर परात भनेँ सोमदत्तक बेटा गाय चरबए नहि गेल । सुम्निमाक बेटी बाट देखैति रहलि आ नहि रहि भेलैक त डेराइति-डेराइति आश्रम तक पहुँचलि । दुरखामे जा क' ओ नहुएँसँ सोर कएलकैकि, – "यावा ! यावा !!"

सोमदत्तक बेटा सुम्निमाक बेटीक स्वर ठेकानि गेलैक । ओ उठि कए बाहर आएल आ कहलकैक,– "हमर माय मरि गेलि ।"

सोमदत्तक बेटाक मलीन आवाज सुनिते सुम्निमाक बेटी सोझे दौड़ैति अपन गाम पहुँचलि आ बाप-मायकेँ पुलोमाक मृत्युक समाचार देलकैकि । ओसभ मर-मद्दतिमे गामसँ किछु गोटेँकेँ आश्रम पठोलकैक ।

सोमदत्तक बेटा किछु दिनधरि शून्य जेकाँ रहल । सोमदत्त अपने अस्वस्थ रहए तँए बेटा दिस ध्यान देबएसँ असमर्थ रहए । पुलोमाक मृत्युक बाद ओहो ओछान ध' लेलक । बेटा भरि दिन गाय चरबैक आ साँझमे घुरि कए आबए त बापक सम्भव सेवा करए । दूध औंट कए पिअबैक । कहिओ काल सुम्निमाक बेटी किछु-किछु ल' क' अबैकि आ कहैकि,– "माय तोरा लेल पठएलकह ।"

सोमदत्तक बेटा कहैक,– "आ तोरा लेल ?"

ओ कहैकि,– "हम त आगिमे पकाओल माउँस खाइत छी । दोसर पातमे अनने छी । माय कहलकि जे तोँ माउँस नहि खएबहक । तोँ बाभन आ हमसभ किराती ...तँए !"

एक दिन भेटिते सुम्निमाक बेटी पुछलकैकि,– "तोहर बापकेँ कोना छह ? ... माय कहने छैक पुछि कए आबए लेल ।"

"बहुत बिमार छथिन्ह ।" सोमदत्तक बेटाक उत्तर रहैक ।

सोमदत्तकेँ बाँचक इच्छा नहि रहि गेल रहैक । ओकरा अपन सम्पूर्ण जीवन विफल बुझाए लागल छलैक । आ इहो जे ओ केवल मृगमरीचिकाक पाछाँ जिनगी भरि दौड़ैत रहल । एखन तकक जप, पाठ, पूजा, तपस्या आ मोक्ष प्राप्तिक सभटा प्रयत्न बेकार भ' गेलैक । पुत्र प्राप्ति सेहो अर्थहीन रहलैक । पुत्रसँ कोनो ममता अथवा निकटताक सम्बन्ध बनिए नहि सकलैक । ओछान पर मृत्युक घड़ी जोहैत सोमदत्त सोचए,– "कतए गेल ओसभ उपलब्धि ? कतए ?" ई सभ बात सोचैत-सोचैत ओ निराश हकमए लागए ।

परात भनैँ सुम्निमा अपन बेटीसंगे आश्रममे अएलैकि । सोमदत्तक अवस्था देखि अत्यन्त दुखी सुम्निमा पुछलकैकि,– "हमरा किए ने खबरि देलह तौँ ?"

स्वर चिन्हि कए सोमदत्त आँखि खोललक । माथ निहुरओने सुम्निमा सोमदत्त लग ठाढ़ि रहैकि । ओ आब युवती नहि रहए । प्रौढ़ उमेरक छाप देखाइक । ओकर बेटी मायसंगेँ सटलि रहैकि । ओकरा देखतहिं सोमदत्तकेँ कोशीतट पर पहिल बेर भेटल सुम्निमा मन पड़ि गेलैक । बेटीक देह काँट सभकिछुसँ लगैक जेना ओ वएह सुम्निमा होए जे बहुत पहिने कोशीतट पर शमीक गाछ तर भेटल रहैक । सोमदत्तक समाप्त होइत चेतनामे अतीतक अस्पष्ट चित्रसभ अबैत गेलैक । कखनो अतीतक कोनो दृश्य धप्पसँ देखा जाइक । ओ आँखि मुनि लेलक । ओकरा लगलैक जेना ओ कोनो अति गहींर स्थानमे प्रवेश क' रहल अछि – धीरे-धीरे आओर गहींर रिक्ततामे पैसि रहल अछि । अतीतक गहींर रिक्ततामे प्रवेशसँ ओकरा अपन मानसपटमे सुखक अनुभूति भेलैक । ओकरा लगलैक ओ अतीतक अस्पष्ट लोकमे भसिआ रहल अछि । आंखि मुनने सोमदत्त बाजक कोशिश कएलक,– "सुम्निमा !"

सुम्निमाकेँ लगलैक जेना ओकर ठोर काँपि रहल होइक । ओ अपन माथ आओर निहुराकए सोमदत्तक मुहलग ल' जा' कए जोरसँ पुछलकैकि,– "की ? .... सोम दत्त की कहै छह ?"

सोमदत्तक शरीर कनेक हिललैक, कदाचित् ओ सुम्निमाक स्वर सुनि नेने रहैक । मुदा, तत्क्षण ओकर शरीर स्थिर भ' गेलैक ।

सुम्निमाक बेटी सुम्निमासँ पुछलकैकि – "की भेलैक माय ? एना चुप किए भ' गेल ?"

बेटीक हाथ पकड़ने सुम्निमा बाहर निकललि आ अपन बेटीसँ नुका कए ओ अपन आँखि पोछलकि । मुदा तैओ, ओकरा आँखिसँ खसैत नोरक ठोपसभ देखाइए गेलैक ।

सोमदत्तक लीला समाप्त भ' गेल रहैक । सुम्निमा बाहर असोरा पर बैसि गेलि आ बेटीकेँ अढ़ोलकि,– "गाम जो आ लोकसभकेँ बजा आन ।"

सुम्निमा सोमदत्तक बेटाकेँ हाथसँ अपनासँ सटबैति नोराएल स्वरेँ कहलकैकि,– "आब तोँ हमरा संगे रहबह ! .... चलबह, हमर घर ?"

सोमदत्तक बेटा कहलकैक,– "हम त आब यावा संगेँ रहब ?"

सुम्निमा पुछलकैकि,– "के छौक तोहर यावा ?"

गाम दिस कुदैति जाइति छौंड़ीकेँ सोमदत्तक बेटा इशारासँ देखबैत कहलकैक,– "वाऽऽऽ ... ओ अछि हमरि यावा !"

उत्तरमे सुम्निमा सोमदत्तक बेटाकेँ अपन छातीसँ लगा कए चुमि लेलकि ।

दाह-संस्कारक बाद सुम्निमा सोमदत्तक बेटाकेँ अपना संगे गाम ल' गेलि । आश्रमक सभ किछु ओ उठा कए अपन घरमे ल' गेलि । गायकेँ अपन मालजालमे शामिल क' लेलकि ।

आश्रमक समानसभकेँ सुम्निमा ध्यानसँ देखलकि – लँगोट, कुशासन, कमण्डल, जनऊ, कपड़ा-लत्ता सभ किछु । ओ सोमदत्तक बेटाकेँ

कहलकैकि,– "एहि सभकेँ गाममे कोनो काज नहि छैक । बौआ ! तोँ रखबह, ई सभ ? अपन बापक चेन्हसभ ?"

सोमदत्त बेटामे बापक प्रति कोनो स्नेहभाव नहि रहैक । ओ आवश्यक नहि बुझलक । मृत पिताक ओसभ चीज ओकरा अनावश्यक लगलैक । ओ कहलकैक,– "नहि, हम नहि राखब ।"

बाप-मायक स्मृतिक लेल किछु राखत कि सोचि सुम्निमा एक बेर फेर पुछलकैकि, मुदा सोमदत्तक बेटा कहलकैक,– "नहि, हमरा एहि सभसँ डर होइत अछि ।" आ एतेक कहैत ओ सुम्निमाक बेटीके लगमे जा क' सटिआ गेलैक ।

आश्रम सुनसान भ' गेलैक ।

पहिने त सोमदत्तक बेटा गाममे किछु डेराएल-डेराएल सन लगैक । कखनो सुम्निमाक बेटीक संग नहि छोडैँक । धिरे-धिरे ओहो सुम्निमासंग घुलि-मीलि गेल आ ओकरा 'माय' कहए लगलैक ।

दुनू बच्चा बढ़ैत गेलैक । नया स्थानमे सोमदत्तक बेटा सदिखन सुम्निमाक बेटीक पछोर धएनहि रहैक । सुम्निमाक बेटी खुशीसँ फुदकैति ओकरा भरि गाम नया-नया स्थान देखबैति घुमबए ल' जाइकि । गामक छौंड़ा-छौंड़ीसँ चिन्हा-परिचय करबैति ओ कहैकि,–"चिन्ह ले, ई हमर यावा अछि ! ओहि निच्चाक आश्रमबला बाभनक बेटा ।"

सोमदत्तक बेटा सुनि कए लजा कए ठाढ़ भ' जाइक । सुम्निमाक बेटी ओकर हाथ पकड़ि कए कहैकि,– "चलह, फूल तोड़ए !" त कहिओ काल सोमदत्तक बेटा कहैक,–"कोशी किनारमे घुमए चल ने, यावा !"

ओकर कहला पर सुम्निमाक बेटी कोशीतट पर अबैक । कहिओ ओसभ बालुमे ओंघराए त कहिओ धारमे छपछपाइत नहाए । कहिओ-कहिओ सोमदत्तक बेटा शमीक गाछतर ओंगइठ कए एकटक बैस जाइक । सुम्निमाक बेटी लगमे आबि कए टोकैकि,– "की भेलह तोरा, यावा ! एना किएक बैसल छह ?"

सोमदत्तक बेटा धड़फराकए उठि कए कहितैक,– "चल ने यावा ! एक बेर आश्रम देखि कए अबैत छी ।"

सुम्निमाक बेटी कहितैकि,– "आब ओतए किछु छैक से ?!"

तैओ छौंड़ाक जीद्द पर ओसभ आश्रम देखए जाय ।

एक दिन आश्रम पहुँचल त सोमदत्तक बेटा कहलकैक,– "देखही, गायक घर खसि पड़ल छैक ।"

सुम्निमाक बेटी डेराइत कहलकैकि,– "हमरा एहन सुन्न घरमे डर होइअऽऽऽ ।"

आश्रमसँ कहिओ काल नढ़िआ बहराइक आ सुम्निमाक बेटी डेरा कए भागि जाइक । सोमदत्तक बेटा सेहो डेराइत छौंड़ीसंगे दौड़ए लगैक । दौड़ैत-दौड़ैत ओसभ कोशीतट पर हकमैत पहुँचए त सुम्निमाक बेटी कहैकि,– "तोरा आश्रम जाएक मन किएक करैत रहैत छह ?" सोमदत्तक बेटा कहैक,– "आब हमरो डर होइत अछि, यावा !"

मुदा, तैओ ओसभ गामसँ कोशीतट आबए आ डेराइत-डेराइत आश्रम तक जाय । आ कहिओ डेरा कए दुआरियेसँ घुमि जाय ।

एक दिन बेटी सुम्निमाकेँ कहलकैकि,– "माय ! यावा कहिओ-कहिओ टकटकी लगाकए देखैत रहैत अछि । नहि खेलैत अछि ।"

सुम्निमा बेटीकेँ बुझओलकि,– "तोहर यावा बाभनक बेटा अछि । ओकर बाप बड़का तपस्वी रहैक । ओकरा मनमे की-की होइत हएतैक । आ तँए, ओ चुपचाप किछु सोचैत रहैत हएत ।"

बेटी कहलकैकि,– "एकर मतलब ई भेल जे हमर यावा हमरा प्रेम नहि करैत अछि ?"

बेटीक उदास मुँह देखि कए सुम्निमा कहलकैकि,– "एना किए बजैत छह ?! ओ तोरा प्रेम नहि करैत छौक से तोँ कोना बुझलहीक ?"

"प्रेम करैत अछि त आश्रम किएक जाइत रहैत अछि ? हमरा त बहुत डर ... ।"

"ओकरा बाप-माय नहि छैक । कहिओ मन त पड़ैत हएतैक ने !"

मायक बात सुनि सुम्निमाक बेटी उठि कए बाहर गेलि आ सोमदत्तक बेटाकेँ खोजए लागलि । ओ एकटा नमहर पाथर पर आकाश दिस तकैत गुमसुम बैसल छल । सुम्निमाक बेटी सटि कए बैसि गेलैकि त सोमदत्तक बेटा कहलकैक,– "देखही ने यावा ! कतेक निक लगैत छैक ।"

"की यावा ! .... की छैक ?"

"हावा ।"

सुम्निमाक बेटी जोरसँ हँसलि ।

"हावा सेहो रमणगर होइत छैक ? यावा ! .... हमरा त तौँ नीक लगैत छह । हावाकेँ छुअए नहि सकैत छी । तोरा त हम कखनो छुअए सकैत छी ।"

सोमदत्तक बेटा लग ओ आओर सटिआ गेलि आ ओकर डाँड़ कसि कए दुनू हाथेँ पकड़ि लेलकि । सोमदत्तक बेटा सेहो दुनू हाथेँ ओकर गर्दन बान्हि लेलकैक । दुनू किछु बाजल नहि – बाजए नहि सकल ।

कनेक कालक बाद सुम्निमाक बेटी पुछलकैकि,– "यावा ! तोरा अपन माय-बापक याद अबैत छह, नहि ? तौँ अही कारणसँ दुःखी भ' जाइत छह आ' एतए तोरा मन नहि लगैत छह, की नहि ?"

ओ किछु नहि बाजल । सुम्निमाक बेटीक गर भारी भ' गेलैक,– "एतए सभ तोरा स्नेह करैत छह । ई घर तोरहि छह । हमर माय तोरो माय, यावा ! हमहुँ त तोरे छिअह ने !"

कहिओ काल सुम्निमाकेँ बड़ चिन्ता होइक । ओकर बेटी आ सोमदत्तक बेटा आब धीयापूता नहि रहैक । आब जल्दीये ओसभ जुआन भ' जाएत । आब ओसभ की करत तकर दुश्चिन्ता ओकरा कचोटि दैक । ओसभ एक-दोसरकेँ प्रेम करैत अछि से त ओकरा बुझल रहैक, आ ओ तँए एकरा दुनूकेँ पति-पत्नीक रूपमे देखए लागल छलि । मुदा, तैओ ओ चिन्ता करए,– 'बाभनक बेटा आ किराती छौंड़ीक सम्बन्ध केहन हएत से

नहि जानि ! ओसभ दोसरे किसिमक अछि आ हमसभ दोसरे ! सोमदत्तक बेटा किराती संस्कृतिमे बढ़ल-पलल अछि मुदा तैओ, अछि त आखिर बाभनक सन्तान । खून त आर्य ब्राह्मणक छैक ।'

कहिओ ओकर बेटी कहैकि,– "देखही ने माय ! कहिओ-कहिओ ओ हमरासँ बजबे नहि करैत अछि । मनमे नहि जानि की-की गुनैत रहैत अछि । पुछैति छिऐकि त कहैत अछि,– 'ओहिना बैसल छी, यावा ! ओतए देखही ने, आश्रमक सिमरक गाछ खसि पड़लैक । सएह देखि रहल छी ।' आब कही त गाछ खसि पड़लैक त सुन्न भ' जएतैक ?!"

सुम्निमा सेहो सोमदत्तकँ मन पाड़ि चुपचाप बैसलि सोचए,–'आब ओहो बूढ़ भ' गेलि । आब कतेक दिन जीअति ? एकरासभकँ की हएतैक ? बाभनक बेटा संगे बेटी सुख-दुःखमे कोना रहत, की पाओति से नहि जानि ?'

सोमदत्तक बेटा आ सुम्निमाक बेटीमे कहिओकाल एक-दोसरक बात नहि बुझक अवस्था अबैत रहैक, मुदा दुनूमे खूब प्रेम रहैक । दुनू युवावस्थामे पहुँचल । उमेरक संगहिं ओकरासभमे जेना-जेना प्रेम बढ़ैत गेलैक व्यवहारमे अन्तर सेहो बढ़ल गेलैक । कोठरी अलग-अलग भ' गेलैक । गामसँ बाहर घुमएकाल कतबो स्वच्छन्द रहैत रहओ मुदा, गाममे प्रवेश करिते ओसभ एक-दोसरक हाथ छोड़ि दैक आ अलग भ' जाय । एक-दोसरकँ बजबए कालमे सेहो मधुर स्वरेँ बाजए,– "यावा !" ओसभ एक-दोसरकँ चुनि नेने अछि से गामक लोक सेहो बुझि गेल रहैक ।

एक दिन ओसभ सभदिन जेकाँ जङ्गलमे आएल रहए । घुमैत-घामैत कोशीतट पर आएल । पहिने जेकाँ ओसभ नदीक धारमे नहाएल नहि, बालुमे ओंघराएल वा खेललक नहि । गीत नहि गओलक । ओहिना शमीक गाछतर चुचाप बैसल रहल । प्रेमक ओ असाध्य घड़ी रहैक । सोमदत्तक बेटा मुँहक थूक घोंटैत कहलकैक,– "यावा ! हम तोरा प्रेम करैत छी ।"

सुम्निमाक बेटी किछु बाजि नहि सकलि । नितान्त एकान्तमे सेहो ओ लाजसँ भीजि गेलि । ओ सोमदत्तक बेटाकँ देखहु नहि सकलि ।

सोमदत्तक बेटा अपन कँपैत हाथसँ सुम्निमाक बेटीक मुँह ऊपर कएलक त ओ आँखि मुनि लेलकैकि । सोमदत्तक बेटा जखन ओकरा आलिंगनमे कसि चुमि लेलकैक त ओकर आँखि खुजलैक । ओहो सोमदत्तक बेटाकेँ प्रेमसँ पकड़ि लेलकि । कोशीक कलकल ध्वनिक मधुर संगीतमे प्रेमसँ एकाकार ओकरा दुनूकेँ शमीक छाँह नुका नेने रहैक । ओहि घड़ीमे ओसभ दुनू संज्ञाशून्य भ' गेल रहए ।

घर घुरि कए अएलाक बाद ओसभ आनन्दित त रहए मुदा घर पहुँचैत-पहुँचैत निःशब्द बनि गेल रहए कारण गप्प करबा लेल कोनो दोसर विषय नहि रहैक । एक-दोसरक हाथ पकड़ने ओसभ आङ्गनमे प्रवेश कएलक । आङ्गनमे अबिते सुम्निमाक बेटी अपन हाथ छोड़ा लेलकैकि आ गद्गद स्वरेँ कहलकैक,– "यावा !" तकरबाद ओ असोरा पर चढ़ि अपन मायक घरक केबार लग गेलि आ चुपचाप ठाढ़ि भ' गेलि । ओ लाजेँ गड़लि रहए, मुँहसँ कहुना क' निकलैकि, – "माय !" एहिसँ बेसी ओ किछु कहि नहि सकलि । ओ अपन एकटा पएर पर दोसर चढ़ा कए माथ निहुराए लेलकि । ओकर एकटा आँगुर दाँत तर रहैक । बेटीकेँ लाजसँ गड़लि देखि सुम्निमा बुझि गेलि । प्रत्येक युवतीक जीवनमे एकटा एहन घड़ी अबैत छैक । तैओ सुम्निमा पुछलकैकि,– "की बेटी ?"

बेटी कोनो उत्तर नहि देलकैकि । सुम्निमा फेर पुछलकैकि,– "ओ कहाँ छौक ?"

सुम्निमाक बेटी लाजसँ आँखि घुमबैति सोमदत्तक बेटाकेँ देखओलकैकि । ओहो लजाइत केबार लग आबि गेल छल । सुम्निमा बहराएलि आ दुनूक माथ पर हाथ राखि आशीष देलकैकि,– "दुनू सदैव सुखी रहह !"

तकर बाद सुम्निमा बेटीकेँ सम्वोधित करैत बाजलि,– "बेटी ! आइ तोँ जकरा अपन वर चुनले अछि ओ बाभनक बेटा अछि । ओकर खून दोसरे छैक । नहि जानि कखन कथीमे ओकर मन लागि जएतैक । ईसभ हावाक प्राणी अछि – हावामे उधिआएब पसिन्न करैत अछि । एहि जीवनक

पूर्णतासँ एकरासभकेँ सन्तोष नहि होइत छैक। तँए, एकर शून्यता दिस ईसभ आकर्षित भ' जाइत अछि। शून्यताकेँ खोजैत नानावली तपस्या करए लगैत अछि। भोगविलास आ शरीर तक त्यागि दैत अछि। ... आ तोहर खून दोसर छौक। तोँ किरातक बेटी छँ। किराती माटिक प्राणी अछि। हमरासभ माटिसँ प्रेम करैत छी। जीवनक भोग आ आनन्दमे किराती निमग्न रहैत अछि। इएह एकर सभ किछु छैक। एकरा लेल देह एकर सभसँ प्रिय होइत छैक। बाभन हमरासभक लेल सूत तोड़ल गुड्डी जेकाँ अछि आ बाभनकेँ हमसभ माटिमे पलैत चाली जेकाँ लगैत हएबैक।"

सुम्निमा तकर बाद सोमदत्तक बेटा दिस घुमलि,– "बेटा ! तोहर बाप बड़का तपस्वी पुरुष रहौक। कहैक,–'आत्माक चिन्तन सभसँ बड़का चीज छैक।' तोँ ओकर सन्तान छह। तोँ आइ एकटा किराती छौँड़ीकेँ अपन पत्नी बनओलह अछि। ओ किराती अछि तँए स्वभाव चञ्चल छैक। ओ अपन देह छोड़ि आओर किछु नहि चिन्हैत अछि। नहि जानि तोहर उड़ानमे ओ कहाँधरि संग रहतह। मुदा, यदि तोँ एहि जातिक परम्पराकेँ बुझबह आ ओहि बाटपर चलैत रहबह त हमर बेटीकेँ निकसँ बुझए-समझए सकबह। हमर बेटीकेँ सेहो तोहर बात बुझि कए आवश्यकता पड़ने अपन बाटकेँ कखनो छोड़ए लेल तैयार हुअए पड़तैक। सदैव सुखी रहह। तोहरसभक सन्तान सेहो जीवनमे सम्झौता करैत आगाँ बढ़ओ !"

एतेक कहलाक बाद सुम्निमा भीतर चलि गेलि। सोमदत्तक बेटा अपन कनियाँकेँ हाथ पकड़ि कए अपन कोठरीमे ल' गेल।

तकर किछु दिनक पश्चात् सुम्निमाक मृत्यु भ' गेलैक। मरएसँ पहिने ओ अपन नातिक मुँह देखि सकलि। आश्रमक कुटीसभ खसि पड़लैक। ओहि स्थलपर फेरसँ जङ्गल भ' गेल रहैक। सोमदत्तक बेटा आ ओकर पत्नी सेहो प्रौढ़ भ' गेल रहैक। कए टा सन्तान भेलैक। बूढ़ भेलो पर सोमदत्तक बेटा गामक दक्षिणक बड़का शिला पर बैस निच्चा जङ्गल निहारैत रहलैक आ अपन बेटा-बेटीकेँ देखबैत रहलैक,–"हे वाऽऽऽ ... ओतए तोहर बाबाक आश्रम रहौक।"

बेटा-बेटी पुछैक,– "कतए, कोन ठाम ?"

ओ जङ्गल दिस देखबैत कहैक,– "वाऽऽऽ ... ओतए, ओतए ।"

सोमदत्तक बेटा आ सुम्निमाक बेटीक मृत्युक बाद ओकर सन्तानसभ आश्रमकेँ बिसरि गेलैक । आश्रम स्थल वन-जङ्गलसँ झँपा गेल । कहिओ ओतए आश्रम रहैक से चेन्ह तक नहि रहि गेलैक । भिल्लसभ शिकार खेलए अबैक त कहाँदोन एक गोट शिलाकेँ देखबैत कहैक,– "ई प्राचीनकालक कोनो आश्रमक अवशेष अछि जे आब खाली किरातीसभक जनश्रुतिमे जीवित अछि । इहो जे ओकरासभक जातिक एकटा शाखा रावा नदी दिस चलि गेलैक आ ओहि शाखाक पुर्खा आश्रमवासी बाभन रहैक ।

प्रकृतिकेँ फाँड़ि कए अपन स्थान बनाबक प्रयत्न करएबला ब्राह्मणक स्थानकेँ प्रकृति फेर अपन बना लेलक । लोक कहैत छैक जे एतहिं त्रेता युगमे विश्वामित्रक एहने अवस्था भेल रहन्हि । किरातीसभक रक्तधारामे एकटा ब्राह्मण सेहो अपन रक्त मिलोने छल । ओहि जातीय रक्तक महासमद्रमे रक्तक ओहि एकटा बुन्हिक कोनो अस्तित्व नहि रहलैक । कोशीक अवाध गति प्रकृतिक विराट शान्तिमे किलोल करैत सदैव जेकाँ बहैत रहलैक । वन आ आकाशक नीरवतामे सोमदत्तक आश्रम लोप भ' गेलैक ।

सुन्दरीजल, बन्दीगृह
१९६४ जून– २१, २२, २३, २४, २५, २६, २७, २८ ।



साहित्यक माध्यमसँ राष्ट्रिय आ सांस्कृतिक ऐकवद्धताकेँ सिंचित करब एखनुक महत्वपूर्ण कार्यभार अछि । सुम्निमाक मैथिलीमे सुन्दर अनुवाद क' क'श्री वृषेशचन्द्र लाल अपन मातृभाषा एवं अपन प्रेरणाक श्रोत बीपी कोइरालाक प्रतिक ऋण मोचनक एलथि अछि । अनुवादकले मूल कृतिक मर्म बुझब आवश्यक आ संगेँ जाहि भाषामे अनुवाद कएल जाइछ तकर सौष्टव आ सौन्दर्यक आत्मसातहएब सेहो जरूरी छैक । वृषेशचन्द्र लाल अपन एहि अनुवादमे आवश्यक एहि दुनू योग्यताकेँ देखोलन्हि अछि । ओ बीपीकमर्मकेँ बुझने छथि आ मैथिलीभाषाअपनम(ायक कोंखेसँ सिखने छथि ।

प्रदीप गिरी

हिन्दी आ नेपालीक प्रख्यात साहित्यकार तथा नेपालक प्रथम निर्वाचित प्रधानमन्त्री स्व. वी.पी. कोइरालाक उपन्यास 'सुम्निमा'क नेपालीसँ मैथिलीमे अनुवाद देखि चमत्कृत भ' गेलहुँ । स्व. वी.पी. कोइरालाक राजनीतिक विचारक अनुयायी लोकतान्त्रिक समाजवादी राजनीतिज्ञ वृषेश चन्द्र लालद्वारा मैथिलीमे अनुदित पोथी 'सुम्निमा' पढिÞ अनुभूत भेल जे वृषेशजी सेहो स्व. कोइरालाजकाँ मूलतः साहित्यकार छथि, राजनीतिकर्मितासँ एकदम सामानान्तर दुनूकअपन विशिष्ट साहित्यिक व्यक्तित्व छन्हि ।

डा. शेफालिका वर्मा

फिनिक्स बुक्स

30000